॥ श्री ॥

महाबल मलयसुंदरीनो रास.

पंडितवर्य

कांतिविजयजी विरचित

ए रास

शब्दानुप्रास सरसरस चमत्कृतियुक्त

अने हितोपदेशमय जाणी

तेने

स्वबुद्ध्यनुसार शुद्ध करीने

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्री मुंबईमध्ये

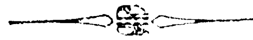
निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९४१ ना मार्गशीर्ष शुद्ध ६ चंद्रवासर.

॥ ॐ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ पंमित श्रीकांतिविजयजी कृत ॥

॥ श्रीमहाबल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥



॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ आ दीसर आनंद निधी, प्रणमु प्रेम अपार ॥ १ ॥ फणि मणि मंमित नील तनु, करुणारस जरपूर ॥ पारस जलधर पह्लवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन ना यक साहेबो, गिरुउ गुण विलसंत ॥ हरिलंबन हियडे धरुं, महावीर जगवंत ॥ ३ ॥ गणधर मुख मंमप व से, अविहड महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनासिनी, समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चजमंगल वरत्यां हवे, प्रगटयो वचन प्रकाश ॥ निजइच्छा पूर्वक पणे, जापुं चारू जास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कवि ता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे मति परिचार ॥ ६ ॥ ॐकार धुर संवव्यो, चजवेदा चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धस्यो, धर्म एक सु र साल ॥ ७ ॥ उरगति पडता जीवने, धारणथी ते ध

मे ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कह्यीयें ताहि सुमर्म ॥
॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्या, निर्मलता गुण
हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
॥ ए ॥ अकल पदारथ सोधिये, परमारथथी नाण ॥
निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
निःकारण बंधव समो, नवजल तरण उपाय ॥ ख
लता डुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
अंतर तिमिरने नेदवा, नाण दीप निरवाध ॥ नरता
दिक नृप नाणथी, नवजल तर्या अगाध ॥ १२ ॥
नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल
यसुंदरी जिम सुख लही, चित्तधरी एक सलोक ॥ १३ ॥
किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख गाय ॥ तास
चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥
आलश निद्रा परिहरी, ठंमी विकथा मित्र ॥ सुणतां
मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥
॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥
॥ जंबूद्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
द्वीप विचाल के, लवण समुद्रें वींटीउं, लाख जोय
णहो वरतुल जिम थालके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
नरत अछे, खटखंमे हो मंमित सुविशाल ॥ नव नव

संपद नूमिका, ते साधे हो चक्री नोगाल ॥ जं०॥२॥
दक्षण नाग चंद्रावती, नगरी तिहां हो गाजे निकलं
क ॥ अलकापुरि ऊपर गई,लंकावली हो सायर जस
संक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिहुंदिसें, चोरा
सी हो चावा जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूष
णें, जाणे लखमी हो तिहां कीधो निवास ॥ जं० ॥
॥ ४ ॥ फटिक रतनमय सौधनी, रुचि उज्जल हो प
सरे अनिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा
हो कुण तिमिरनो गाम ॥ जं० ॥ ५ ॥ किहां कणें
घर चंद्रकांतनां. पडिबिंबे हो तिहां चंद्र मरीच ॥ अ
स्खल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सी
च ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणंगणतल पूरती, अटारी हो
ऊंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरडी,जाणे अपछर
हो करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम
कांचने, कै रचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसिदिसि तेज
जलामले, होये दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥
॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो
दगगें प्रनाल ॥ नमर नमे रसीया परें, रस लंपट
हो करता ढक चाल ॥ जं० ॥ ए ॥ गढविंटी चिहुं
दिसि पुरी, परिपूरी हो सुखीए सविलोग ॥ डुखिया

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंमदीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें रह्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल नस्यां, के दर्प्पण हो दिसिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीले घणा, घण महके हो कमलोनो सार ॥जं०१३॥ वनवाडी आरामनी, छबि नीली हो अडती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण न णी, कसी जीडयो हो बखतर हठ जोर ॥जं०॥१४॥ अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण वंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या, रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल नखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो सरसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० ॥ १७ ॥ हेलें धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संभाल ॥ जं० ॥ १८ ॥ देशावर नृप भेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोडि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोडि ॥ जं० ॥ १९ ॥ कोमल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि भंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनवती अछे, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो वे चढते मान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगडी, इंम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल छे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पालें प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेगे तेह नृपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ छोडी छयलें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जाखुं थयुं, दुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता डायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता डायणि

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउं, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता प्यो घणु, नसुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपक माला पे खीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति हां, सच्चम नर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उभी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोडी बोली प्रिया, इ णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोडी मंत्रि कहे ॥ एदेशी ॥

॥ करजोडी राणी कहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूछुं छुं छंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवी, खोलो नहीं सदज्ञाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ थइबेगा अण उलखू, नधरो कांइ सने ह हो ॥ प्री० ॥ वरी जाउं लखवार हूं, मुजरो ल्यो गुण गेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी छुं पा यें पडुं, थें म्हारा सिररा मोड हो ॥ प्री० ॥ थें जी वणरी उषधी, कुंण करे तुमची होड हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे बोल्या विना, प्रगटे छे अ

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउं केणे कारणे, चिं
तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
म कथन कीउं नहीं, कुणे दुहव्या माहाराय हो ॥
प्री० ॥ के कांता कोइ दिल वसी, चिंतो तास उपा
य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
जागीउं, चिंता पेठी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
जंगम मल्यो, कीधा तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेला सांजस्यो, अरिअण
वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
छे ते राजीउं, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
चायण गिरि गाजते, मृग नासें करे वेग हो ॥ प्री०
॥ कर० ॥ ए ॥ के केणे दुरजने नाखीउं, अणहूंतो
अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किणहिक अपहरि
लीउं, नवलो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
॥ १० ॥ के मनमान्यो सांजस्यो, परदेशी कोइ मित्त
हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलडुं, के खटक्यो को
इ चित्त हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
वेगनो, नेदाणु सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
कहो, आशय एह अनंग हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥

१२ ॥ यद्यपि नजांजे भ्रम थकी, चिंता मोटी कां य हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विं हचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या ध रणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा मन जेदन जला, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री० ॥ करे० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ बी जी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन तेत्रिया, जे लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्वेग नर, बोल्यो तव नूपाल ॥ चिं ता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥ जे तें पूछ्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥ शुद्ध स्वजावे सर्वथा, तिण वातें निश्चिंत ॥ २ ॥ ए मुज चिंता उमटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल थकी मांमी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ एदेशी ॥

॥ इणपुरमां व्यवहारिया, निवसे छे गुणवंतो रे ॥ लोजनंदी लोजाकरा, बे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि गधिग लोज विटंबना, लोजे लक्षण जाय रे ॥ लोजे नर पीडा लहे, लोजे डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणु, मांहो मांहें बेहो रे ॥ भेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ लोभाकरने सुत थयो, नाम दीउं गुणवर्म्मा रे ॥ लोभनंदी परण्यो फरी, पण सुत नहो पूरव कर्म्मा रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस बेगा मली, हाटें बेहु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ भद्र प्रकृति भलो रह्यो, तेहने को न पिछाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ बोलाव्यो गोरव पणे, आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल भलो, आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ किहां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किसी छे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी क्षत्रि अछुं, परदेशी असहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे ॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीउं, भोजन भगत भलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो घेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी गणी, वात भली भली भाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे पंथी

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जिण दिन फरी मागीजे रे ॥ धि० ॥ १२ ॥मुखमुद्रा गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे ॥ उंची बांधी तुंबडी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ धि० ॥ १३ बे जाइने तेणे कह्यो,करजो एहनी संजाल रे॥ ते कहे हुं जीव न समो,एहछे तुमचो माल रे ॥ धि०॥ १४ ॥ चतुर विदेशी चूकीउ, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ धि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाध्यो रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुंबीमांथी रस गली, हेठ बंधाये बंद ॥ लोह कोश नीचें पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु छांमीने, हेमहूउ द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो, मोडयो तिमिर तदंत ॥ ३ ॥ दृष्टिपडयो दो सेठने, सोवन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउ, जाण्यो रसनो संग ॥ ४ ॥ अतिलोनें आंधा हूआ, तुंबी ले निस्संक ॥ गुपति पणें मूकी गृहें, नगण्यो काल कलंक ॥ ॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोनें वाह्या लुंफ ॥ कुलवट वहेती मूकीने, कीधो कारज लुंफ ॥ ६ ॥ अ

ति उब्बक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मा
गी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ७ ॥ मायावी मृडु
वचनसुं, बोल्या बे डुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी,
कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ८ ॥ उद्धित उंदेर आफले, गा
म गाम प्रचंम ॥ काढ्यो बंधण तुंबिका, पडी थइ श
तखंम ॥ ए ॥ कोइक दिन तसु कटकडा, दीठा पड्या
अनेक ॥ अम दिलमें अति डुःख हुउ, चिंताये व्यति
रेक ॥१०॥ समसगरां करी साचज्युं, कृतिम करे डुःख
जार । अपर तुंबीना खंम ले, देखाड्या तेणी वार ॥
॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली आथ ॥
हाहा दैव किशुं कीयो, नूमि पड्या बे हाथ ॥१२॥
दक्ष पणे जाण्यो तेणे, ए नहीं तेहनां खंम ॥ जिम
तिम तुंबी उलवी, समकाढे ठे लंम ॥ १३ ॥ किहां
जाउं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूल ॥ दगो दिउ डुष्टें
बुरो, लीधो तुंब अमूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित राय
ने, तोपण रंस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, इम बोले
गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ विंछियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेठजी, हुंतो कहुंछुं गोद वि
छाय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान महा

तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं उलवी,
एह जीवन जीधो मुज्ऊ रे ॥ जण विससीआ नीसा
सडो, ऊःख होसे सही तुज्ऊ रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली
तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित मागं काम रे ॥
तो संतति विना नू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण गाम
रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर
शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकारो, ते म
हिमा बे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि
ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स
त्य राखण नणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो०
॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ग
म रे ॥ पबतावो होसें तुम मने, इणवातें खोसो मा
म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूगं सम खातां थकां, ना
वी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न
ही, करतां नूंमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे
लोन वसें लहेता नथी, एह वावोबो विष वेलि रे ॥
तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं बुं लज्जा मेलि
रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ बिंहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ
सुद्धि गईबे तुज्ऊ रे ॥ जग वाडि न चोरे चीनडां, दिल
बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूगे दोष

चढावीने, तुं खोवे कां निज गाम रे ॥ किहां सुणिया शाह शिरोमणी, ए करतां नूंडा काम रे ॥ मो०॥१०॥ फिट लाजे नहीं कां बोलतो, अणहुंति एम गमार रे ॥ जो होंस होये राउल नणी, तो जइयें आवी ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति कागे उत्तर इम दीउं, शेठें करी कपट जिवार रे ॥ ते पंथिक निरास पणो ग्रही, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥१२॥ कांइ साची सीखामण द्युं हवे, इम बोल्यो तेंणीवार रे ॥ एक विद्या ठोडी थंजणी, ते थंच्या घरने बार रे ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिसे त्यांथी तिल मात रे ॥ बिहुं चित्र लिखित परें थिर रह्या, मन मांहे घणु अकुलात रे ॥ मो०॥ १४ ॥ तेह ऊगी चल्यो परदेशियो, डुःखजाल बंधाणा बेह रे ॥ इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ सोचें सूधा शेठ, बेहु ऊना बारणे ॥ दैवें दीधी वेठ, पेट मसली पीडा करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अनेक, थंज जिशा थिर देखीने ॥ ठेतरिया ठल ठेक, इंम बोले अचरिज नया ॥ २ ॥ सुणतां लोक सुजाण,

शेठ कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अ मने छोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे नजाण्यो एह, आ पद पडसे आकरी ॥ दुःखजर दाधी देह, प्राण हुआ बे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजें कवण उपाय, मरतांने मा स्या दिवें ॥ जो किम बूटचो जाय, तो काम नकीजें एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसें लख कोडि, के रोवें के कूकु ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥ ॥ ६ ॥ हुउ ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरें, ग्रामांतरथी गेह ॥ आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि ता पिताबांधव बेहु, छारें थंन्या देखि ॥ लाज्यो मनमांहे घणो, दुःख पाम्यो सविशेष ॥ ए ॥ कु मर कहे सुणो तातजी, मकरो चिंता कांय ॥ विधि सुं तुम छोडण नणी, करसुं कोडि उपाय ॥ १० ॥ चिंतातुर तव कुमरते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न आवी कांइ तिणें, जोने तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ अबला किम उवेखीयें रे ॥ एदेशी ॥

॥ कुमर हवें उनमत थयो रे, सोधे नव नव छाय रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांमे कोडि उपाय रे॥

तातनें बोडवा, करता ढील नकांय रे ॥ पुरमांहे फरे, जोवे जुगति बनाय रे ॥ बंधण तोडवा, पण नावे कोय दाय रे ॥ तातने बोडवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर कब्बडे रे, नमतो नासे रे आम ॥ जे अम तातने बोडवे रे, तो मुंह माग्या द्युं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ वचन सुणी उठ्या तिसे रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ सिद्ध बुद्ध औषधी धरा रें, नणता निज निज सूत्र रे ॥ता० ॥३॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस अवधूत ॥ जाप जपंता आविया रे, चाढी शीस विनूत रे ॥ ता० ॥ ४ ॥ कै कापिल कै कापडी रे, कै सन्यासी नक्ति ॥ कै बांजण वली वेदीआ रे, कै ध्याता शिव शक्ति रे ॥ ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिल्या रे, केताइक श्रीपात ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥ ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोडीया रे, नरडाने नगवंत ॥ केइ त्रिदंमी मुंमिया रे, आगल कीध महंत रे ॥ ता० ॥ ७ ॥ राउल रंगे उमटया रे, दोडया केइ दरवेश ॥ जगने फंदे पाडवा रे, करता नवनव वेश रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा अनिचारका रे, जतन करावे कोडि ॥ आवी विध विध उपचरे रे, करता होडा होडि रे ॥ ता० ॥ ए ॥ एक कहे आहुति दियो रे, बलियो एक

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रें, मंमलको विरचंत रे ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक कहे दीजे मंन ॥ एक कहे शिर मूंमीने रे, करियें तंत्र अचंन रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल छांटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दें करी रे, कोलाहल हूउ त्यांहिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी ऊखर चूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपचख्या रे, तिम तिम वाधे पीड ॥ सायर जल उंमा जिहां रे, तिहां वडवानल नीड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ दुःख न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ ऊठी गया निज निज थले रे,साथ मनोरथ तास रे ॥ता०॥१६॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे,उठी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणु उद्यम लाग रे ॥ ता०॥१७॥ उपलक्षक साथें लीउ रे,तव नर एक सखाय ॥चाल्यो नर सोधण नणी रे, कुमर करी चित्त ठाय रे ॥ ता० ॥१८॥ शेठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय॥ ढाल कही ए पांचमी रे,कांतिविजय सुख दायरे ॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निसदिन तेह नमंत ॥ पग पग पूछे पंथमें, पण खबर न कोइ कहंत ॥ १ ॥ विकटपंथ श्रमथी पड्यो, मांदो तेह सहाय ॥ मूकी कोइक नगरमां, कुमर चल्यो असहाय ॥ २ ॥ पुर अटवी उल्लंघतो, पोहोतो एकण देश ॥ निर मानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविनानो) दीठो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचा मंदिर जलहले जाणे गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनी पडी, मणिमाणिकनी राशि ॥ ४ ॥ धानपूंज पंखी चणे, वस्त्र उडाडे वाय ॥ श्रीफल फोडीने वांनरां, खांत करीनें खाय ॥ ५ त्रूटा ध्वज धरणी पड्यां, ढोल्या मदिरा माट ॥ फूल पगर ठावें नख्यां, सुंना दीसे हाट ॥६॥ कुमर तव विस्मित पणे, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीठो नर तिहां एक अति, सुंदर तरुणे वेश ॥ ७ ॥ बोल्यो तरुणो कुमरनें, कुणछे तुं महाभाग ॥ आव्यो किहांथी किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कुमर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी थाको घणु, आव्यो हुं इणे ठाय ॥ ए ॥ तुं कुंण दीसे एकलो, बेठो छे किण काम ॥ रुद्धिनरी सुंन

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्युं इश्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मांभीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल बही ॥ कपूर होये अतिऊजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए जलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥ राजासूरें शोजतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांजल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंडने विजयचंड, ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंड ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय चंडने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाड्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात स धारियो रे, मुजमन बेठी चिंत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बांधव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अजिमाने हुं नीसस्यो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दिवस चंडावती रे, पुरी वन मांहि पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीठो नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ ही

ए अंग लागे नहीं रे, ऊठण सक्ति लगार ॥ सु० ॥८॥ मुज मन करुणा ऊपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थोडा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥ ॥९॥ प्रसन्न थई मुज पुछीउं रे, नामादिक सवि तेण ॥ विद्या बे दीधी भली रे, भक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥ ॥१०॥ थंभकरी एक वशिकरी रे, बीजी सूधी पाठ ॥ विगत बताई जूजूई रे, जोडी जाचा गाठ ॥ सु० ॥११॥ रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तुरत इम बोलीउं रे, मुज ऊपर हित आण ॥सु०॥१२॥ गाढी खप करतां लह्यो रे, अति दुर्लभ रस एह ॥ लोह थकी कांचन करे रे, तिलभर फरश्यो जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो छे तुझने रे, करजे कोडी जतन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य रतन्न ॥सु०॥१४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख सुजाण ॥ श्रीपरवत भेटण भणी रे, तेह गयो गुण खाण ॥ सु० १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जोवा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ अलेख ॥सु०॥१६॥ फिरि आव्यो चंद्रावती रे, केतेक दिवस अटंत ॥ जोग मले भवितव्यनुं रे, विधिना जेह घटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निरखतो

रे, आयो मध्य बाजार ॥ लोभाकर लोभनंदीने रे, हाट गयो सुविचार ॥ सु० ॥ १७ ॥ दक्रूपणे बेहु बांधवें रे, हरी लीधो मुज मन्न ॥ हली मली तस घर हुं रह्यो रे, विश्वासें निसदिन्न ॥ सु० ॥ १९ ॥ ते तुंबी थापण धरी रे, जाणी साचा शाह ॥ केता दिवस विलंबीयो रे, पुर पेखणरी चाह ॥ सु० ॥ २० ॥ जननी दर्शन उमह्यो रे, कीधो चालण संच ॥ पहेलो शेठे जाणीयो रे, तुंबीनो परपंच ॥ सु० ॥ २१ ॥ तुंबी मागी ततखणे रे, करता निजपुर सिध ॥ लोभग्रसित बे बांधवें रे, कूडो उत्तर दीध ॥ सु०॥ २२॥ कही नशकुं जोरें किस्युं रे, दीप्यो क्रोध अपार ॥ जुगतो कूडाने शिरें रे, कीधो में प्रतिकार ॥ सु० ॥ २३ ॥ आयो इण पुर वेगशुं रे, दीठो शून्य समग्र ॥ मुजमन ताप वधारणी रे, पेठी चिंता उदग्र ॥ सु० ॥ २४ ॥ रति नारी दुःख उमट्यो रे, विरुउ विरह निपट्ट ॥ ढाल छठी कांति कही रे, कुमर वचन परगट्ट ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणवर्म्मा चिंते इस्युं, ए नर तेहिज होय ॥ विद्यावले जेणे कोप करि, बांध्या बांधव दोय ॥ १ ॥ समग्रपरें जाणु नहीं, ज्यां लगे सघली वात ॥ त्यां ल

गें प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात ॥ २ ॥ इम निश्चयकरी चित्तसुं, पूछे वलीससनेह ॥ पछो ययोसुं साहेबा, हितकरी सर्व कहेह ॥ ३ ॥ कुमर कहे हुं डुःख जस्यो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सब निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजभुवन रमणिय द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विछाय तनु, करती चिंत अपार ॥ बेठी दीठी एकली, तिहां वड बांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आवी साहमी धाय ॥ नयणे श्रावण जडी लगी, हीयडे डुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर लपा मुज आगलें, मूके बेसण पीठ ॥ वात विगत पूछण भणी, हुं तस निकट बईठ ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, डुरवस्थित किम आम ॥ ईम पूछ्यो में ततखिणें, बोली वात विराम ॥ ए ॥

ढाल सातमी॥ मोरासाहेबहोश्रीशीतलनाथके ॥एदेशी॥

॥ मोरा देवर हो सुण डुःखनी वात के, कहेतां हइडुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कह्या विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवसें हो ईण पुर उद्यान के, तापस कोइक आवीयो ॥ रक्तांबर हो धर

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप नावीयो ॥ २ ॥
तस सांनलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल
आवी नमे ॥ केइ चरचे हो नर्के करी पाय के, केश
र चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास
के, अर्हनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तु
ति मांमी खास के, ॥ लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥
आमंत्रे हो केइ नोजन हेत के, पण नावे तेहने घ
रें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के,पारण काजे
नुंहतरे, ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के,
आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित
नयण के, अंब फल्यो अम बारणे ॥ ६ ॥ ते वेगो
हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नृपें कह्यो ॥
जो नाखे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्ये ल
ह्यो ॥ ७ ॥ में जुगतें हो वींज्यो रुषी वाय के, रागें
आगें बेसकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के,प्र
सन्न करुं दिल पसेकें ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप
निहाल के, पाखंमी चित्तमां चल्यो ॥ चाहंतो हो मु
ज संगम व्याल के, कामाकुल मन टल वल्यो ॥ ए ॥
निज थानक हो पोहोतो दृढ शोग के, शाल वस्यो
मन आकरो ॥ संकल्पें हो मलवानो योग के, योग

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आव्यो हो कर ले
ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी
ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज
पासें हो आव्यो ततकाल के, प्रारथना मांमी घणी
॥ बीवरावे हो करतो चकचाल के, शक्ति देखाडे आ
पणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में दृढता काज के, पा
प तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज
के, काम सिद्धाविण चाखीनें ॥ १३ ॥ इंम मसलत
हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी आव्यो बारणे ॥ मु
नि दीठो हो उलखीयो तेह के, घर तेड्यो जे पारणे
॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे
तूं एहवा ॥ तुज प्रगट्यो हो ए पाप अपार के, फल
पामीस हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो
तेम के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जे
म के, जीकें जूडे तेहने ॥ १६ ॥ परजातें हो फेस्यो
पुरमांहिं के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढ्यो हो दुःख
पामे त्यांहिं के, चट चट आमिष चूंटता ॥ १७ ॥ निं
दितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥
ताडीतो हो नमित चिहुं उर के, मलमूत्रें सिंची जतो
॥ १८ ॥ आक्रोस्यो हो सविलोक विडंब के, चोर मा

रें ते मारीउं ॥ वज्रपुस्यो हो योगिणना तुंब कें, नूपें काम इस्यो कीयो ॥ १९ ॥ ते रूपनो हो राक्षस अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउं विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाडया हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर जाल के, पिंगल लोचन हठ नस्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचस्यो ॥ २२ ॥ घस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा स्या हो करता घणु शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुपनो हो देखी नयनूत के, नासंती सु जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नइ जावे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के,भाग्ये लहीयें भामनी ॥२७॥ एमकहि हूं हो राखी तेणे भूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ वे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें ॥ २८ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जा णो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ कि म जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांजल सुनट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंछुं योग ॥ २ ॥ सूतां राक्ष सनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रि त हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर नेद लहे व ली, नांखे शिस उडाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी मुख थ की, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा ल्यो हुं अनिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, जाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में नाखी सहु तंत ॥६॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे गम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोडीने रे, सांभल सुगुण सुजाण ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हूउं रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिमाठा हो सकल दुःख नाठा, जयत्राठा महारा राज अति काठा, घाठा अ रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजें गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स ज्जन सहेजे परकजूरे, दुखीआं दे आधार ॥ म० ॥ बलिहारी ल्युं लखगमें रे, घडिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सघ ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घडतां करी रे, चतुरा ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजें रे, समरथ सुगुण हुवंत ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासतूं रें, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या जूठे माणसें रे, पणनाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥ तरु तटनी घण धेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कह्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहारो रे, थासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ दुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शेठ कुमर चिं
ते इस्यो रें, कवण करेवो काज ॥ म०॥ पण उपकार
कस्या पछी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि
कस्यो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शेठने रें, बोल्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ १० ॥ राक्षसनां पग मरदजो रें, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रें,
पंचवीस तेणीवार ॥ म० ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्या काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रें, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प
णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
र्म्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० १३ ॥
रयणी पडी रवि आथम्यो रे, प्रगट्यो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रमे तिणिवार
॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ
छे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ प्रि
या बोले हो चतुर हुंबुं नारी, घणुं वासें महाराज
धरचारी, अवर नही कोई पास ॥ म० ॥ १६ ॥ अ

वगणतो उद्भट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० ॥
कुमर वहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरभंग ॥ म०
॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थंजन मंत्र वि
शेष ॥ म० ॥ ते पण नरनां गंधथी रे, उठे करी अं
देश ॥ म० १८ ॥ जिमजिम उठे सेजथी रे, राक्षस
मारण हेत ॥म०॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे, जो
टि पडे गत चेत ॥ म०॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो
रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर विहुने मा
रवा रे, उठ्यो राक्षस ताम ॥ म० ॥ २० ॥ थंन्यो
अनोपम मंत्रथी रे, सक्तिथइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास
थयो करजोडीने रे, नाखें एम वचन्न ॥ म० ॥ २१ ॥
रेरे साहस मंझणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥म०॥
मुज महिमा मंत्रे हस्यो रे, जिम घन दक्षण वात
॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र श
क्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो सा
हिब कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण तें
करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल वि
धवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ म
णि माणिक कण कंचणे रे, पूरण नरी घर हाट ॥
म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जलें रे, सुरन्नित कर स

वि वाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तह्त्ति करी क्षणमें करी रे, नगरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया दहदिशि जिके रे, ते तेडया सवि नूप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुमर मति मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अनमी अरियण नामिया रे, वाध्यो जस मह्हि मूर ॥ म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करशे ह्वे रे, थंन्या वणिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, आठमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा,दिन दिन परम प्रमोद ॥ शेठ कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ एक दिवस गुणवर्म्मनें, नृप कहे सदनाव ॥ राजगयुं जे में लह्युं, ते सवि तुज परन्नाव ॥ २ ॥ अतिड्कर पणो आदरी, कीधुं मोटुं काज ॥ प्रत्युपकार करण नणी, ल्ये ह्युं बुं तुज राज ॥३॥ अवसर निरखी बोलीउ, शेठ कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीउ, तुं मणि बीजा काच ॥४॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे जगमाहें कृतज्ञ ॥ प्रत्युपकार करे जिके,ते सघला धुरि विज्ञ ॥ ५ ॥ राज्य वधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं स्वामि ॥ जो मानो मुज वीनती, तो सारो एक काम

॥ ६ ॥ जोजाकर बांधव सहित, चंद्रपुरीनो शाह ॥ विद्या थंभ्यो तात मुज, ते छोडो नरनाह ॥ ७ ॥ अ विनय सहियें साहेबा, करियें ए उपचार ॥ जां जी वुं तां तुम तणो, गणसुं ए उपकार ॥ ८ ॥ विगत पणे वृत्तांत सवि, नाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने वीनती, रीज्यो चित उदार ॥ ए ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ए देशी॥

॥ जीहो राय अचंभो पामीउ, जीहो बोल्यो शीस धुंणाय ॥ जीहो वयथी अमृत रूपनो, जीहो अकथ कथा कहेवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अव तार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो, जीहो की धो मुज उपकार ॥ कुमर० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते तेहवा तुं एहवो, जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अ द्भूत रचना दैवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुम ० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज ग्रहे, जीहो ए हवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा दुरगुण विधि, जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम० ॥ ३ ॥ जीहो काम अछे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जी हो पण कारण तुज हाथ छे, जीहो जेहथी न लागे वा र ॥ कुम० ॥ ४ ॥ जीहो इणे पुर परिसर बाहेरें, जी

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्टित छे तिहां,
जीहो कूई एक सुगम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त र
हे गिरि कूपिका, जीहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जी
हो क्षण मले क्षण ऊघडे, जीहो तस मुख जिम नर
नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जीहो सिद्धोषध जल तेहनुं,
जीहो पूर्णहि लहेरां खाय ॥ जीहो काम पडे विद्या
निलो, जीहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥
जीहो उत्तर साधक शिर रहे, जीहो साधक पेसे
त्यांहिं ॥ जीहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न
मरें दिलमांहिं ॥ कुम० ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो
महिमा घणो, जीहो नांजे नीड निदान ॥ जीहो
थंन्यो नर छूटे सही, जीहो जो सुत छांटे आण
॥ कुम० ॥ ए ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो,
जीहो ते नर नवि छूटंत ॥ जीहो वार तीन छांटे
सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥
जीहो कारण ए छूटा तणो,जीहो एहनो अन्य न को
य ॥ जीहो आरति कुमरें अनुमन्यो, जीहो दुःक्कर का
रज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुसहा
यसुं, जीहो कुमर गयो गिरि शृंग ॥ जीहो आप कूई
मां उत्तरे, जीहो जिम पंकज मांहे नृंग ॥ कु० ॥ १२॥

जीहो निर्नय जल तूंबी भरी, जीहो वेगे मांची संच ॥
जीहो कूई बाहिर काढीउं, जीहो नृपें त्यांथी खंच ॥
॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउं, जी
हो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो,
जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो
अश्वरूप कीधो सुरें, जीहो बे बेग तस पीठ ॥ जीहो
आव्या पुर चंद्रावती, जीहो थंन्या बेहु दीठ ॥ कुम०
॥१५॥ जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं, जीहो लोनाकरनो
अंस ॥ जीहो जटक बूटी अलगो रह्यो, जीहो पास थ
की जिम हंस ॥कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोननंदी बूटो
नहीं, जीहो पाडे मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना को
ण तेहने, जीहो दुःखथी रोडण हार ॥ कुम०॥१७॥
जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्म ते शेठ ॥
जीहो घरमांहे पेसण दीउं, जीहो बीजा शिर रही
वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुद्रा भणी,
जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवि आ
दरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जी
हो केतेक दिन पूरें नृपें, जीहो निजपुर कीध प्रया
ण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयडे वधी, जीहो कुमरसुं
बांध्या प्राण ॥कुम०॥२०॥ जीहो करी सत्कार अनेक

धा, जीहो तूंबी दीधी काढि, जीहो नृपति वली पा
ठी दीए, जीहो कुमर जीए शिर चाढि ॥कुम०॥२१॥
जीहो माया घोटक उपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं, जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवम्मायें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें जेटण ध
र्यो, जीहो नाख्यो सविवृत्तांत ॥कुम०॥२३॥ जीहो
प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सुं गुज्झ ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्झ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो धारण मोसा दोष ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्झने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वाल्युं फरी, जीहो
वाल्युं वैर डुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोज अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शोव सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धर्यो, जीहो जूउ सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामिनी,
जीहो धण कंचणनी रासि, जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्यते कृत पुण्यते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो लोजनंदी संकट सह्यो, जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो ठो डावे अविलंब ॥प्री०॥ २ए ॥ जीहो हुं जगमां निरजा गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित सरज्यो किस्यो, जीहो वाह्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्धरे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणु, जीहो पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसलता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज लामिनी, जीहो बीजी राव न रीस ॥ प्री०॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो ग्र

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ भुजग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें पडे, हेजवि या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण जंचा मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पूण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते नणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें छोडियो, हृदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पूरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ए ॥ राय कहे सुण सुंदरी, मुजमन नावि वात ॥ शुनदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इश्युं, धर ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विछाय रे, चिंता उमटी, दीसे अंग दयामणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउ, चतुराइ पण

उसरीए ॥ २ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा
हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे,
फरि फरि सूचवे, मुज मन नरहे धारणेए ॥ ३ ॥ था
शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं, डुःखदाई मुजने
सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे, थाशे मुज शिरे, के
उलका पडशे वहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी
वन माहरो, कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे मु
ज रोग रे, शोक अशुन कर, के पडशे कांइ आपदा
ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय
लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, नोली
नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नावी मु
ज तेण रे, हइडुं कम कमे, अधृति धरुंबुं काहिलीए
॥ वीरधवल नूपाल रे, वलतुं एम वदे, कां नामिनी
डुःखमां नलीए ॥ ७ ॥ चिंता मकरिस लगार रे, मु
ज बेगां किसी, शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तपते अ
तितीव्र रे, तिमिर नरम समो, लोक मांहे केम थिति
लहेए ॥ ८ ॥ जो होसे तुज कांइ रे, बाधा अणजा
णी, विरह व्यथा डुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज सा
थें रे, शरण अगनी तणो, होशे सही सुण नामि
नीए ॥ ए ॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, अरतिलहे तिण पण घडीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी बाहिर वन नणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुलें जावे वलीए ॥ नलहे र ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा ठलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेंतलें, हाथांसु शिर कूटती ए ॥ आंसुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट चूंटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती दुःखपूर रे, आवी दोडी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुझ रे, सामणि माहरी, दीधुं दैव विगोवणुए ॥ १५ ॥ फिटरे धीग दैव रे, इम कही ढली पडी, निरखी च क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने पडी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उठया व्याकु ल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ कह कहने कह रे, कहेने सुं थयुं, सुज अंतेउरनुं किस्युं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुज रे, धीरज सहुं नहीं, कहेतां वारम लावीयेंए ॥ वेगवती तव ऊठी रे, रडती इंम कहे, हे सुंडःख वदनावीयेंए ॥ १७ ॥ कहेवा सर खी वात रे, नहींहो साहेबा, कहेतां नवहे जीनडी ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय कठण करो, वज्र वि षम बे वातडीए ॥ १ए ॥ चंपकमाला देव रे, प्रभु हृदयें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥ ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हूं पण, पान लई पाछी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी नर हे ज रे, मुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं खडीए ॥ २२ ॥ के सोसी कुंण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी, के कांइ सापणी डसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥ ॥ २३ ॥ निरखी माठा सूल रे, पडियो ध्रासको, पण नकलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे, शुद्धि स वे गई, जीवडलो ऊडी गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी नूपाल रे, कडुआ विष जिस्यां, मूर्छागत धरणी ढ

ब्योए ॥ वींज्यो सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टें मूर्छाथी वल्योए ॥ २५ ॥ लागो दुख अछेह रे, नेह विवस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ रे हत्या रा दैव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अप हरिए ॥ २६ ॥ जोमुंज देवा दुख रे, समरथ तुं हूउ, मुनेकां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा दुष्ट रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीउडा, मन मेलूं सीधारतांए ॥ हा हा हूउ संताप रे, विरहानल त णु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रें कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते कृपीनी आसीस रे, सुकृत फलें नरी, तेपण निःफल केम गईए ॥२९॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम नकही मुझ, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत ए रीत रे, पहेली ताहरी. तो राखत हइडा उपरेंए ॥ ३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रें, मूढ शिरोमणि, नावि आपद सांसहीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंद्या करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ क्षण हिमें गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू नय

एें नरेए ॥३१॥ क्षण बेशे मन शून्य रे, क्षण ऊठे धसी, क्षण वली करतो विलंबनाए ॥ ठांमी नर म यांद रे, धीरज हारियो, ऐऐ मोह विटंबनाए ॥३३॥ मलिया सचिव अनेक रे, दुःखनर नंगुरा, गदगद व चने वीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक सा हेबा, तुरत पणे जइयें हवेए ॥ ३४ ॥ ढील तणो न ही काम रे, देवी देखीजें, कवण दिसायें आक्रमीए ॥ जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवडो, रहे ते ना नीमां संक्रमीए ॥ ३५ ॥ करतां कोइ उपाय रे, जो जीवे कदी, तो तुज नाग्य प्रशंसीयेंए ॥ वचन सुणी नूनाथ रे, चाले वेगशुं, वींटयो परियण दासीयेंए ॥ ॥ ३६ ॥ आव्या राणी गेह रे, दीठी कावसी, दव दाधी जिम वेलडीए ॥ शब्द रहित निश्चेष्ट रे, नील वदन ठवी, दंत नीडी सेजें पडीए ॥ ३७ ॥ मूर्छाणो क्षितिकंत रे, भ्रांत नयण थयां, नेह दावानल वली जग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, कव्यो निज प्रिया, देखी वली मूर्छा लग्योए ॥ ३८ ॥ फरी ऊठे फरी तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी ऊठे एम दुःख लहेए ॥ मंत्री मलीने अंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम कहेए ॥ ३९ ॥ अंग नहीं छे कोई रे, व्रण घातादिक,

अद्भुत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म न पीडायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे निश्चें राय रे, देवी मोहियो, राज्य नंग थाशे सहीए ॥ करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोल्यो तत्क्षणे, काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे, जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४२ ॥ मंत्री बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प रे हूवेए ॥ राजादेवी मोहें रे, घाल्यो परवशें, काज अ काज नवी जूवे ए ॥४३॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे, विषनी विक्रिया, छे देवी ए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध योग रे, विष टलशे परहो, राणी अति सुख पामसे ए ॥ ४४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क रत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री सर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥४५॥ कांइ क रो महाराज रे, निपट अधीरता, नवलां मंगल वर तशेए ॥ सांजली एम नरेश रे, विकस्वर लोचने, हर्ष सुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशे कोडी उपाय रे, नृपने जोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥ दशमी

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नडीया नल नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाइने, विषधर औषध यंत्र ॥ आमं त्रो मांत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आ देशें मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंने मांत्रिक क्रि या, उचित कह्या सवि चाल ॥२॥ एकांते देवी ठवी, करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी ऊठसे, करशे ने त्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली उ सास ॥ ४ ॥ वोली एम नृप चिंततां, अर्द्धदिवसने रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवि, करे विचार प्रनात ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशायी आज, नेह ग्रस्यो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिव प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ ॥ इम चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक ए क साहामुं जूवे, जिम मृग चूका गाम ॥ ८ ॥ दीठी कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूस्यो अति दुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ए ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरत्ता करहला रे, मो
पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे,
प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो
पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥

॥ रे गुणवंति गोरडी रे,कांइ रही रे रीसाय ॥ वि
ण बोल्यां मुज जीवडो रे,प्राहुणडा परें जाय ॥ प्रि
यारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ ह
ठीली बोलो हो ॥ विरत थइ कुण कारणे रे, एवडो
छेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज नघटे गजगाम
नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औषधी रे,
तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक नलहे पल जी
वडो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं नकीजें तेहवुं
रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ ऊठप्रिया
दिन बहु चढ्यो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रीत
मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
तुं कहेती मुजने सदा रे, हृदय वसो छो मुज्क ॥ ते
मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्क ॥ प्रि० ॥
॥ ५ ॥ एक घडी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स
मान ॥ तो दिन ए केम वोलसे रे, गोरी कहे गुण खा
ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे, दीधी ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल थइ रे, जो तुं आंख उघाड ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे, जिम तरु नांख्या जाड ॥ प्रि० ॥ ८ तुं चतुरा चंद्रानना रे, जीव रहणनी वाड ॥ पण इंण वेला पदमणी रे, हीयडुं नाख्युं जाड ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी हसी बोलनें रे, निंद रयणरी छांमि ॥ कर करुणा मुज कामनी रे, मननी पूर रुहाडि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा हा पण ऊठे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥ नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥ प्रि० ॥१२॥ धिग प्रभुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग राज्य ॥ संकट मांहेथी तुजने रे, हुं राखी शक्यो नाहिं आज ॥ प्रि०॥१३॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे प्रमदे गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण आवुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे छोडी हवे रे, तुजने पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फिट फिट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने धरणी ढल्यो रे, मूर्छावशें नूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

रे, उठ्यो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १६ ॥ हा हा मं
त्रीसर सुणो रे, जूमि पड्या मुज हाथ ॥ परलोकें
जातां प्रिया रे, जाइस हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सलुं
णा मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥
ए आंकणी ॥ गोलानदीने कांठडे रे, हुं प्रजलीस संघा
थ ॥ सलुं० ॥ सीघ्र करावो चय तिहां रे, काठें पूरो
पूर्ण ॥ अंग बालीने आपणो रे, निर्वृत्ति थाइस तूर्ण
॥ स० ॥ १८ ॥ नयणे श्रावण जडीलगी रे, बोल्या
एम प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ किस्यो रे, मांड्यो ए
राजान ॥ १९ ॥ रंगीला राजन हो ॥ समजो हीयडा
मांहे, ठबीला राजन हो ॥ मत करो आतम दाह,
हठीला राजनहो ॥ कहीयें गोद बिठायने रे, साहेबजी
रढ मान ॥ रंगी० ॥ कमल जिस्यां रवि आथमे रे, जल
सूके जिम मीन ॥ माय ताय विण बालज्युं रे, कांइ
करो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत द्यो रिपु एह रा
ज्यने रे, पामों प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण
हुउं रे, नपडो अममां जीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुमस
रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत ठांम ॥ तो
किहां रहेसे लोकमां रे, थानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥
२२ ॥ मरण लही देवी प्रजो रे, ते तो कर्म निदान

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सघलाने अवशान ॥ रं
गी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र ॥
कर्मथकी नवि बूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, भाज अणी ज
ल बिंद ॥ संपद चपल स्वभावथी रे, जेह्वी स्त्री स्वछं
द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
ह्वा सुपन जंजाल ॥ काया काच घटिजिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी०॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे न
स्यो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साह्वा रे,
मतकरो डुःख लगार ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संभालो निजरा
ज्यने रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण मानने
रे, पालो पीडित लोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे मं
त्रीसरो रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहें मढ्यो
रे, तेभणी रह्यो न जात ॥ रंगी० ॥ २९ ॥ में पूर्वें अं
गी कस्यो रे, साथें मरणनो बोल ॥ जो नकरुं तो कि
म रहे रे, सत्यवादीनो तोल ॥रंगी०॥३०॥ आज ल
गें में निरवह्यो रे, सूधो सत्य वचन्न ॥ ते अंतरालें
छोडतां रे, नवहे माहरुं मन्न ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ निज
मुखथी जे आदरी रे, वे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवसर
वहेती मूकतां रे, सहसा सत्य लजाय ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

जिण सत्य कारण होमीउ रे, वह्नन पणे निजदेह ॥ मूउ पण जग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥ ॥ रंगी० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जता रे, म्हारी देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय अम आथ ॥ रंगी० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउ रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जणी मौन लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी ढाल इग्यारमी रे, कांतिविजय कहे एह ॥ मोह शु नट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह॥रं०॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेख्या पुरुष बीजा वली, करवा साज हगील ॥ १ ॥ तुरत मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदें, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि कें, कस्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहे थापिउ, ते राणीनुं देह ॥ चाले नृप गोलो तटें, शबिका आगें

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब दुखिया सविलोक ॥ झूरे विलपे डूबकें,रोवे करता शोक॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ उलंगडी उलंगडी तो कीजे मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने रे, वदन हूआ विछाय ॥१॥ रायजिम रायजिम छोडो अमने साहेबा रे,विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम मुख दीठे सुख पामुं सदा रे, छेह न द्यो क्षिति कंत ॥रा०॥ २॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, बहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो नशक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीउ रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे,करे घणा आक्रंद ॥ अन्न न अन्न न भावे नागी निंदडी रे, वाध्यो दिल दुःख दंद ॥ रा०॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विष व्यापिया रे,घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्वे स्वजुं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावत्स

हा वत्स हानिधि हा कुल दीवडा रे, कुलमंमण कुल मोड ॥ हानृप हानृप अमने ऊंची चढावीने रे, धसकाई विण गोड ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृद्धा इंम विलपे घणुं रे, नावी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खूतो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ८ ॥ धिगधिग धिगधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने ठोडीने रे, जो जावे छे आम ॥ रा० ॥ ए ॥ मुजरो मुजरो अमचो कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ आतम आतम निचिंतायें वालला रे, इंम निंदे परधान ॥ रा० ॥ १० ॥ हाजिणे हाजिणे रूपें काम हरावीयो रे, चली हूउ निर्देह ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रजु नारी कारणे रे, किम बालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो कदीहो रूप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥ इमकही इमकही नयणे जल इवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥ रा० ॥ १२ ॥ जनक जनक तणीपरें पाल्या प्रेमथी रे, ए सघला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विछोह्या बापडा रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी नगरी दीसे आज दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥ इंमकेइ इंमकेइ संचरता नृप मारगें रे, जाखें दीन वचन्न

॥रा०॥१४॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोह्होटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक भणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केह्नो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुजग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञा न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र चंम उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए स वि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीधा विण गुने रे, खंमित दैवे एण ॥ मंमित मंमित वियायें तुम सा रिखा रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, गोडे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं इंम राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ इंमपुर इंमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोह्होतो गोला तीर ॥ रा०॥ २१॥ ते शब ते शब तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

त्यांहिं ॥ देतो देतो दान याचकने कतरे रे, न्हावा लागो मांहिं ॥ रा० ॥ २२ ॥ नूधव नूधव नाहें त्यां जल जेतले रे, रडते लोक समग्र ॥ जलने जलने पूरें, तव एक तांणियुं रे, आव्यो काठ उदग्र ॥ रा० ॥ २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तब बोलीया रे, रे रे तारक जाहु ॥ लाकड लाकड जलमां सनमुख आवतुं रे, वेगें काढी ल्याहु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ठे एह ठे योग्य चिताने इंम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहिं ॥ बाहिर बाहिर काढ्यो ताणी तत्क्षणे रे, जलकंहु अवगाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो निहुं पखें रे, त्रापा परें ते थंन ॥ दीसे दीसे स्थूल कविन आगें पड्यो रे, जाणे वाहण थंन ॥ रा० ॥ २६ ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो छुरियें बंध ॥ जटक जटकसुं अर्द्ध जुदो थयडी पड्यो रे, त्रूटीगया सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरचो घन सारादिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥ २८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निद्रित लोचन रंग ॥ जलमां जलमां छांनि रति आवी रही रे, ठेतरी आंणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवी
पेखवी नूपतिनो दिल जागीउं रे, जागो विरह वियो
ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन
सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इंणी परे इंणीपरें कां
तिविजयें कही बारमी रे, सुंदर ढाल रसाल॥रा०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आंम ॥
चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पा
लखीयें पोढाडीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एहके ते
ह छे, के कोइ छल छे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक
प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अ
छे, के विध धरिउ आंहिं ॥ ३ ॥ जब सेवक जइ नि
रखीउ, आवी शिबिका पास ॥ तबते शब हड हड
हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो ख
रो, छेतरतां नृप छेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते
जग साचा बेल ॥ ५ ॥ इंम कहेतो चलतो नले, ज
लत्कार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, थयो
उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या
नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नूपनें, दाख्यो शकल
प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

. रयाम ॥ तेमाटे पूछे हवे, राणीने इंण ठाम ॥ ८ ॥
॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा
साहेबाने अंग, विच विच रतन जडाव;
कोडी सूरज करुं वारणेजी॥ ए देशी ॥

॥ मृगा नयणी राणी हे, सुंदरहवे नयण उघाड ॥
कठो राणी आलश छोडी,कबको प्रीतम अलजो करे
जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे हसित मुखें मीठडा
बोल, कहो राणी वीतक वात ॥ धुरथी जाणीजे
जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे
निद्रा छांड ॥ कहो पीउं कनाठो केंम, जीरा वशन
ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगमे कना हे, निकट चय
पारवलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, ठवीय ला
व्या छो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद
र पछे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम अम
मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव
ल किहां पाम्यो हार, कहो किम पेठी कार,किणे वा
ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे
वडनी छांहिं ॥ चालो पीउ थाउ सुख, संभलावुं अ
म वातडीजी ॥ ७ ॥ नृपति तव आव्यो हे,सकल ज
न विंटचो तेथ ॥ अमें जरी कोमल काय, तडकें तपी

थइ रातडीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो ठो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुभ निमित्तनोजी ॥ ए ॥ नमी वन वाडी
हे, आवी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पान,
वेगवती चंचल तनुंजी ॥ १० ॥ निद्राभर तेणें हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपाडी लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे, मूकी
मुज नाठो धीठ ॥ नयें घण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुंथयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
छल मुख आगल पास ॥ सुणुं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
धडूके हे, सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रीछ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक दुःख पूरें भरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केणि, वैरीअकारण अपहरिजी॥ १६॥
चढीगिरि टुंके हे, करूं निज आतम घात ॥ चित चिं
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लड थडते पगेंजी ॥ १७ ॥
दीठों तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ ऊंचो

ञति जलहल ज्योति, जलके अंबर तल लगेंजी ॥ १८ ॥ रूषन प्रज्ञु राजे हे, मोहन जिहां जगनो ना थ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उल्लस्यो जी ॥ १ए ॥ कीधी स्तुति मोटी हे, ललित पद अर्थ गंजीर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सयल मनथी खिस्योजी ॥२०॥ कांतें कही रुडी हे, सरस ए तेरमी ढाल ॥ मीगे जिम साकर द्राख, सुणतां काने अमृ त वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥ जगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥१॥ हुं शासन रखवालिका, चक्केसरी मुज नाम ॥ आ दि जुवन रक्षा करूं, मलयाचल शुन गाम ॥ २ ॥ म लय देवी मुज नाम ले, बीजुं गाण गुणेण ॥ साहमी धर्म जणी चरण,प्रणमुं हुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पडे अव स्था माणसा, नटले सुख दुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछ्युं में कहे मावडी, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें स वि निरत्तसुं, तवसा बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउ बंधु ॥ वछे सांजलो ॥ निर्गुण लोजी राज्यनो रे, कूड कपटनो सिंधु ॥ व० ॥ १ ॥ वड बांधव हणवा जणी रें, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरों रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वड बांधवें रे, पाडयो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ आर्तध्यावें अंते मरी रे, एणें गिरि ए थयो नूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठी माहरे दूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत जवें ते पापीउ रे, संजारे निज वयर ॥ व० ॥ ठल जोतो नर नाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यबलें नसके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिशुं रे, प्रेम निवड ले अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ खस जासे सीतल जलें रे, टलसे सर्व संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठल ताके रसी रे, लागो रहे नित पूठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकली रे, कपाडी तेणे ऊठ ॥ व० ॥ ८ ॥ इंणगिरि टूंकें मूकीने रे, आप थयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्यें नेटीया

रे, तें श्रीकृषन्न कृपाल ॥ व० ॥ए॥ तूठी हुं जिन न क्तिथी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ ऊुजहो दर्शन देवनो रे, दीठो बे सोजाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में वीनव्युं रे, जो तूठी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं मह्रारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥ चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥ चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अति प्रेम ॥ व० ॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोडले रे, थाशे तुज संतान ॥ व० ॥ गर्न रोध तह्रारे थयो रे, तेतो जूत निदान ॥ व० ॥ १३ ॥ हवें ऊुःख देतां वारशुं रे, निज सेव कने जूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं आकरी रे, खल न करे करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअडी रे, माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माह्रारी उद्वरे रे, तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति कंतनें रे, परम कृपापर जूंज ॥ प्रीतम सांजलो ॥ हार दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥ सप्रजाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयणबहु मूल ॥ प्री० ॥ सयल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री० ॥ ॥ १७ ॥ एहथकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान ॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, नूत तणो संबंध ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें ते गयोरे, तुज रविगिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही दयिता गणी रे, घणु डुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥२०॥ सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥ तिण वेला एक खेंचरी रे, नजपंथथी आवंत ॥ प्री० ॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवी लहे रे, खगनारी हुई संग ॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्युं वचन विनंग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे, मुज डुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर नामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥ कांतिविजय इम चौदमी रे, नाखी निरूपम ढाल ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥१॥ स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे बे मुज पूठ ॥ जो

तुज रूप निहालशे, शील खंमशे कठ ॥ २ ॥ लोक धरम माहरे हसे, जनमां वधे दुःखदाय ॥ खोइश तुं कुल वट्टडी, परवश वास वसाय ॥ ३ ॥ नवरस लोजी नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल जर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीर नदी जल उछले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन नी ठांट हो, मृगा नयणीरा जमर सुणो वातडी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥वा०॥ हीयडुं नाखे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन मुज दुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेचरी ॥ वा० ॥ सुक कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या बलें ते खेचरी ॥वा०॥ कीधो फाडी दुजाग हो ॥ मृ० ॥ छिद्र कस्यो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

णे माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुज तनु चरच्यो चंदने ॥ वा० ॥ करी मृगमद छिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अगर प्रमुख शुज वस्तुयें ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाव हो ॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुजधरी ॥ वा० ॥ ढांके ऊपर फाल हो ॥मृ०॥ तदनंतर न लहुं किस्युं ॥वा० ॥ गर्न रही जेम बाल हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दीठा हवे नाथजी ॥वा०॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥मृ०॥ नृप कहे तुज विरहण दुःखें ॥ वा० ॥ मेलवीउ ए योग हो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांही गोला तटें ॥ वा० ॥ वारण मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ दुःख सुख लाने लोकमां ॥ वा० ॥ नटले पूरवकृत नोग हो ॥ मृ०॥ ८ ॥ मंत्रि कहे तेणे खेंचरी ॥ वा०॥ शोक सबल दुःख जालि हो ॥ मृ०॥ काठ डुबल विवरें धरी ॥ वा० ॥ वहेती करी जल बाल हो ॥ मृ० ॥ ए ॥ मारे ते जो खेंचरी ॥ वा० ॥ तो विद्या होये आल हो ॥ मृ० ॥ पोहोर दिवस चढते मल्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि काल हो ॥मृ०॥१०॥ नृपकहे मुज दयीता तणो ॥ वा० ॥ हरण हूउ सुख हेत हो ॥ मृ०॥ कुलकृत्यकारी नूतनो ॥ वा० ॥ बंध कस्यो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ देवी जल मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धस्यो शुनगाम हो ॥

मृ० ॥ इणे अवसर बिरुदावली ॥ वा० ॥ बोल्यो वे
तालीक ताम हो ॥ मृ० ॥ १२ ॥ प्रबल प्रतापी वि
श्वमां॥ ॥ वा० ॥ कमला नासण जेह हो ॥ मृ० ॥
जय जय ते जग शिर रह्यो ॥ वा० ॥ प्रज्जुपरें दिन
कर एह हो ॥ मृ० ॥ १३ ॥ मंत्री नणे अवशर लही
॥ वा० पधारो पुरनाह हो ॥ मृ० ॥ नाहण जोय
ण पाणथी ॥ वा० ॥ वीसारो दुःख दाह हो ॥ मृ०
॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप ऊठीयो ॥ वा० ॥ आवे
नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नादेंकरी ॥ वा० ॥
बीहिना दिसि गज थाट हो ॥मृ०॥१५॥ मांगलिआ
जय रव नणे ॥वा०॥ नाचे गणिका कोडि हो ॥मृ०॥
दे आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होडा
होडि हो ॥ मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सहुअ वधामणा ॥
वा० ॥ देतो दान उदार हो ॥ मृ० ॥ जोतो पुरनां व्य
वहारिया ॥ वा० ॥ सणगार्यां बाजार हो ॥ मृ० ॥
१७ ॥ नूपतिं लखनां नेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो हय
गय घाट हो ॥ मृ० ॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी
॥ वा० ॥ करतो अरि मुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥
मंदिर पोहोतो महीपति ॥ वा० ॥ नेटे निज परिवा
र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी नूपने ॥ वा० ॥

पोहोता निज निज गार हो ॥ मृ० ॥ १९ ॥ नाह्मण करी नरपति गृहें ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो ॥ मृ० ॥ नोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० ॥ आरोगे अ विलंब हो ॥ मृ० ॥ २० ॥ नूपति दयीता संगतें ॥ वा० ॥ विलसे नवनव नोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यथकी दिशा पाधरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥ मृ० ॥ २१ ॥ गर्नधरे ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पटरा णी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥ वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ युगल गर्न जिमजिम वधे, तिम तिम नृप मनमो द ॥ राणी नाग्य सोनाग्य नर, धारे विविध विनोद ॥ १ ॥ तन रक्षा रूडी परें, नूप करावे तास ॥ करे कृतारथ दोहला, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयिता मुख केते दिनें, केतक दल छबी हुंत ॥ तनु डुर्बल स णगार रस, अल्प अल्प नावंत ॥ ३ ॥ मुख परिमल रस लालचें, चिहुंदिसि नमर नमंत ॥ सहज सुरनि कसासथी, पंकज कुल लाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिवस शुन वासरें, शुन मुहूर्त्त शुन वार ॥ पुत्र पुत्रिका रू प तिणे, प्रसव्यो युग्म उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ गेंडुडानी ॥ एदेशी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो युगल अनूप ॥ एरूडो रे ॥ रतिपतिनो रंग. एरूडो रे ॥ सरसतीनो अंग, एरूडो रे ॥ जिम नंदन खितिथी हूवे रे हांजी, कल्पवृक्ष ले अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥ वेगवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आ य ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोषसुं रे हांजी, दास करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नय रमां रे हांजी, दशदिन नृप थितिपति काज ॥ ए० ॥ पुत्रागमननां हर्षथी रे हांजी, हूउं अपूरव मन सुख साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर भुवन सवि चीतर्यां रे हांजी, बारण ठविया सोवन कुंभ ॥ ए० ॥ ध्वज पट लह कावियां रे हांजी, रोप्या टोमें कदली थंभ ॥ ए० ॥ ४ ॥ रयणथंभ ऊंना कर्या रे हांजी, अति सुंदर पु र शोभा हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हां जी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरमां कें हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीपक ठेल ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीधां सींच ण चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक चा चरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ बं

दि जवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सघला बंदी वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पडह अमारनो रे हांजी, देश मांहे जय जंजण जाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर नां तें जस्या रे हांजी, धूपघटा पसरी नज माग ॥ ए० ॥ ८ ॥ जनपद अकर कस्या हसें रे हांजी, ताडया डुंडु जि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव जावथी रे हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ए ॥ अक्षत पात्र जरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आवी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणा रे हांजी, चतुर सचिव मलिया दरबार ॥ ए० ॥ १० ॥ जुवन जुवन थापा दीया रे हांजी, सुरजी अगर कुंकुम घन घाल ॥ ए० ॥ उत्सवमहोत्सव मांमिया रे हांजी, शोजावी नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिआ मंगल जणे रे हांजी, बंजण जणे बहुला स्तुति पाठ ॥ ए० ॥ मह्ल रमें बल माल्हता रे हांजी, नटुआ ठेंके ऊंचा काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन जुवन पूजा रचे रे हांजी, सामी जक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर क र खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक ॥ ए० ॥ १३ ॥ अशुचिकर्म वीत्या पठी रे हांजी, संतोषें सुपरें कुटुंब ॥ ए० ॥ कर पंकज जोडी कहे रे

हांजी, ते आगल नृपति अविलंब ॥ ए० ॥ १४ ॥ मया करी मलया सुरी रे हांजी, आप्यां मुजने बे संतान ॥ ए० ॥ तस नामे होजो चिन्हे रे हांजी, मलय सुंदरी अभिधान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पालीजता रे हांजी, कुमर कुमरी वधे ससनूर ॥ ए० ॥ दिनदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, बीज तणो जिम चंद अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुवण चलणादिकेंरे हांजी, जिम जिम साधे शैशव योग ॥ ए० ॥ तिम तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम योवनने रसें रे हांजी, शिशुता रस मूके आस्वाद ॥ ए० ॥ कालें उचित कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति उनमाद ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी, खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्यालकरे हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रमें नाखें सरसांध ॥ ए० ॥ १९ ॥ कुमरी पण भमरी परे रे हांजी, वींटी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवाडी आरामभां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए० ॥ २० ॥ कांतिविजय बुद्ध शोलमी रे हांजी, ढाल कही उत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यपकी जय मा

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस ले नवनवा, सुणतां मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोडी ॥ बीजो खंम कहुं हवे, आलश निद्रा गेडी ॥ १ ॥ धुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सना सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस भंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥ ३ ॥ तेहभणी मन थिर करो, मूकी अलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांभलो, सरस कथा संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी शुभग, यौवन पूर अभंग ॥ काले काम समूहना, अगमें विविध तरंग ॥ ५ ॥

॥ढाल पहेली॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ए देशी॥

॥ यौवन रस पूरें चढी रें, नवलगोरीरो गात ॥ जलकें करे छबिचंद्रिका रे, जाणु आसो पूनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर, राजी रूपे लूटी लीधी रति राणी ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर ॥ ए आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी भमरनी टोल ॥क०॥२॥ भालथलुं भाग्यें भर्युं रे, दीपे सबल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा भणी रे, विधि मांड्यो कनकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ बीछडिया मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई बिचिना गडी रे, जिम सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे. नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवानल संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥६॥ बिहुं पखधारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥ निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बाहडी रे, तेह खु ढावे बाल ॥ अभिनव उपे जोडले रे, नमी आवी क

ल्पतरु फाल ॥ क० ॥ ७ ॥ गोल कठिन कंचुक कश्या रे, कुच युग एम शोनाय ॥ काम नृपति जीतवा न णी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ए ॥ उदर स कोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें जाण्यो पडे रे, अति कनक तबकने वान ॥क०॥१०॥ ठाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केडनो लंक ॥ देखतही वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥क०॥११॥ जंघ युगल दीपे नला रे, अचला कदली खंन ॥ म दन मालियें सिंचिया रे, नरी लावण्य अमृत कुंन ॥ ॥ क० ॥ १२ ॥ उंचा मांसल सुंदरू रे, पग काठब अनुहार ॥ तस तुलना करवा नणी रे, जाणे कमठ लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आं गुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक मंफित लेखणी रे, रति पतिनी एहवी नहुंत ॥ क० ॥ १४ ॥ पगें जांजर जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पूंज सोहामणो रे, तस कंठे ठाजे हार ॥ क० ॥ १५ ॥ कर कंकण मणिमय जड्या रे, कांने कुंमल जोड ॥ शोहे सवि शिणगारथी रे, गज गामणिआं शिर मो ड ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणे दिन निगमी रे, वर

लायक ते बाल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, इंम कांतें पहेली ढाल ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अछे एह जरतमां, पुरवर पुहवी ठाण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति जाण ॥ १ ॥ पटराणी पदमावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूउं, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, जूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कामण प्रमुख, शीख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ मिलणु आपी मोकले, वीर धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंडावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो जेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल बेठा सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी नृप कहे इश्यो, ए कुंण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥ कही काम निज स्वामीनां, करग्यो तेह प्रधान ॥ नृप दत्त मंदिर जई, उतरिआ शुजथान ॥ ए ॥ राज कुम

र मन कौतुको, निरखत पुर आवास ॥ नमतो नम
तो आवीउ, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥
॥ ढाल बीजी ॥ थाहारा मोहला ऊपर मेह जबूके
वीजली होलाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥
॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां लोला
ल निहाली० ॥ मांफे मींट अनूप कुमर कलो जिहां
हो० ॥ कु० ॥ जक नपडे तिल मात्र, के विरहथी
परजली हो० ॥ के० ॥ कामातुर अकुलात के, हुइ
मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अंग
वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो सु
रपति जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंभाकार सुजंघा
युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुदर कटीनो लंक वि
राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ मावे करतल माग नलो
मध्य अंकथी हो० ॥ न० ॥ हृदय महा सुविशाल सु
जा नोगल जिसी हो० ॥ सु० ॥ रेखा त्रण गलनाल
कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूडा चंचु स
मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्प्पण उप
मान कपालें नासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी का
नें अडी बिहुं आंखडी हो० ॥ अ० ॥ श्याम नमर

अनुमान शिखा रतिपति वडी हो० ॥ शि० ॥ ४ ॥ ब
लिहारी लउं तास घडयो जेणे एहवो हो० ॥ घ० ॥
निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ज०॥
नृप बाला नरी नयण पीये रस रूपनो हो०॥ पी० ॥
लागो जइनें गयण उमाहो चूपनो हो० ॥ उ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
वाध्यो विरह विशेष अलेख उपापलो हो० ॥ अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अछे एह बालके हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इंम चिंतवतां लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी जा
लिका हो० ॥ तला० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
णें वाचिया हो० ॥ च० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमाचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अछे तुज
जाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥जा०॥ वीरधवल
नी जाति अ हुंबुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली बारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० रही० ॥ ने
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वां

चो ईम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ कु० ॥ ने
ह निविडने तंत बिहुं मन साधिउं हो० ॥ बिहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंज निहाले वली जिहां हो० ॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संबाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ छांमो निरखण नेग उतावलो काज छे हो०
॥ १० ॥ वैरवसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आवीने हो०
॥ ति० ॥ हलनाव्यो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आयडे हो० ॥
हि० ॥ मांमे आघा जोर चरण पाछा पडे हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घडी हो० ॥ ह०
॥ रहेसे पण निशिचार आवीश हुं दडबडी हो० ॥
अ० ॥ १२ ॥ धारी ईम मनमांहे गयो निज थानकें
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानकें
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ ऊपरें
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
हो० ॥ वि० १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष ईणे ठाम आव्यो कि

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिदुग दरबान सूता इं
णे वेचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इंम चिं
तवीते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
नाखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इंणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो ल्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श०॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो०॥वि० ॥
पेसी एहवे गण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ १६ ॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउ हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउ हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसगाम देई ते तेहने हो०। । दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
ऊंचो चढिउ धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
बेठी करी आकीन कुमर एक उपरें हो० ॥ १८ कु० ॥

कुमरजणे सुण बाल करो चिंता किसी हो० ॥ क० ॥ करवा तुम संभाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ आ० ॥ देखो उघोडो आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥ नाखो विरहो ताडि करो मत आंतरो हो० ॥ क० ॥१९॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥ माथुं अति हें उछंग धरे तस गोदमां हो० ॥ध०॥ बीजें खंमे ढाल थई बीजी इंहां हो० ॥ थई० ॥ कांति कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥बि०॥२०॥

॥दोहा॥

॥ करे विविध तिहां गोठडी, बिहुं जण प्रेम धरंत ॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥१॥ पुहवी ठाण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि वारशुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥३॥ निरखत अचरज पुरतणां, दीठो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां, जाग्यो नेह उल्लंठ ॥ ४ ॥ मलीठ हसि हवे शीख ठे, चालण सुख सहु साथ ॥ वचनसुणी बाला विलपि, इंम कहे जोडी हाथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उनी नावलदे राणी अरज करेछे, अबको वरसालो घर कीजें हो ॥ गढबुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र ह्यानो हो ॥ प्रभु धणरा हो लोनी, वाला चलण न देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहो र हो कह्युं मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज ऊपर विभुजी, पूरो मनोरथ रूडा हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी पूंज मुक्ताहल मनजुं, एह ल्यो चातुर सूडा हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ हार तणे मिसे ए वरमाला, कंठे ठवी इंम जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण चंद्र मुखीतें, वचन कह्युं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ दुःख मधरिस रही दिन केताइक, बुद्धि करुं हुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोतें तु जनें, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण बांध्यो ए में तुज आगें, मन रलीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥ ढील हुवे जावाने तेहथी, सीखडी सी हवे दीजें हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनकवती नीचें नृपराणी, वातसुणी र

ही गनें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, लागो कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्यो ए एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ दोडीनें दादरने द्वारें, गनेंसें ताळुं दीधुं हो ॥प्र०॥८॥ कुमरी कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥ कनकवती इंणे कपट करीनें, राख्यांछे बिहुं रोंकी हो ॥ प्र० ॥ ए ॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसालो, अनरथ करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर नणे एहनें हुं कूडें, वंची आव्यो आहिं हो ॥प्र०॥१०॥ वात करे जई इंम तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी प्रकाशे मुख रस वाही, दोरी वात उल्लासें हो ॥प्र० ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्रेख्युं हो ॥ प्र० ॥ सुनट घटा वींटच्चे नरनाथें, कन्या मंदिर घेख्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हेहे विष कन्या, हुं सरजीकां नाथें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अनरथ लहेसे, ए आयो परायें हाथें हो ॥प्र०॥१३॥ कुमर नणे सुनगे कां बीहो, एहथी नहीं मुज पीडा हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां किणे, राखे ललबल लींमा हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंम कही आप शिखाथी काढी, गुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तस

अनुजावें चंपक माळा, थइ बेगो ते नारी हो ॥ प्र०
॥ १५ ॥ रूप निहाळी निज जननीनुं, कुमरी अचर
ज नारी हो ॥ प्र० ॥ नांजी ताळुं नरवर आव्यो, दे
खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोल्यो क
नका मुख देखी, कूडुं इंमकां नांखेहो ॥ प्र० ॥ अळ
वे आळ देई पर उपर, कां डुरगति फळ चाखे हो ॥
॥ प्र० ॥ १७ ॥ आक्रोसी विलखो थई कुमरें, बोला
वी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कहो बहेंनी पीउ को
प्या केणे, इंहां आव्या किण वागें हो ॥ प्र० ॥
॥ १८ ॥ पुरनो लोक अनादर वयणे, कनकामें निर
धाडे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुंबुं जूठी, तो कि
हां हार देखाडे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ छल जननी निज
कंठथकी ते, उंचो हार उछाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
ख सहुने देखाडे, कनकानो मद गाळे हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
तिण वेळा कुमरीनी जननी, जर निद्रामांहे हूंती हो
॥ प्र० ॥ सुख निद्रायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आव्या हसंतां निज
थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनक वती
नी निंदा करतां, लोक वदन कह्यां बोक हो ॥ प्र० ॥
॥ २२ ॥ कूडी पडी कनका महाबलनो, विघन थयो

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इंम बीजे खंभे, ए थइ त्रीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥ मलया किम दुःख पामसे, मानो जेह महींद ॥ १ ॥ हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्र गट हूउ नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ क हे कुमर अनरथ वडो, हुउ एह विसराल ॥ जो वली रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता संभा लजो, करगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कह्यो शुलन मेला वडो, आपण विहुंनो जेण ॥ चिंता करशो तेह विधि, मकरें चिंता तेण ॥ ५ ॥ वलि अनोपम तुजने कहुं, सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघला थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तय छिधिस्ततुस्या, (चिम त्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकंचि त्त, मुपायां श्चिंतयेद्बहून ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण उकेल्या ढांकणे, इंम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी, ए श्लोक सबल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साज ना, कुशल्या होजो पंथ ॥ देजो वेग मेलावडो, महे

जो लखमी गंथ ॥ ८ ॥ कहे बाला नरी लोयणां, रे छयलां छोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन खूतो शाल ॥ ए ॥ गुप्त मोहोलथी नीसरी, आवी च ढयो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी ठाण ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घडिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीधो मुने,इम कही कूड तिवार ॥१॥ नविक जन सांनलो रे, मलयानो अधिकार ॥ न० ॥ एतो सु णतां हर्ख अपार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोडादिनमां जेहथी,वा धी एवडी प्रीत ॥ न० ॥ २ ॥ इंम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहे पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ न० ॥ ३ ॥ राज कुमर इंम चिंतवे, पण बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करशुं तेह ॥ न० ॥४॥ तिणे अवसर एक आविउ,वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांनल नर पुरुहूत ॥ न० ॥ ५ ॥ पुत्रि अमचा स्वामीनी, मलया सुंदरी नाम ॥ तास स्वयंवर मांमीउ, करीने प्रतिज्ञा आम ॥ न० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्र सार छे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ न०
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायनां, नंदन तेडण काज ॥ दू
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ न० ॥ ८ ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥ कुं
णजाणे एहथी विधें, योग लिख्यो थानार ॥ न० ॥
ए ॥ ज्येष्ट कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ न० ॥
१० ॥ वांटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउ विलंब ॥ क
री उतावलो मोकल्यो, लगन अछे अविलंब॥न०॥११॥
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमर सना
मां सांजली, चिंतवे इंम हरखाल, ॥ न० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, नोगा डुःख संयोग ॥ जुखमां
हे नोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ न० ॥ १३ ॥
काज हतुं सांसें पड्युं, सिखाग्रह्युं ते आज ॥ विश्वा
वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ न० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल ॥
राजपुत्र कुल अवगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ न० ॥
॥ १५ ॥ तव नृपनिरखी पुत्रने, कहे वछ तुं शुनका
ज ॥ बल वाहनना घाटस्यों, रातें सधावो आज ॥
न० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें नस्यो, तात वचन

परमाण ॥ दल सज कीधुं तांवली, बोल्यो हरखें रा
ण ॥ न० ॥ १७ ॥ लखमी पूंज मनोहरू, सुत ल्यो
साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
धार ॥ न० ॥ १८ ॥ सूतां मुज निशिनें समें, करें उ
पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र नूषण हरे, गुप्त बीहावें सोइ
॥ न० ॥ १ए॥ मात कनेथी में ग्रही, हार वव्यो मुज कं
ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो तेणे उल्लंठ ॥
न० ॥ २० ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे डुःख ॥
करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने अनिमुख ॥ न० ॥ २१ ॥
जो नापुं दिन पांचमां, ते मुक्तावली हार ॥ तो मुज
काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ न० ॥ २२ ॥ हार
कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
तिज्ञा आकरी, डुःख धरती इंम माय ॥ न० ॥ २३ ॥
अदृश नडे जे रातिमां, राक्षस के चूडेल ॥ पोहोर
एक बे रही इंहां, नाखुं तस पग जेल ॥ न० ॥ २४ ॥
स्ववश करी तेह डुष्टनें, लेई हार नलिनांति ॥ सुंपो
माताने पछें, चालीश पाछली राति ॥ न० ॥ २५ ॥
राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंडें
ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ न० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी कवि ॥ बार जडी खांफुं ग्रही, बेगो दीवा पूठ ॥ १ ॥ मध्य रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख मा गेथी मलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर वि चारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली नली. आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलख लें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, एछे निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी. आवी छे इंहां कोय ॥ देव सक्तिनां बल थकी. हवें नावे सोय ॥ ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांफुं खरुं, तो वली जासे नागि ॥ चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥६॥ एम विचारी कठल्यो, त्रिवली नालें चाढि, चढि बेगो कर ऊपरे, ग्रही बे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिर्ड आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल वीचरातो रे, ऊ लट पलट करी चाल्यो जाय ॥मं०॥ ॥ १ ॥ निरजय बेगो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें नारें कर लचकाय ॥

पवने कडाड्यो रे ध्वज पटनी परें रे, हर चढित चिहुं दिशि फोलाय ॥ मं० ॥ २ ॥ जटकि आगटें रे नीचो नांखवा रे, पण आसण नकरे चलचाल ॥ कुमरें थ काड्यो रे अलड केकाण ज्युं रे, तव प्रगटी देवी वि कराल ॥ मं० ॥३॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखसे रे, विषम महावन गिरिवर ठेह ॥ इंम निरधारी रे मारी आकारी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥मं०॥४॥ दीन रडंती रे देवी इंम कहे रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज अबलानें रे सबला कां नडें रे, मूक हवे नकरुं तुज चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गई रे, छेद्यो कानें कूकर जेंम ॥ आप तिवारें रे पडित गयण थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलनर नारी रे वन आंबा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन वेग ॥ नयण मिमेली रे क्षण मूरछा लह्यो रे, पवनें विंज्यो अति तेग ॥ मं० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे त वल्या पछें रें, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि अंधारे रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त स फालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ क्षण एक मांहें रे तरुथी उ तरी रे, आवी बेठो तरुने खंध ॥ इंम मन सोचे रे कुंण ए आपदा रे, दीधी तिण कुल वैर प्रबंध ॥मं०॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां हुं ए किम थासे सूल ॥ हार नपामे रे जननी जो हवे रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण अछे अ समछ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इंम चिंता जर वेगो तछ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारि ग लीने अरथी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विछोडावुं रे जो जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं० ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतर्यो रे, वेगो छा नें आंबा गोढ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे, कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥ व दन विदार्युं रे होठ बिन्हे ग्रही रे, ते मांहेंथी काढी एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इंण समे रे, श रण होजो महाबल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकशित लो चन थाय ॥ दूरें ऊडाडी रे अजगर नाखीउ रे, देखे अबला मुखगत छाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मलया सरखीरे निर

खी गोरडी रे, चित्त चमक्यो ढोले तिहां वाय ॥ चेतन वाल्युं रे तव बाला जणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणाय ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निश्चय करी रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर करे वली रे, जिम पीडा तनुं विरली होय ॥ मं० ॥ १८ ॥ कुमर पयंपे रे ऊठो सुंदरी रे, तुम विरहें मुज मन शीदाय ॥ नयण ऊघाडे रे निरखी पद्मणी रे, सेवापर नृप सुत चित्तलाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ लाज करंती रे नेहल मीटमां रे, कहे जीवन जीवाडी आज ॥ संगम दैवें रे किम मेल्यो इंहां रे, नांखोजी नांखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे कहे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनुं पंकाल ॥ वीतक बेहु रे कहेशुं वली पछें रे, इंम कही आंणी नदीयें बाल ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाल्युं रे, जल पीधुं गली रे, वली आव्या पाछा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥ मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पूछशे रे, वीतक सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खासी पांचमी रे, बीजे खंडे ढाल अनूप ॥ मृं० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥जणे कुमर क्षीणोदरी, मांमी कहे तुं वात ॥ अ जगर वदने किम पडी, राखीर्नाजटव्रात ॥ १॥ कहे कु मरी हु नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कवि णथइ जे कहुं, अवर वात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवा मां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे रातिमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे छे साहमो धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीयो अछे, के कोइ जार लडाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो, आवे छे इंणिवाट ॥ मीट न पाडुं गोरडी, ए अवसर ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका टाल ॥ आंबानां रसमां घसी, कर्युं तिलक तस नाल ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥ रूप पालटयुं तुझमें, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष ग या मांज्या पछी, थाशो मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण बे ए एक छे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इंम कही निरखत वाटडी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ए ॥ तरुणी हरिणी परें धसी, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें, पूछे तस अवदात ॥ १० ॥

॥ ढाल ८ठी ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
डे दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं आंहिं, आवी कुंण एकली; किम कं
पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुंण तटनी ए नूप,
कवण नगरी किसी; इहां पाम्या सुखशात अमें मन
मां वसी ॥ १ ॥ नारी नणे ए नीर, नदी गोला वहे;
चंड्रावती उपकंठ पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
री जास, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल नूपाल, इहां
पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
चाहतो, पडतो पडतो तेथ, आयो नज गाहतो ॥ अ
हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न छे जगपती; जस मुखें
पेठी नारि, मलो जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
गल वात, नारि अचरिज नरी; पुत्री हुइ ते नूपने,
मलया सुंदरी ॥ मंम्प मांमयो तास, स्वयंवर नूपतें;
मूक्या दूत निमंत्रणें, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीधी सामग्री सर्व,
अगाउ मेलीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अछे कनकाव
ती; मलया सार्थे रोश, वहे ते डुर्मति ॥ ५ ॥ सोमा
माहरुं नाम, हुं तास महोलणी; सर्व रहस्यनुं ठा
म, घणुं विसवासणी ॥ मलयानां केइ छिड़, जोवे मु

ज सामिनी; पण नवि देखे कोइ, किहां अवगुण क
णी ॥ ६ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं; ते साथें
इंम रोप, तणु कारण किस्युं ॥ कुमर कहेसंतान, हो
वे जो शोकनां; शोकतणे मनशाल, समा हुए सहेज
नां ॥ ७ ॥ नारी जणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो
तां तेहनां छिद्र, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
त, थइ कौतुक कथा; दीठी कहुं तुज आगें, नही ते
अन्यथा ॥ ८ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणे;
हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर
विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नहिं में शुद्ध,
किहां हमणा लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होमे व
गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडो श्रीमुखें; वारी हुं
ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण ब
हु मूल, छुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ न
पति कनें ॥ अवसर देखी दोष, ऊघाडे अतिघणा;
विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ
ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप
वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र महाबल जाणियें ॥ १२

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे छे नित्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूचव्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपनां नंद, अनेक स्वयंवरे; ते मिस तुंपण वेग, आवे आम्बरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण बेहु, थया एकण मतें ॥ नारी हूए मति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने द्ये छेह, सरें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुद्ध रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो भंडार, अनृतनी छे दरी ॥ सुखमी ठी मन धीठ, धरमणी दामणी; नहुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विलुब्धा, जेनर बापडा; ते पामे दुःख लाख, थया रस लांपडा ॥ नहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में छे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछें नही सोचसो ॥ जो मुज वचन विचार, जरोसों नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ ईम उदभाव्या दोष, अनेक मृषा कही; रोषारुण भूपाल, कह्यो द्वेषें ग्रही

॥ छठी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही, मोहास, नरी मधुखंमनी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय ॥ चंपकमाला नामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्यतिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिका, थई रोष असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरु, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो, इंम कहे चंपक माल ॥३॥ कन्या तेडी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ ग्रमनूली मौनें रही, मनमां पेठी जाल ॥४॥ चित्त विकल्पी कूड इंम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी, अपहरि लीधो केण॥५॥ अवगुण इंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंम ॥ रोष अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलडी, करहलडी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री नणी, फिट पापिणी हतियारी, मुखडुं कांइं देखाडे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज लगाडे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोषें नरी, जिम वि

पहुरनी दाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या रूपें वैरणी, थइ लागी उपरांठी, वैर विरोध वधारें होराज ॥ २ ॥ एवडुं तुज किणें सीखव्युं, चरित्र विषम अति उंडुं, सुंडुं सुणतां लागे होराज ॥ आज थकी जो इंम करे, वधती वधती वली शुं कर शे जातां आगें होराज ॥ ३ ॥ दोष नहीं माहरे शि रें, कीधुं छे तें जेहवुं, तेहवा फलतुं चाखे होराज ॥ प्र त्यक्ष विषनी वेलडी, उखेडी हवे नाखी, सारेसुं तुज पाखें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन कडुआ सुणी, मा य रीसाणी जाणी, आई निज आवासें होराज ॥ बे ठी आमण दूमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम वि मासे होराज ॥ ५ ॥ अणगमतुं में तातनुं, विकल प णेसुं कीधुं जेहथी,तात रीसाणो होराज ॥ हार रयण खोया थकी, एवडो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने क लुषाणो बोल्यो, विरुआं वयणा होराज ॥ इंम कुमरी चिंता भरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आंसु नयणा होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्यें,तुज तनुजानां दीठां, चरित्र महाविष तोले होराज ॥ हार रयण तिण कुमरनें, इंणे दीधो छे निश्चें, मुज मारणने कोलें होरा

ज ॥८॥ वाल्ही पण वैरणी हूई, जिम विषधरीयें फंकी आंगुली होय डुवालही होराज ॥ रिपुकुलने जां न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ डुःख नरी रयणीनें गमी, प्रह कालें नृप तेडी, सेवकनें इंम नासे होराज ॥ मलयाने ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूछो, रखे किहां किण ए नासे होराज ॥ १० ॥ मंत्रि सुबुद्धि सुण्यो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, आवी नृपने नेटे होराज ॥ करजोडी इंम वीनवे, असमंजस ए मांड्यो, नृप कहो किण खेटें होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो क्यां पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, नघटे जेह वधेस्यो धुरथी, आपणें हाथें होराज ॥ १२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न होवे पछतावो, पछे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि चार सुणावीउं, सचिव नणी नृप धुरथी, सचिव फ स्यो नाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद गद कंठें इंम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा नृप किम कोप्यो, ते कहे नलहुं कांई होराज ॥ क

न्या इंम विलपे तिहां, हाहा मुज किण नाख्या, अव गुण वैर वसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी हरखतो, तेपण थइ अतिवांको, नरपति मुजनें मारे होराज ॥ चंपकमाला मावडी, रूपरांगी थई वेरी, नृपने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज सुंदरू, तेपण आखुं आफा, कान देईने वेगो होराज ॥ बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मीगो पण जे नोजन एगो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माह रां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव नव केरां हो राज ॥ करुं धरणी तुज वीनती, द्ये मारग जिम पेसी काढुं प्राण आघेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया रही, पूर्व कर्मने निंदे, कहेसे वली कांइ आगें होरा ज ॥ बीजे खंमे सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांतें इंम अति रागें होराज ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेडावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सु णावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिखा वो नृप कन्हें, कहेजो इंम संदेस ॥ तुम पुत्री इंम मुज मुखें, दीधो ठे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती बाला थ

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसडा, ईम संज लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो
॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांजल पुरना ईस ॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल, अलवें पाई रीस ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो म्हारो होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरणमें ते सिरें होलाल, दंम कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रजु पद जेटवा होलाल, तुम वचनें मह्वा जाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं तेवली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ ईम नग मेंतो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली बिहुं मायने होलाल, कहेजो मु ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जेमें आच स्यो होलाल, ते जांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखा डी मारतां होलाल, नहुवे कालकलंक ॥ न० ॥ सं० ॥ ५ ॥ नृप विचारे देखजो होलाल, करी वैरीनां काम ॥ सुलोचनी ॥ गुनह पूठावे आपणो होलाल ॥ अण जाणी थइ आंम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र जलो मल

या तणो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया कही होलाल, मुखमीठी धूतारि ॥ सु० मधु लिंपी विष गोलिका होलाल,एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च० ॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं सुख दीठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण वहेली करो होलाल, कन्या अवगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती वलतुं जणे होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गोला नदी तट दाहिणे होलाल, अंध कूउ कहेवाय ॥ सु० ॥ च० ॥ ए ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, करसे जीवित नास ॥ सु० ॥ इंम करी रोती जूरती होलाल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगवती मलया जणी होलाल, नाख्यो तेह प्रबंध ॥ सु० ॥ तास वचन अविलंबीनें होलाल, ऊठे तिहांथी मुंध ॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकठिन हीयडुं करी होलाल, साहस वस असमान ॥ सु० ॥ पूरवकर्मने निंदती होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥ धारी मन निर्भय पणे होलाल, विंटी सुनट अनेक ॥ सु० ॥ पालें पग पंथें वहे होलाल, साही सबलो टेक ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथे आफले होलाल, पडि पडि ऊठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास ऊदा

सीयां होलाल, पूछे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥ जो तुज मनमां एवडी होलाल, हुंती ताती रीस ॥ सु० ॥ कांइं स्वयंवर मांमीने होलाल, तें तेड्या अव वनीस ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाल्याजे पोता वटें हो लाल, पहेलां पोषी लाम ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने हवे होलाल, छेहे कां दुःख हाड ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥ किम करशुं रहेसुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं त ॥ सु० ॥ लागे ए अलखामणो होलाल, फीटल प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कु मरी रयण सीधावते होलाल, जगत हुउं गत रेण ॥ सु० ॥ च० १८ ॥ राय सुता पगमां चुभे होलाल, तीखा कंटक कोडि ॥ सु० ॥ मान रक्त रसिया मुखें होलाल, पेसे पगतल फोडि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥ आई कूआ कंठडे होलाल, बोले इंम मुख वाच ॥ सु० ॥ कुमर महाबलनो इंहां होलाल, सरण हजो मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ बाल जंपावे कूपमां होलाल, पडती जिम जलबाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव हा हा रवें होलाल, पूरे गगन विचाल ॥सु०॥च०॥ ॥ २१ ॥ सिंचे धरणी आंसुयें होलाल, निंदे नृपने

केय ॥ सु० ॥ देता देव उन्नंनडा होलाल, आव्या लोक वलेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे सेवकें होलाल, संतूठो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंमे आठमी होलाल,कांतें कही ए ढाल ॥सु०॥च०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंते एम ॥ हणतां पुत्री दुष्टनें, थयो वंशने खेम ॥१॥ आमंत्र्या नृप नंद जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्याधें मूई, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वली पूछुं कनका प्रत्यें, मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवशुं, नृप पोहोतो तस गेह ॥ ३ ॥ बार जडयां देखी तिहां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाडनो, तेहमां निरखे नूप ॥ ४ ॥ गर्न नवन दीपक करी, लेई हार ते नार ॥ दीठो नूपें विवरथी,करति इम मनोहार ॥५॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणोहो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ए देशी ॥ अथवा नेमि पधांपेहो प्रीति संनालो महारा लाल ॥ एदेशी ॥

॥ हार हविला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥ संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ दुर्जन लाधो हो सुरमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सबल

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो छानो पहे
लो ॥ मा० ॥ नृप नंचेरी हो कीधो घहेलो ॥ मा० ॥
वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स
घली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांजलिने
हो नृपति बोल्यो ॥ मा० ॥ इंण पापिणीयें हो मुजनें
जोल्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोर्यो ॥ मा० ॥
मलया माथे हो दूषण उर्यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ धिग तुज
जीव्युं हो अधम छगारी ॥ मा० ॥ वांक विहूणी हो
मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीडी दु
हवी ॥ मा० ॥ उंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा०
॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पवाडे ॥ मा० ॥ इंम
कही वारे हो हाथ पछाडें ॥ मा० ॥ गाढें पोकारी
हो धरणी ढलीउ ॥ मा० ॥ दुःखडे दाधो हो मूर्छा
मलिउ ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणीने हो दोडी आ
व्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इंम कहेताव्या ॥
मा० ॥ तेहवा मांहे हो कनका नारी ॥ मा० ॥ गोख
मारगथी हो कूदी नाठी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पूठें
हो जई झंपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्क्षण
आवी ॥ मा० ॥ शूने मंदिर हो खूणे पेठां ॥ मा० ॥
सुणियें वातो हो जणनी बेठां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

वाल्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो लां
बी पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोडी ॥मा०॥
पीउने पूछे हो बेकर जोडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ शुं मांझ्युं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा०॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीना हो करणीसूत्री ॥ मा० ॥ ९ ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ डुःख
पावकनी हो जाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥मा०॥ करति डुःखनां हो लोक विनागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव बिहुनें हो इम समजावे
॥मा०॥ मूआं जगमांहिं हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ नाग्यें लहीयें
हो जइ जीवंती ॥ मा०॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसाडी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन डुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघाडी हो रा
णो नांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खें ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ नागी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केडें लागी ॥ मा० ॥ राय कह्याथी हो तस घर लूंटयो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो हो पकडी कूटयो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्तधारी ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नरपति बलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां तिहां जमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनका बीहिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज नांखे हो विहुं विछडीयें ॥ मा० ॥ रहेतां नेलां हो हाथे पडीयें ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥ मुजने छोडी हो दोडी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो धमकी वहेली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलडी हो रही त्यां न शकी ॥ मा० ॥ रातें छगी हो वनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आवीउं हो नय धूजंती ॥ मा० ॥ वात कही में हो जेहवी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाछुं हो रयणि विहाणी ॥ मा० ॥ इम कही सोना हो आगें उजाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खंमें ॥ मा० ॥ कांति पयंपे हो वचन अखंमें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हूउ,कहे कुमर गुण गेह ॥ पहेलां इंणे जे संग्रह्युं, वैर विशोध्युं तेह ॥ १ ॥ डुष्ट हृदय युवती तणो, विषम चरित्र जंजार ॥ करतां न जुए कामिनी,अनाचरण संचार ॥ २ ॥ कन्या रयण विणासतां, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ करी वली, पोतें अपजश लीध ॥ ३ ॥ कनकानी दासी थकी, सुंदरी तुज विरतंत ॥ लह्युं सकल में मूलथी, अहो चरित्र बलवंत ॥ ४ ॥ अल्पकालमां अतिघणी, दीठी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पडतां ग्रही, अजगर वदन विकाशि ॥ ५ ॥ निकट किहांकिण कूप छे, तेमांथी ते साप ॥ आफलवा आंबा थडें, इंणी थल आव्यो आप ॥ ६ ॥ वदन विदार्युं बल करी, में तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इंहां मुज आज ॥ ७ ॥ एकांतें अजगर पड्यो,देखी बोहिनी बाल ॥ कुमर कहे शंका किसी,जो विधि छे रखवाल ॥ ८ ॥ पूरव श्लोक जणे तिहां,बिहुं जण धरी बहु राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, नष्यां सबल सोनाग ॥ ए ॥ तेहज आंबा फल ग्रही, जक्षण करी ससनेह ॥ देवी जल मंदिर जणी, वेगें आव्यां बेह ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे कांइ जोवनीयांनो ल
टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी बिहुं तिहां देखे काठ तणी बे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणीरे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरेवारी तीन कारज हवे करवां माहारे आंहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हांरेवारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी ईम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हांरे वारी तेमाटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हांमशुं रेलो ॥ हांरेवा री तिहां रहीने कनकानुं निरखीश रूपंजो, करतां रे ठल बल मुक्तावली पामशुं रेलो ॥ ४ ॥ हांरेवारी हुं पण जइ चय बलता नृपने संग जो, वारुंरे नवली बुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हांरे वारी नामांकित मुज दे तुज मुद्रा नंगजो, प्रदेशे रे एहथी तुज को चोरी

ववी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुद्रा दीधी ते थापि शि
र आपजो, इंम कहीरे इहां ठानी फरतां फायदो रे
लो, हांरेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो,
मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे
वारी साधी कारज सघलां कालें सांजजो, आवीश रे दे
वीजल नवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन
चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही
न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर
वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वें
शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठांणजो,
दीठारे नाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु
मरें पूठ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ९ ॥ हांरे वारी र
मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, विंटीरे सेलडीयें
नांखी गजदिशा रेलो ॥ हांरेवारी पडती लै गज मुख
मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें
एह ठाणजो, तेहनांरे इहां खंम कदाचित् पामीयेंरे

जो ॥ हांरेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाण जो, मुझरे पूजामां ठवी गजने दीये रेजो ॥ ११ ॥ हांरें वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति सुत आगें चालीउ रेजो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउ लोक अछेह जो, करतो रें कोलाहल कुमरें नालिउ रे जो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण कामजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेजो ॥ हांरे वारी चयमांथी उछलते अति उद्दामजो, दीसेरें घण धूमें नजतज नेलव्यो रेजो ॥ १३ ॥ हांरे वारी भुज ऊंचा करी दोडे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इंम मधुरवचन गाढे स्वरें रेजो ॥ हांरेवारी जीवे छे तुम पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां नोला इंणी परें रेजो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कर्ण सुधासम सुणीने तेहनां वयणजो, साहामांरे आव्या लख लोक उजायनें रेजो ॥ हांरेवारी जीनें लवण उतारुं तुजने सयणजो, क्यांछे रे कहो मलया तेह बतायने रेजो ॥ १५ ॥ हांरेवारी इंम सुणी बोले तेह निमित्तनो जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेजो ॥ हांरेवारी तो नांखुं आगमगति हुं इणें गणजो, इंम सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेजो ॥ १६ ॥

॥ हांरेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप कां अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चें जीवती रेलो ॥ हांरेवारी निमित्ततणें बल जाणुं में महाशयजो, मतिबलेंरे कहुं छुं हुं तुमने तेवली रेलो ॥ १७ ॥ हांरेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल इंहा वली रेलो ॥ हांरेवारी बीजे खंडे ए थइ दशमी ढाल जो, नांखी रे इंम कांति विजय रंगें नली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप कहे सुण निमित्तिया, दुःखियो हुं विण नाग ॥ देखुं मलया जीवती, एवडो किहां मुज नाग्य ॥१॥ काल कूही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी चित्रता, न मुइ नांखे एम ॥ २ ॥ शोधी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोडि ॥ दुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोडि ॥ ३ ॥ तेह नणी मुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी ईम नृपनां, बोल्यो कुमर बनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नृपतिजी रूडा, सांनल चतुर सुजाण होरेहां ॥ वात न नाखुं कूअडी ॥ नृ० ॥ आजदिवस सुख ग

ए होरेहां ॥ बारश तिथि थइ रूअडी ॥ नू० ॥१॥ आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च ढे ॥ नू० ॥ बेग सहु अवनीश होरेहां, मंमप आ मंबर मढे ॥ नू० ॥ २ ॥ शोनित तनु शणगार होरे हां, कुमरी दरिसण आपशे ॥ नू० ॥ देखीस सहसा कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ नू० ॥ ३ ॥ रचि स्वयंवर शुन एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे ॥ नू० ॥ जो ठे तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए धारजे ॥ नू० ॥ ४ ॥ मलया मुडिरयण होरेहां, का लें तुम कर आवशे ॥ नू० ॥ तो साचां मुज वयण होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ नू० ॥ ५ ॥ चौद शने परजात होरेहां, पूरवदिशि पुर बाहिरें ॥ नू०॥ नृपनां बल मन खांत होरेहां, परखावण तुज कुलसुरी ॥नू०॥६॥ पट करणो एक थंन होरेहां, पोल समीपें थापशे ॥ नू० ॥ लहेता लोक अचंन होरेहां, देख त रंग नधापशे ॥ नू० ॥ ७ ॥ ते लेइ तेणिवार होरे हां, थिरथापे मंमप तलें ॥ नू० ॥ नेदशे थांनो ते ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) बाण सहित पूजा नलें ॥ नू० ॥ ८ ॥ थापे थांना ठेह होरेहां, जे नर तेह चढाइनें ॥ नू० ॥ नेदशे थांनो तेह हो

रेहां, होशे वर तुज जाइनें ॥ नृ० ॥ ए ॥ अनोपम
छे अतिजांति होरेहां, पूजाविधि ते थंजनी ॥नृ०॥
जांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम
नी ॥ नृ० ॥ १० ॥ मलसे ए अहिनाण होरेहां, नि
मित्त बलें जांख्या अछे ॥ नृ० ॥ न मले जो निरवा
ण होरेहां, मन मान्युं करजे पछें ॥ पंम्फितजी रूडा
॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम लाग्यें तुं
आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस पाम होरेहां, उप
कार धुर छावियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका
र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए
अधिकार होरेहां, जगदीसें तुज गुण छते ॥ पं० ॥
१३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि नू
षण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो द्युं दान होरेहां, तो
उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते
ह होरेहां, थंन तणी पूजा वडी ॥ पं० ॥ नृप वचन
छेहडे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठडी ॥ पं० ॥
१५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे
कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट
पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल
होरेहां, महाबल नंदन परवडो ॥ पं० ॥ वरशे ते तु

ज बाल होरेहां, कुमर कहे एम परगडो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी न णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ साम्भर महाराय होरे हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति णठाय होरेहां, साथें वली नोजन जमे ॥ पं० ॥ १९॥ वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परनात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ न० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ नू० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ नू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके, गालण गजनुं ठाण ॥ तेह प्रनातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोडी कौतिक नख्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रनु मुड्रा रयण ॥ २ ॥ नृ प लीधी ते मुड्रिका, रनस पणें ससनूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, इंम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंनो मुड्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि त्त ए कारणे, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार
ण इहां, संनवियें खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप वि
शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
स्यो मांमे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा
चियें, होये जूठके साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीयें, ईम
बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी,
लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक
ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आ
व्या नृपनां नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उत
स्या नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने,जो आपो अम सीख लाल
रे ॥ मंत्र अर्ह में साधिउं, ते साधुं मन ईख लाल रे
॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ जो
नवि साधुं ए समे,तो वलतुं न सधाय लाल रे॥ कोई
विघन शुन काममां, अण जाण्या वहराय लाल रे
॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातिनो, आपो जो अव
काश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रनातमां, आवीश हुं तुम
पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप ईम कहे,
मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं हजी,

जेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन जेई केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहिं लाल रे ॥ रयणि गमाडी दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रहकालें पग नूपनां, भेटे नाणी आय लाल रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, सिद्धि थई निरपाय लाल रें ॥सु०॥६॥ कुमर कहे कांईक थई, कांइक रही छे शेष लाल रे ॥ अर्चन थंभतणुं करी, जाईश वली तेणे देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंभनी, प हेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां आईने, बोल्यो धरी ईम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुम आदेशें हुं गयो, पुरबाहिर परभात लाल रे ॥ पोहोल तणी भाबी दिशें, दीठो थंभ सुजात लाल रे ॥सु०॥ ॥ ए ॥ ईम सुणी राजा कौतुकें, ते नर साथें लेय लाल रे ॥ थंभ समीपें आवीउ, निरखें दृष्टि नरेय लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो, आवे पूजण थंभ लाल रे, तेहवे तेह निमित्तिउ, बोल्यो ईम धरी दंभ लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अड शो जे ए थंभने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥ तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाछा खिसे, मनमां बी

हीता अठेह लाल रे ॥ नृप नणे पूजो तुमें, पूज प्र
नृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
नाणी तिहां, पूजी बेगो ध्यान लाल रे॥ ह्रींपद मुख
थी उच्चरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥
थंन उपाडी पुर नणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥
सु० ॥ १५ ॥ मंमपमा आमंबरें, थाप्यो आणी का
र लाल रे ॥ पटकरणी पत्थर शिला, कुमरें करावी
त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ उनी खोसे मंमपें,
धरती मांहे बे हाथ लाल रे ॥ थंन निपुण निज सं
चथी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ बे
कर मुख उंचे रहे, शिला थकी ते थंन लाल रे ॥ बा
ण धनुष तेहथी ठवे, पछिमनें आरंन लाल रे ॥ सु०
॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्खिण उत्तर नाग
लाल रे ॥ गंधर्वे मांम्यो तिहां, गावा मधुरो राग
लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंन धनुष पूजावीने, नृप
पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥२०॥ नाणी नृपनी
नीडमां, देखी अवसर खास लाल रे ॥ जई बेगो गांध
र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥सु०॥२१॥ बेगा नृप

सिंहासनने, देव जिस्था सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥सु०॥२२॥ ढाल थईए बारमी, बीजे खंर्डे उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लालरे ॥सु०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ २ ॥ नृप जणे पहेला इंणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥३॥ वचन सवे तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हे हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुअर सुणी तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे छेहडे, इंम मनमांहे कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहि ते कहे, आव्या बुंशे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापडी, मारी विण अपराध ॥ हवे नृपनें किम वालशे, उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, उंचे स्वर संजलाई ॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसजामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नृप हठाला रे, नरपति गेगाला रे, थाउ उजमाला विकथा गेडीने रे ॥ मंमपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जोडीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंमपनें तलें रे ॥ इंइ धनुषथी नारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वले रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें रे, उठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप गामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चित्रकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतों जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौडाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो हरिउ खिसतो धनुष उपाडतो रे ॥ हूंतो ए रसिउ रे, पण देवें मुशिउ रे, इंम नृपगण हसियो ताली पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं स्वामी बल करतो अडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंकोरे तिम जांखो पडे रे॥ ६ ॥ केता नवी उठे रे, केई वेग पूठें रे, केई शरनी मूठें नेदे थंननें रे ॥ पण थंन न नेद्यो रे, नृप टोलो खेद्यो रे, निज दर्प्प उछेद्यो बल आरंनीनें रे ॥ ७ ॥ मरडक मूछाला रे, लाज्या नूपाला रे, करता ढकचाला निंदे आप आपनें रे ॥ माटी पण मूक्या रे, नुजनुं बल चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चापनें रे ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सवि लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह बल ते तेहवे रे, थंन पासें एहवे रे, आव्यो धसि के हवे वीणा साजशुं रे ॥ ९ ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे,मूक्या रीजावी जण तंती रसें रे॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति त्राडी रे, परणीश हुं लाडी मुज बलने वशें रे ॥१०॥ गांधर्व ए धीठो रे, एहने विधि रुठो रे,नहीं बे इंहा मीठो खावो नीखनो रे ॥ इंम कही नृप हसता रे, महबलशुं सुसता रे, र हेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥११॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे,टंकारव कीधो रे,जाणे मद पीधो नृ

प गण ज्ञोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे,नाखे परपंचें रे,खीलीनें संचें थांनो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ज घडिउं रे,माथे जे जडिउं रे,अलगो जई पडिउं बाणे आह्णयो रे ॥ तेह्मांथी नारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं ड कपूरें रे,कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहडी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठवी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीडी कर मावे रे,जिमणे कर ठावे रे,वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे ॥ दीपे द्युति नारी रे,जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना गकुमारी थंनमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम कांठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे,पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शकें रे,कन्या कहे विगतें रे,जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे,राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां नूंमो रे, एहने वर रूडो रे,आलोचीने ऊंमो चित्त देवी लियें रे ॥ १७ ॥ नृपतिना वारु रे,बल परखण सारू रे,रचियो ए वारु थंनो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर ठाठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूडे रे, मणि सोव

न चूडे रे, उपरी बाजूडे कोमल बाहडी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंन मांहिं उतारी तुं अमने जडी रे ॥ १ए ॥ दुःखडुं मुज नातुं रे, कारज थयुं कातुं रे, पण लागे ए मातुं जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंन उघाडयो रे, नृप गर्व लताडयो रे, गंधर्व दे खाडयो ते नाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवा रें रे, नृपति दुःख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थांनाथी निकसी रे, कुमरी कहे विक सी रे, नाख्यो थंन उकसी ते नर क्यां वसे रे ॥ २१ ॥ देखाडे प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, कनो थंन पासें श्लोक ते गोरवे रे ॥ नृपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाला रे, महबलनें विशाला कंठें जोरवे रे ॥ २२ ॥ महाबल वर वरीउ रे, नाग्यें अति नरीउ रे, रतिपति अवतरीउ रूप समाजशुं रे ॥ बीजे खंडें दाखी रे, ढाल तेरमी नांखीरे, जेजो रस चाखी कांतिकहे ईश्युंरे॥ २३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धडहडया, बोले विषम वचन्न ॥ जूउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ढांकी आदस्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जि सी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

जलपूर परें, प्रगट पराभव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल ऊलाल ॥ ३ ॥ ईम कही ते हुई एकठा, हणवा चरचा रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे ऊठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५॥ क्षण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जेम दंभाग्रे बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ नट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊभो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्भीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल भासण चंद, पद्मावती दे वीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम, संभवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कस्या मीटथी लेश, धीख्या किम नरपति परदेश ॥मो०॥ आ०॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं छे कोय, ईम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो०॥ आ०॥ ३ ॥ ईम सुणी त्यां रीज्यो नृप

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाध्यो जेहने हाथां हेठ, छेल खींचें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हूउ मिल ते नररयण ॥ मो०॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम नाग्यें पायो गजगेल ॥मो०॥आ०॥६॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, नोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ठा य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते नरलोज, पवन परें न लहे किहां थोज॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें नृप,नुंजे नोजन सरस अनूंप ॥मो०॥आ०॥९॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥मो०॥ समराव्या जल छांटयां सेर, शणगारी नगरी चोफेर ॥मो०॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उताख्या सुर आवास ॥मो०॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥११॥ तोरण माला काक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंमे चौदमी ढाल,कांति कहे सुणो वचन रसाल॥मो०॥आ०॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसनरें, प्रगट्या रंग अपार ॥ अनिनव शोनायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन माहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उछांहिं ॥२॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजडाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विधि विधि अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंडुआ, जरतारी जर वाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली साफ ॥५॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम लशुं जानीया, खमकंते केकाण ॥ सोंधे नीना सा मगा, गाहिड नख्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करडो तिहां कोटवाल ॥ ए देशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या नू

षणेजी ॥ सुरतरु मोहन वेली, सरिखां दीसे बिहुं नि र्दूषणेजी ॥ १ ॥ वाजे नूंगल नेरि, ताल कंसाल न फेरी नादगुंजी ॥ शणगाख्या गजराज, आगल चाले अति उनमादगुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोड, श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल क बनाय, तंडुल नालें चोढशा उजलाजी ॥ पखरिया घमसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥ मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥ नट्ट नणे जयमाल, सोहला गाया सरखें गोरीयें जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण नणते वेद, पंचामृतना होम ति हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना छेहडा बांध, चारे फेरे मं गल वरतीयांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा र तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय, पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चस्योजी ॥ ८ ॥ चंद्रिका चंद समान, अविचल होजो तुमची जोड लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडी, करमोचन वेलायें दे नलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार,मान महोत दै सहु राजी कियांजी ॥१०॥ लोक कहे लख कोडि, मलती जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान,रतिपतिना यकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनीश, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे गाम, लगन समय आव्या किण नांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर भणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणीउजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जाणीउजी ॥ १३ ॥ वली माहाबल कहे एम, शीख करो तो चालुं घर भणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, करतां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा करुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ पडवेने दिन सूर, ऊग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥१६॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आकलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गुण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवीठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, पडखोजी बोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करवतियां धर काटण कोरडीजी ॥ संप्रेडी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ढडीजी ॥ १ए ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी वोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इंमहिज करतां ए बनेजी ॥२०॥ इंम कही कठ्यो नूप, बीजे खंर्मे सरस सोहामणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे जणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी लाज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रजसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोडी विन्हे, पूछे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन संशय आफले, कहो सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीशवासणी छे स्वामी ॥ सुखें कहो शंका तजी, एह मुज जामणि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख दोधी मुद्रिका, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ नांखीने दिन अपरनुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो अटारडो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, नृपथी मांमी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो नूप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते ऽव्यें सूतारना ॥ सू०॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ०॥ पि०॥ रंग अनेक लीया वली ॥ लो० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥सं०॥ आव्यो देवी धाम ॥मृ०॥ पि०॥ विवर सहित ते फालिका ॥फा०॥ कीधी घडी अनिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली ठानी तेहमां, ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचें मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत मंजूष ॥ मृ०॥ पि०॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ०॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥मृ०॥पि०॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ते०॥ उनो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि०॥ मुजने निरखी इम कहे ॥इ०॥ ते अति लोजनने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तासुं नांजी

नवि शकुं ॥न०॥ तुं मुज खोली आप ॥ मृ०॥ ७ ॥
पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥में०॥ लीधो तिणे स
वि माल ॥मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥पो०॥
द्रव्यतणी लोनाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु
जने इम कहे ॥इं०॥ मूकी सतनी मूंठ ॥ मृ०॥पि०॥
जातंतो हवे चोर ते ॥चो०॥ के नृप जन करे पूंठ ॥
मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥मू०॥ थरके
तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त
णुं ॥जी०॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि०॥
पद्मशिला ते जवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥
मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ते०॥ घाल्यो
उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर
ते ठवी ॥ते०॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ
तरतां अंगण तलें ॥अं०॥ दीठो वडतरु जांख ॥ मृ०
॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वड ऊपर चढयो ॥ऊ०॥ रहुं
जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि०॥ दीठो वडनी कूखमां
॥कू०॥ नूषण वसननो थाट ॥मृ०॥ १३॥ पि०॥ अपह
रि लीधा देवीयें ॥दे०॥ पहेलो मुज समुदाय ॥मृ०॥
॥पि०॥ ते तिण ठांनां मोपव्यां ॥गो०॥ दीसे ठे ए प्राय
॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते उजखी ॥ उ०॥

निरखुं बेठो गुज्झ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कवट वाटें आ वती ॥ आ० ॥ नजरें पडी तुं मुज्झ ॥ मृ० ॥ १५ ॥ पि० ॥ वडतरुथी हुं ऊतरयो ॥ हुं० ॥ साहामो आ व्यो दोड ॥मृ०॥ पियारि बेहु मल्यां ए माहरी ॥मा०॥ वात कही लज्ज छोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजें खंडें शोजली ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ पि०॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वेष मगधासदन, पुंछुं पग पग त्यांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकडे, धूरतं एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बो ली करती रीग ॥ अहो सुगुण मुज पाछले, वलगो छे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूठें पडयो, लंघावे छे मुज्झ ॥ क्षण क्षण थइ विरुद्ध नडे, गूमड जेम अरु

क्त ॥६॥ निःकारण मुंजनें इंणें, नीडी संकट मांहि ॥ वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥७॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्यारें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इंमतो न जाण्यो रे धूतारो जन एह छे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी माहारी रे इंणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज, मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतस्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं छे राज, नोजन न करुं रे कांइक मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीत पटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न नांखे हो राज, कांइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूठें माहरें ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुंजनें लंघावे राज, जावा न दीये रे क्यांहिं फीटयो बाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचास्युं हो राज, जो हुं डुःखमां राज, जगडो निवेडी रें वेश्याने छोडवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इंम निरधारी रे वेगी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ छानें राज, में कह्युं बिहुंने रे जाउ जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगडो हुं नांजीश राज, वेहेला आंहिं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी नांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, हे हरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजनें ऊगाडी हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे छानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वारू हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शानमें ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे नांखे एहवुं धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, छेहडो छोडे राज, इंम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंन निहाली हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवा रे घाले मांहे

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज. न रहे अलगो रे वांको कर आगडतां ॥ २३ ॥ ते कहे इंहां तो हो राज, कांइक दीसे राज, मगधा हसतीरे नांखे एह छे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज देणाथी रे कीधो माहारे टूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विषधर फंक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें बारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाड माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंडे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे नांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इंम उच्चाट ॥ तुज घर नृपद्वेषी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इंम सुणी ते विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणो छे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मां बापडी, मुजने इंम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहेता किहां, कहुं छुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां छुपाडुं

तुम थकी, न रहे ढानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ बने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेंजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पडयुं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी भली ॥ ए देशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिडा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीना ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गामरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाण्यो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणिकायें अति आदरें,नोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें नरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ नोग नणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में नांख्युं तेहने ईस्युं, मुज वालो छे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारिनो, मनमथ रूपें छेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति किहां नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी तुमें, आव्यां कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं विहुं कृत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, नांखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातडी, वीती थयो परनात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूछयुं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रनातें तांई ॥ ना० ॥ छे तुज पासें के नहीं, आ

नरणादिक कांई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजनें देखाडीयां,आनूषण तेणें काढि ॥ना०॥ हसतां में कह्युं थोडलां,ते कहे इम रस चाढ ॥ ना० ॥ च० ॥ १५॥ हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज धूज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पूछयुं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वडो, कीर्त्ति थंन छे त्यांहि ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें नंमारीयो, ते हमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह छिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस ढो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमी, कांतें नणी इंम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी,कहो केती छे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अडखील ॥ १ ॥ सं

च कह्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूछ ॥ वारंतां पण रातमां, जाशे कनका कुछ ॥ २ ॥ सामग्री भोजन तणी, करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, गई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ छाना थानक थंजनो, जोतां न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई भांख्यो सुविचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी भवन मजार ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आछे लाल ॥ अध मारगें भूली पडी ॥ आफलती पुर सेर, खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटडी ॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, भांखी वात प्रकाश, आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह, आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २॥ वात सुणी ईम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥ प्रीति वचन ते उछप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एहथी होय नुकशान, आ० ॥ इम कहीयें छाना छिप्या ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥ आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कांइ सोर, बेगा छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय तु

ज कर्नें ॥ ४ ॥ राखुं बिराडी क्यांहिं,तव ते आपे त्यां हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, में तेहमांथी टा लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कं चूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिलाय, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ में कह्युं तेहने एम, थरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरें कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय,त्यां लगें ते न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते नणी ॥ पेठी ते निर्जीक, में धारी मन ठीक, आ० ॥ तासुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण बे अति हुंस, कपाडीने मंजूष, आ० ॥ गोला मां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाही नीर विचाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पिउ ततकाल, थूंकें माहारुं लाल, आ० ॥ रूप सहज नुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेस्यां कुंमल खास, रविशशी मंमल जास, आ० ॥ लाधां जे वडने थडें ॥ पहेस्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी गलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मांहि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीजी चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही बी जुं खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, आ० ॥ तेहमां वसी खी ली जडी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ठानें लाग, आ०॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात, कहो आगें अवदात, आ०॥ में न लह्या तिहां संक्र मी ॥ बीजे खंभें एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥ ढाल जणी उगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल मानिनी सुणो, आगें जे हुई वा त ॥ थंन तिस्यो में चीतस्यो, जिम जाण्यो नवि जा त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे ऊगस्या, ते वाह्या जलपूर ॥ एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥ चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस शानें बोलावतां, कीधा आदर इठ ॥३॥ मुज पूछे मंजू शशुं, दीठो एक किहां चोर॥ बीडुं में देई आदरें, कह्युं एम तिण ठोर ॥४॥ थंन एहजो पूर्वनो, पोलें मूको आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥५॥ ॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया उलगुं,उलगाणाजी ॥

जिरमट खाश्यो गाल जल्या ॥ ए देशी ॥

॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नलें

मल्या जाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाड न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जिहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारिखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय डुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥गु०॥ धन दाटी तेह सिंधु तडें ॥ उपाडे मली सामटा ॥ उ० ॥ थंज तिहांथी एक धडें ॥ ४ ॥ ते पूठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाडियो ॥ उ०॥ ते तिहां मूकी निचिंत थयां ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥उ०॥ धन लोजें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूडुं एम कह्युं ॥ लोन वशें तेणें चोरटे ॥उ०॥ तालुं ऊघाडी इव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दीठा में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें ऊने चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

णां ॥ ए ॥ रात्रिसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो भूमि कीती॥ देशुं वड जंजीरमां ॥३०॥ ग्रहिशुं करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ अछे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ३० ॥ लेशे फल रस पाक पछें ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ३० ॥ राख्यो थंभ प्रभात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जण भूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ण थंभ तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो ॥ ३० ॥ बेगो आवी छे भूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल भणें ॥ काढुं चोर ते स वेथा ॥ ३० ॥ शिखर ठव्यो जे भुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें भीड पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥३०॥ ईणे फिकरें मुज चित्त नडयो ॥१५॥ तुं ईहां रहेजे हुं वही ॥गु०॥ आवी शं तेहनो सूल करी ॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥३०॥ साथें आवीश रंग धरी ॥१६॥ तव कुमर विचारी चि त्तमां ॥गु०॥ वेगवतीने एम भणे॥ जो नृप आवे तुर तमां ॥ ३० ॥ तो कहेजो ईम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥७०॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १८ ॥ इंम कही चाल्यो तिहां थकी ॥गु०॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥७०॥ मलया साथें हुई सुमनें ॥१९॥ बीजे खंमें वीशमी ॥गु०॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ ७० ॥ कांति कहे मनने हरसें॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंमें करी,वीरधवल नूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हगाल ॥ १ ॥ तेह कहे परभातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि नपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेडण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउ, वर कन्या भवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ बेगो जोवे वाटडी, नूपति करतो चिंत ॥ रात पडी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परभात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥६॥ जामाता कन्या तणी,किहां न लही नृप सूज॥ दुःखियो नूपति चित्तमां,चिंते एम अमूंज ॥७॥

॥ढाल एकवीशमी॥ धिग धिग धणनी प्रीतडी ॥ए देशी॥

॥ नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह रे ॥ वर कन्या बिहु किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नृपति त्रटकीने कहे रे, कुंण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं रे, थयुं होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ नृ० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नृ० ॥ ३ ॥ अथवा दैवें बेहुनो, संयोग इंम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी रे किम जडपी लीध ॥ नृ० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परगट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी दृष्ट ॥ नृ० ॥ ॥ ५ ॥ नवि दीधुं भोजन भलुं, नहीं दीधुं लीध उदालि ॥ मणि हीणुं भूषण भलुं, पण पडिउं रे जश मणि ते टालि ॥ नृ० ॥ ६ ॥ हण्या दुष्ट किण वैरीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपहर्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नृ० ॥ ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काल

जानी कोर ॥ नू० ॥ ८ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ नू० ॥ ९ ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीड ॥ इंम कहेतो गलहथ करी, नृप बेगो रे पड्यो चिंता नीड ॥ नू०॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ नू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, छल छेतर्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संनवियें रे हरि या किणें देव ॥ नू० ॥ १२ ॥ देशाउर पुर पर्वतें, वनजूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ नू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीगाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ नू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ तेपण खबर करे वली, करतां इंम रे सवि आ वशे धात ॥ नू० ॥ १५ ॥ जलुं जलुं नूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रें नरपति सज थाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नृ० ॥ ॥ १७ ॥ हयगय सुनट रथ साजशुं, ते कुमर निय त प्रयाण ॥ कुशलें मलशो नृपनें, होशे रूडा रे इहां कोडी कल्याण ॥ नृ० ॥ १८ ॥ ढाल एह एकवीश मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें बीजा खंमनी, नणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नृ० ॥ १९॥

॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस छे नवनवा,सुणतां मीठा शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बीजो खंम संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय सुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंम घमंमशुं, पूरण कीध प्रगट्ट ॥ हवे त्रीजो कहेवा नणी, उमग्यो रंग गरट्ट ॥ १ ॥ प्रेमें प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ अति रसशुं श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

वनमां जई, मलयानें पलणंत ॥ फिरवुं निशि सम
शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप
तुज, करुं कही इंम चाल ॥ तिलक कर्युं आंबारसें,
घोली घसी ततकाल ॥४॥ नारी रूपें नर हुउ, थयां
बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी,काढे चोर निरुद्ध
॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें,गया चोर तुज देख ॥
जा कुशलें जिहां रुचि होवे,तिहुनो पंथ उवेख ॥६॥
प्राण लाज धनलाज में,तुम पसायें लद्ध ॥ इंम कही
ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं भुव
नथी ऊतरी, आवे वडतलें आप ॥ तव तिहां गयणे
गेबनो, सुण्यो भूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर फरंतो भू
तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ
थी, लीए उतारी हार ॥ ए ॥ रहे रहे छानी सल
क मां, सांभल देइ कान ॥ वडमां भूत वदे किस्युं,
कुमर करे इंम शान ॥ १० ॥ छानां वड पोलाशमां,
बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांभले, भूत
तणी इंम वात ॥ ११ ॥
॥ ढाल पहेली ॥ सहेर भलो पण सांकडो रे, नगर
भलो पण दूर रे ॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥
॥ वड शिखरें इंम बोलीउ रे, भूताने एक भूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली नली होला
ल ॥ सांनलजो अदनूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ नूत वडो
कहे वातडी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २ ॥ पु
हवी ठाण नरिंदनो रे, माहाबल नामे कुमार रे॥मो०॥
ठे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
पणें लीयो हो लाल, माय करे डुःख नार रे ॥मो०॥
॥ नू० ॥ ४ ॥ इंम पण बांध्यो आकरो रे, वालण
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ६ ॥ ख
बर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केडें गयो कठ रे ॥मो०॥
पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूठ रे
॥ मो० ॥ नू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे,
मलवा डुर्लन वेह रे ॥ मो० ॥ ते डुःख मरवुं आ

गमो हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥
॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के
करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ ए ॥ लोक
बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूठें तास रे ॥ मो० ॥
खबर लेईनें आवीयो हो लाल,हुं तिहांथी तुम पास
रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १० ॥ नृपनंदन वट कोटरें
रे, सांभले बेगो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयडुं ङुः
खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
॥ नृ० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ
न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कहे हो
लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १२ ॥
नृत कहे जश्यें तिहां रे, वहेलां गंमि प्रमाद रे
॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर
सवाद रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १३ ॥ इंम कही सम
कालें कह्यो रें, नृतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
शें वड ऊपडयो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥
॥ मो० ॥ नृ० ॥ १४ ॥ वेगें वड नभें चालतो रें,
आव्यो पुहवीगण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
जई हो लाल, तुरत कह्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ नृ०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोळा तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ नूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रें ॥ मो० ॥ नू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन नूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमरें निहाळी उंळखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १७ ॥ कुमर नणे मलया नणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड ऊपडी हो लाल, आव्यो पुहवीगण रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वळी ऊडशे हो लाल, तो कर स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसस्यां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन छे ढूकडूं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ॥ २० ॥ ऊपडतो गयणांगणें रे, देखे वड वळी तेम रें ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे ईहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए हमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां विषमी जोलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें नरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हु वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ ईम कही नर रूपें त्रिया, तिहां रवि चल्यो नरेश ॥२॥ निरखत पियु नी वाटडी, शूने रंनाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाधी डुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां क मल विबोध ॥ बंधनयरथी बद्ध जिम, छूटा अलिकुल योध ॥४॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥ आलें किरणनालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषनान सुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें ॥ १ ॥ चाही ईम चाली चुंपें, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें डुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धम क्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लोचन थापे ॥३॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंभलने डुकूलनी फाली, ढंजरव्यां म हबलनां नाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां, आभूषण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे भूषणें करी भांतीलो ॥ मुज सुतनां पहिस्यां दीसे, आभूषण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर कहे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूछो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नृपति कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहे विमासे, साचुं इहां जूठुं भासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीडा पाखें, भावी मटशे नहीं लाखें ॥ ९ ॥ इंम धारीने मलया बोले, महबल मुज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने तेणे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे, सा कहे इंहांहिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जो इहां छावे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ भूछीसवि वात प्रकाशी, चोकस न पडी विण रासी ॥ महबल थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीने ॥ बो

ल्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥१३॥ अणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां ॥ लोभसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर गोरें ॥ ॥ १४ ॥ चोर्यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इंणे पुरमां कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउ इणें मलीनें, मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोभसार कन्हें जई हणजो, इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥१७॥ मलया मनमां इं म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥१८॥ चिंतवती पूर्व सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सचिव विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आचरणा दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी ॥ २० ॥ इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥ इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछें ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

मीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुडविद अविलंबें, मूके तव शैल अलंबें ॥ दुध्दर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंमल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांभलजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोड ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोड ॥ १ ॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन ले आज ॥ नेट अनिष्ट इंहां किस्युं, दीसे ले नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन दुर्जन हूउ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबाथी पडी, करशुं ते दुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इंम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरी, करो आप हित जाणी ॥ इंम सुणी नरपति तेहने, पभणे अवसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ झुंबखडानी देशी ॥

मुज वचनें इंम भांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरडी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्याथी जाणशुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उंट कम्मण किण बेसशे रे, तेल जूउं तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे गनो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी जणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीवतो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुई रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ महुलणी आगम पुरुषथी रे, नांखे तस घटमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

हुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लन आवि
यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो वन खेल ॥ स० ॥ कुंभ
ल वसन लीयां तिकें रे, ते आव्यां इणि वेल ॥ स०
॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
ध ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर साथें
सुध ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
रे, वींटयो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध
र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
तिनें कहे गारुडी रे, देव अलंबा हेठ ॥ स० ॥ वि
वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेठ ॥ स०
॥ १४ ॥ फूंकारें तरु बालतो रे, कालो काजल वान
॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंनमां रे, घाल्यो आणी निदा
न ॥ स० ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावें
नर कुंन ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुनटें
करी संरंन ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनुं रे,
कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी
रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स०॥ १७॥ चंद्र अंगारा
जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥
दोष नहिं नृपति नणे रे, गुणही एम लहंत ॥स०॥
॥१ए॥ समसूधो वानी ग्रहे रे, वाधे सुजश अताग॥स०॥
जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण जाग ॥ स०
॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव
कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, कघाडे घट
बार ॥ स० ॥ २१ ॥ निर्नय करकमलें ग्रह्यो रे, वि
षधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज
नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥ २२ ॥ नाग
हूठ निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥स०॥
नेह निविड रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥स०॥ २३॥
साचो साचो इंम कहे रे, पाडे नर करताल ॥ स० ॥
त्रीजे खंमें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें सुखपी हार ॥ ते
मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर
खी विस्मित हुठ, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि
वाणी इंम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी
पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल
वरसात ज्युं, करे अचंन अनंत ॥ ३ ॥ नाल तिल

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु णी हुई, तव ते मूल स्वनाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि मंमली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोतां जण अद्वैत र स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, नणे एहवी वाचा लो ॥अहो न०॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥अ०॥देखी० ॥१॥ पुरजण देवी वारता,अनरथ उगाड्यो लो॥अ०॥ जरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥अ०॥दे० ॥ २ ॥ नहिं सामान्य जुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो ॥अ०॥ निरखत रचना एहनी, रही मनडे खूंपी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणां, ढा की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी, आव्यां कोई छानां लो ॥अ०॥दे०॥४॥ परमारथ लहे तो नथी, आराधी बेहुनें लो ॥ अ० ॥ जगतें सूधां रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ ईम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥ अ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही ईम मुख जोवे

जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रभु, कीधो ते खमजो जो ॥ अ० ॥ नकें वश होय देवता, इम जाणी समजो जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो जो ॥अ०॥ नृप पयपात्र धर्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आदेशें जो ॥ अ० ॥ गारुडीयें पाछो ग्रही, मूक्यो गिरि देशें जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें, जोतां जण पासें जो ॥अ०॥ नरथी नारी किम हूई, एह कौतुक नासे जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी जो ॥ अ० ॥ रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी जो ॥अ० ॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उलट्युं जो ॥ अ० ॥ नाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं पण उलट्युं जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विषहर चाटतां, कहो किम बदलाणुं जो ॥ अ० ॥ हार लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं जो ॥अ०॥ ॥दे०॥१३॥ कारण ए मुज पीलनां, विण कारण सीधां जो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पडती नथी,

श्यो उत्तर आपुं जो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया बाली जो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली जो ॥अ०॥दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी,जीवितथी प्यारी जो ॥अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें जो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई जो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुठें धाई जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें जो ॥ अ० ॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें जो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते जो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंमनी, ढाल नांखी कांतें जो ॥अ०॥दे०॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण नामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउं, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख डुःख अंगें साहसी, पूरखो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचण सु

णी राणी हूई, दुःख नारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इंम वि नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइं निचिंत, कान ढालीनें हे इं णिपरें ॥ सुत नायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति खट कंत, सुतनो हे हीयडा नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया मुजथी हे रह्युं न जाय, लंबा दीहा किम नीगमुं ॥ सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई ऊूंनी नमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बाल्युं हे नवलख हार, पु त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु०॥ ३ ॥ पीया ढोल्युं हे सरस पीयूष, क्षार उदकने कारणें ॥सु०॥ पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बारणे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित दोनागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे फंपावीश जेम, निवृत्त होइ जीवित नणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री या लेहेशूं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आपणुं ॥

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इंम आसास, पुत्र विछो
ही हे गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
स, मन वींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
होता हे निज निज थान,लोक नखां अचरिज चिंते
॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया बोल्यो हे तपतां दीस,रा
ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
जगदीश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया
आया हे जन परभात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पडवा हे पाली
हांम, नृप राणी ऊंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे
नरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥
॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वड
फालियें ॥ सुत पायो वडें ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु
ली जेम, महबल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये)
सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ
धो मुख जिण वडे ॥ सु० ॥ प्रीया नीडर्यो हे फाल
मफार, तुम नंदन तिहां तडफडे ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीठुं तेहवुं नांखीयुं ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इंम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वड सनमुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वडतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशो हे सुत संभाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें नूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोन सार टांग्यो वडे, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज डुर्दशा, गयो सुद्धि हुं नूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रजुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुनवी, दोहिलिम डुःख समाज ॥३॥ इंम कही तेड्यो वर्द्धकी, छेदावी वड माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीडित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेगो हूउ, बोलाव्यो तव माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ छी ॥ मारगडामां जोवुंजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जांखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अभिलाषेंजी ॥नं०॥ किहां विचस्यो श्रम पाखें जी ॥ नं० ॥ बांध्यो किण वडसाखेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख दुःख तें किहां किहां लाधुं, करते हार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० ॥ बां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण उघाडीजी ॥ नं० ॥ बेठी आगल माडीजी ॥ नं० ॥ पूठें मलया लाडीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ नि० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥नं०॥ गोंख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं बेगो तस वासें जी ॥ नं० ॥ उच्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ ईम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥नं०॥ तुम वहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ आ गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥नं०॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साह्मो आवी, आवोजी वडभाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार भरीनेंजी ॥नं०॥ न शक्यो बोली फरीनेंजी ॥नं०॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥नं०॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर तो कोडी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे छे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां छे वडतरु भारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥क०॥८॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र ख डग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ उजें रही जव भाल्यो जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरलें स्वर रोती, दीठी तिहां एकनारि ॥व०॥९॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

जी ॥ नं० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा हमुं शुं जोवेजी ॥ नं० ॥ घन जीषम वननें शमशानें, वेठी तुं किण काम ॥मैं०॥१०॥ तव ते वदन उघाडी जी ॥ नं० ॥ जोती अवली आडीजी ॥ नं० ॥ मूकी लाज कमाडीजी ॥ नं० ॥ बोली इंम पट काडीजी ॥ नं० ॥ शुं डुःख जाखुं हुं तुज आगें, जाग्य रहितमां लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे वड डालेंजी ॥नं०॥ शैल अलंब विचालेंजी ॥ नं० ॥ रहेतो कंदर नालेंजी ॥ नं० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥नं०॥ चोर पुरातन पाप दशाथी, ए आव्यो नृप हाथ ॥बां०॥१२॥ लोन सार इंणे नामेंजी ॥नं०॥ वीतक त्रीजे यामेंजी ॥नं०॥ संध्यायें विण मामेंजी ॥ नं० ॥ बांधी हणीउ ठामेंजी ॥ नं० ॥ मुज प्रीतम ठे हुं धण एहनी, रोवुं बुं डुःख तेण ॥ लो०॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥नं०॥ चिंता चित्तमां चटकेजी ॥नं०॥ विरह अगनि जिम जट केजी ॥ नं० ॥ प्राण कंठमां अटकेजी ॥ नं०॥ आज प्रजातें कर मेलावो, हुउ हतो एह साथ ॥ ने० ॥ ॥१४॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ नं० ॥ गयो नेहनो तरश्योजी ॥नं०॥ मुज संगें नवि विलस्योजी ॥नं०॥ हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ नं० ॥ चंदन लिंपी

आलिंगन द्युं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क०॥ १५॥
में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेल्यो में ए योग ॥ में०॥१६॥
धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुझ गूं
दीजी ॥ नं० ॥ लेपे शबनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिं
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोडि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ मरती
पाछी नागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं०
॥ ताणे त्रूटी रह्यो शबमुखमां, नाक तणा अग्रनाग
॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
वी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
से तुं इणे वडं मुज ज्यौं, बंधाइश निशि काल ॥जो०
॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं नडक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
महा जर खडक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तडक्यो
जी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धडक्योजी ॥ नं० ॥ दै
व प्रयोगें शब इम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥व०॥२०॥

नकटो फरतो तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥नं०॥ किए न गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते आ गें, नांख्युं सघलुं साच ॥ न० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥ सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रूजा सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं द्रव्य गुफामां, देखा डीश तुम आय ॥ मु० ॥ २२ ॥ इंम कही ते घर चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वड फालीजी ॥ नं० ॥ बोडयो चोर संभालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो ना लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिए साखें, बांध्यो तिमहीज दोर ॥ इं० ॥ २३ ॥ में जाएयो ततकाला जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ बोडी मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड फाला जी ॥ नं० ॥ बंधन बोडी केश ग्रहीनें, ऊतरियो व ली हेठ ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं० ॥ अद्भुत शब परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनें दीधुं जी ॥ नं० ॥ इंम पर कारज कीधुंजी ॥ नं०॥ त्रीजे खंमें ढाल ए बठी, कांतें कही रस रेल ॥खं०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चम्या, नृपादिक जन नूर ॥ अद्भुत नय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंमल गाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंम दीवा चिहुं, राख्यो साधक पास ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत नल उललें, पडे न पावक कुंम ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंम ॥ ४ ॥ तेहवे शब गय णांगणें, उडयो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज जई, वडशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कां एक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज बलें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुजग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी मरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, एहवो एक इंण गाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो देख

शे रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे
शे नोजव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्रा
ण पियाणुं माहरे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥
तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं०॥३॥
जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥
नं० ॥ इंम धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रह्युं में तेथ ॥
नं० ॥ ४ ॥ ताममूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिल
क मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रजावें हुं थयो रे, पन्नग
विष आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे,
आप गयो कोइ काम ॥नं०॥ पवन जखी सुखमां रहुं
रे, ठानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां
गारुडी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
श करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष नु
वनमां मूकीयो रे, कुंन करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम
आदेशें जे नरें रे, काढयो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८
॥ तेहने तुरतज उंजखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं०
॥ कंठें धस्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं०॥
॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥
॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष
माग ॥ नं० ॥ १०, ॥ नूप कहे ते किम हूउ रे, जो

तां नारी सांग ॥ नं० ॥ मह्बल नांखे तातनें रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, भुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, धीज समय इंणे बाल ॥ नं० ॥ नाल तिलक चाटचुं चढी रे, में एह्नुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नूप प्रमुख सहु रोजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नूप कहे में आचर्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० ॥ लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सर जित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥नं०॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें डुःख संग ॥ नं० ॥ १६ ॥ अथवा तें जाएयुं कर्युं रे, वात न खाती पाड ॥ नं०॥ विण अवसर जे नांखियें रे, न चढे तेह सिराड ॥ नं०॥ १७ ॥ डुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥नं०॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहिं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कर्युं हशे रे, पाम्यां डुःखनो पार ॥ नं० ॥ अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इंम कहेती नूपनी प्रिया

रे, जे जीवितनी आथ ॥ नं० ॥ आनूषण मणि ते हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खं मे सातमी रे,ए थई अनुपम ढाल ॥नं०॥ कांति कहे सुणतां सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे,रहेतां शैल अलंब ॥ कारण शुं शुं अनुजव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पवन जखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउ दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्युं जाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप हग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुंम तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें वडथकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ बेगो जपवा तेह तव, हुं पण बेगो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहां सुझानी साहेब मेरा बे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी,आहूति द्ये अवसान॥ तिम तिम शब ऊपडी पडे,तडफडतुं रोष निदान ॥ हगेली योगिणी आई बे, अरिहां रीस जराई बे ॥१॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां डमरू डाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाडंता पोढी हाक ॥ ह० ॥ २ ॥ अन्नरथकी उदूनट उतरती, शक्ति कहे रें धीर ॥ मृतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेडी कां नूपीर ॥ ह० ॥ ३ ॥ इंम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंम ॥ नागपाशने बंधने मुज, बे कर बांध्या प्रचंम ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इंम कहेती नन मारगें, विहुं पग ग्रही ऊडी आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ बे शाखा विच हुं पग नीडी, उंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी मुजनें ए वडें, ठडी गई लेती कुलेठ ॥ ह० ॥ ६ ॥ शब ते तिमहिज उडी तिहांथी, वलगुं गुंमाले आय ॥ पुरलोकें जोशुं वली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे ठे बाधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पण होशे कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥ लोक कहे इंमं कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ह० ॥ ए ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इंम खेद ॥ नूप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम उमेद ॥ ह० ॥ १० ॥ नूप कहे केम करशी बूटघा, बांध्या वि

षधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंछडुं, मुज मुखमां आ
व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११॥ क्रोध जरी चाव्युं में तेहथी,
पीडयो पन्नग जोर ॥ नमें थई हेठो पड्यो, न चढ्युं विष
मंत्रथी घोर ॥ ह०॥ १२॥ दोय पहोर रयणीना काढ्या,
दुःखमां में विललात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति
मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० ॥ १४ ॥ लोक प्रशंसे शिर
धुणंतां, अहो हो अतुल बल वीर ॥ थोडा काल मांहें
घणी, जल सांसयो पीड शरीर ॥ह०॥ १५॥ नावे वचन
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट
जलराशिनो, तारु एक तुंहिज तात ॥ह०॥ १६॥ अ
हो साहस निर्भय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ह०
॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अ
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इंम वर्णन गुणमति
नेग ॥ ह०॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंफल ते, देखाडो
छे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीउ, देखाडे जईने
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उत्कर्षें, नि
रखे पावक कुंभ ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलहलतो दंम ॥ ह० ॥ २० ॥ बेयां पण निशिमां हें वाधे,शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीने, नंमार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग नस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, नांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी,लहियें मनवंबित नोग॥ह०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी गण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रका शी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ नगिनीपति नगिनी बिहुं,मेलवियां नृपतेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेगं गण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरि त्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज ॥ नंवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र नरिज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ नूख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मज्जण नोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहेंनी नेहनो, रहे तिहां स्वबंद.॥ ६ ॥ केताईक दि

न त्यां रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव वा, करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥

॥ढाल नवमी॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउ ॥ए देशी॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, संप्रेडण मन न वहंत ॥ गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व धामणी, पउ धारो पुरि मंतिवंत ॥ गु०॥ १ ॥ प्रीति लता सिंची रसें, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई तुम आवतां, पोता वट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥ वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम ॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान ॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पू ठण काज ॥ देखी दंपती ऊठियां, बोलावे वचनें स लाज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं दुःख आकरुं,ते करज्यो मां ई वात विलीन ॥गु०॥ ६ ॥ मल य नणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी नवशो माय तातनें, मुंज आगमनादि प्रकार ॥ गु०॥ ॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता छे

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ८ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ उपपुर लगें आडंबरें, महीपति पोहोंचावा जाय ॥गु०॥९॥ केटले दिन चंद्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेग बि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे छे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पडदे रहुं, पूछो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४॥ इंम कहेती सुवर्णांतरें, बेगी जई सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणिपत्त ॥गु०॥ १५॥ आदर ये पूछ्या थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंडनी, कांतें कही ढाल पवित्त ॥ गु०॥ १६॥

॥ दोहा ॥

॥ पभणे सा चंद्रावती, नगरीप्रति उद्दाम ॥ वीरध

वल तस हुं प्रिया,कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुझने, तरुणो एक ठयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी भय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुत्तावलीनें कंचुकी,आप हथ्थु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीउ यंत्र नटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
उलखे, जो उना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किश्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निक्कारण वैरी इस्या, गया
करी करतूत ॥९॥ कुमर कहे हो धूरतें,कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ बेडले भार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी,प्रात समय इहां आवी॥

यक्ष धनंजय भवन समीपें, गोख़ा कंठें गावी ॥ १ ॥ साची वात कहुं छुं राज,जे वीती छे अममां ॥ तिलभ र जूठ कहुं नहिं मोहन, भलताना संगममां ॥ सा ची० ॥ ए आंकणी ॥ लोभसार चोरें जलमांथी, काढी नार गरिष्ठी ॥ तासुं भांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज छाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे खाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें भीजी मुज भीजी, तस संगें मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इंणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा प दिशाथी भूपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शि खर रही में जोतां, मोहन विडंबन सांध्यो ॥ सा०॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रडती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, इंम सुणी महाबल कहे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चा ल्यो त्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संभाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नर पति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

पुज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥सा०॥ए॥ चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती ॥ कूपथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती ॥ ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूछी, रही वदन निरखंती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाडे, मन मां इंम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनोहर महारो, लीधो तो जिण धूर्ते ॥ ए पापणीने आणी दीधो, दीसे तेण कुपूर्ते ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु नहीं के लीधो इहुंणे, खेडी नवलो फंदो ॥ हवणां तो एहिज मुज वैरी, कीधो इंम दिल मंदो ॥ सा० ॥१३॥ कहे मलया माता छो रूडां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुशल न दीसे नाक नणी कां, के किणे कर्में संताव्यां ॥ ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर नणे पदमिणी मत पूछो, कहेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज छे बहुलां, कहेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ मुख मीठी हियडामां धीठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिवसें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवासिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥सा०॥ ॥ १७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी निश

दीस ॥ सुख नोगवतां मलया एहवे, धरे गर्न सुजगीश ॥ सा० ॥१८॥ ऊपजतां मोहोला पीउ हेजें, पूरे नव नव नातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउ तव, दीपें राणी गातें ॥ सा० ॥ १९ ॥ त्रीजे खंमें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ नांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर महबल प्रत्यें,दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट नट साजसुं, करो चढाई वेश ॥ १ ॥ नामें क्रूर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देश मां, ते निर्छाटो दूर ॥ २ ॥ सजा समक्षें दक्ष ते,तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण नणी, गयो नुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पिउ साथ ॥ दूर रहीने किम चढुं,विषमविरहनें हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लाजचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरां यतन्न ॥ ते आपी पनणे वली,महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह नरेय ॥ गएया दिवसमां ते नणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ तात वचन जो

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीठ अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, नाखे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली एम उदास ॥९॥ लेइ अनुमति कण मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो, चल्यो जवनथी वेग॥१०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवेलि ॥ अहनिशि जोवे रे छल मलयां तणुं ॥ अनुयायी बेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी जवनें रही रे धीठी, मुज जाग्यें ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती ईम छल केलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे जरते लोयणां ॥ बेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे डुःख धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवीरे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाशुं रसमाणि ॥ नवनव जातें रे करती खेलणां ॥४॥ कहे मलया माता इहां रे जोली, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो

लणां ॥ पयमां साकर भेलवी रे धीगी, चिंतवती म न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥५॥ दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा त ॥ तव इंम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूठें एक राक्सी रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव नांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें आदिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज नावे रें मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी थई रे गोरी, टालुं एहनुं गम ॥ जिम तुज नावे० ॥ मलया मन नोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥ तव इंम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत नलावती रें गोरी, जे शीखववुं तुज ॥ तव० ॥ मया करी मुज ऊपरें रें नोली, करो उचित जे गुज ॥ जिम मुज नावे रें मनमां चोलणां ॥ ए ॥ नगरीमां तेहवे समे रे धीगी, देखी मरगी ईति॥नव०॥ नूप कन्हे कनका गई रे धीगी, तेहने देइ प्रतीति ॥ रहस्य लहीनें रें कहे इंम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥ तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी,'जो द्ये जीवित दान

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हजो कहे राजीयो रे जोली, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे जोली, देखाडे जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राक्षसी रे सामी, तुम वहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाडुं तंत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षसी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे हसे रे सामी, रमे जमे वलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥नव०॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी ऊछले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशे कांई अ निष्ट ॥ नव०॥ १६ ॥ प्रातसमय सुजटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुऊ नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण नृपनें हतो रे सामी, पूरवो कष्ट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुण्युं रे सामी, कारण ए असराल ॥नव०॥ तेहथी मन मेलुं थयुं रे सामी, चित्त चक्यो नृपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोलणा ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रें

सामी, थाशो हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विषहर मंक ॥ नृप० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशो रे जोली, बाहिर न जां खे वात ॥ तव ईम बोली रे करती चालणां ॥ एब ऊघाडुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नूपें तिका रे धीरी, पोहोती जुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव नांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूंड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारे अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे उमाडी वदनमां, बलबलती बे पीर ॥ ४ ॥ रुंमभाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवें

छाने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप गृ
हें चढयो, निरखे डुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी जुंबे जुंबे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप छाने रही
होलाल ॥ होजी दीसे छे ते साच, जे मुजनें कनका
यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुलने डुर्यश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं
जण खेम, मुजने पण विरुउं किश्युं होलाल ॥ २ ॥
होजी करवी न पडे कचाट, पहेली जो समजावीयें
होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवणां
हणावीयें होलाल ॥३॥ होजी इंम कहेतो नरनाथ,
कोपानलशुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेडी सेवक
साथ, गुप्त पणें जणे जांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला
ल ॥ होजी रथ चाढी वन छेह, गुपत पणे हणजो
परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, लोक
न जाणे वातडी होलाल ॥ होजी इंम सुणी सुजट उ
द्दाम, उपघा जीडी गातडी होलाल ॥६॥ होजी कर

लीधें करवाल, आवत सुनट निहालीनें होलाल ॥
होजी जिहां ठे मलया बाल, कनका त्यां गई चाली
नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल
फलती बोले इश्युं होलाल ॥ होजी नृप नट हणवा
मुज, आवे ठे करवुं किश्युं होलाल ॥७॥ होजी तुज
पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल ॥ होजी
तेमाटे महाराज, मुज ऊपर रूग सही होलाल ॥ए॥
होजी क्यांहिक मुजने ढिपाड, जणनी मीट न ज्यां प
डे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे
कोइनो अमे होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
बेसे मांहे एकेंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
तालुं दीध, अनय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी
आव्या सुनट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल
॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वनाव
नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग
फटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी डु
ष्ट, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो
कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥१४॥ होजी
इम कहीनें ग्रही बांहिं, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इछ, देखी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अनिठ, इण सूलें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी हणवुं के वनवास, सुसरे निश्चय आदिस्यो होलाल ॥ होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो किस्यो होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हुआं फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माग मर्म, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल॥ होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाख्या विनां होलाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, जणती नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी वन संचार, आघुं पाछुं भालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी गानी ऊनड पाहाड, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी प्रहसमे भीम निराड, आव्या जण नगरें फरी होलाल ॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति मढीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल ॥ होजी दीठी

नहि किण गार, नृप नणे नारी खरी होलाल ॥ २३॥ होजी त्रीजे खंडें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जींती तेह किरात ॥ ता त चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक च रित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कु मर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंग मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी काई कीधुं हो डुःख दीधुं मलया बाल नें, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां का न विचास्यो हो नवि धास्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नृ० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ नाला ज्युं चि त्त खटके हो अति नटके अग्निसमा थइ, काम क स्यां विण मर्म ॥ नृ० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो बल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

रावो किहां दीसे हो पूछीशें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ नृ० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां कहो हवे कीजें केम ॥ नृ० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इंम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नृ० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लंछन चाढीउं, गोत्र उ मूल्युं एण ॥ उलंजा इंम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीडयो विरहेण ॥ नृ० ॥ ६ ॥ वल्लन सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, उघाडे घर ताल ॥ इंम कहे सुत में दीठी हो तुज ईठी दयिता राक्षसी, रूपें करती चाल ॥ नृ०॥ ७ ॥ दोष नहिं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंम ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, बांहडली करी खंम ॥ नृ० ॥ ८ ॥ कुमलाणा कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संनालो घर सार ॥ अधमथकी जणहासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, उंग न सहे नार ॥ नृ० ॥ ए ॥ कुमर वि

मासें नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीडे जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांइ अधीर ॥ इंम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषडी, उघाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंज ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंज ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आफी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भ्रंछी हो जणह थीकारें दूहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥ १४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनेहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवानें अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, है है मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नडीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

फूकि फूकि जोजां खाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ त्रीजे खं में फावी हो रस नावी वग आवी नली, ताती तेर मी ढाल ॥ कांति कहे सांनलजो हो चित्त कलजो कविता चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ नू० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंणे अवसर अष्टांगवी,पुस्तक हस्त धरेय ॥ आव्यो एक निमित्तिउ, महबल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व चन मुख उच्चरे, नुज करी आघो सोय ॥ सचिवादि क तेहनें नमी, द्ये सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि देंशें आसने, बेगो नूपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखुं, खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ नक्ति युक्तिशुं मंत्रवी, पू ठे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूउ एक अम जोश ॥ ४ ॥ अकलंकित इंण इंणी परें, कुमर वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम ऊतरी, जिम ढा लें परनाल ॥ ५ ॥ ता दुःखें महीपति हूउ, मरणो न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहर्यां, न सहे प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह नणी कहो अम तणे, ना ग्यें नाग्य विशाल ॥ मलया मलशे जीवती, पनणो तेहनी नाल ॥७॥ जोषीनें साहमे मुखें, बेसी विनय प्रकाश ॥ नूपति बोल्योततक्षणें,चारुवचन विलास॥८॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयडा रे नगर सीरोहीयो राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयडा रे लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा, कहेने गुणवंती मलश क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥ क्षण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे दुःखडे व्याकुली हो सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धार रे हो सु० ॥ जगमां जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥ चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० ॥ मलशे मलया नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु०॥ मीठडी जीवाडण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥ अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई न करे कमी हो सु० ॥४॥जो०॥ पूछे कुमर उदंत रे हो सु० ॥ कहोनें जीवंती किहां छे गोरडी हो सु०॥ ॥ जो०॥ जोषी तव पभणंत रेहो सु०॥ सांभल सलूणा जे कहुं वातडी हो सु० ॥५॥जो०॥ जाणी न जाये क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

सु० ॥जो०॥ सुखिणी डुःखिणीप्रायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप ति तेडचा तेह रेहो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुनटें मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय बीडो सस नेह रेहो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रेहो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा नय नीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवां चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन नास्युं एहनें राक्षसी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपतिमन निर्विन्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूडा लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खांतिगिरितटें ठेव रेहो सु० ॥ पडती आखडती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो०॥ एकलडी स्वयमेव रेहो सु० ॥ मरशे रडवडती रखडती आफली हो सु० ॥११॥ जो०॥ ईम मन धारी बाल रे हो सु०॥ रोती वनमांहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

नांख्युं आल रेहो सु० ॥ नयथी तुम आगें कही अ वती वती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नारी मुजथी जे ह रेहो सु० ॥ सुहडे ते करुणा रूडें संग्रही हो सु०॥ ॥जो०॥ विणरी मुज मति भेद रे हो सु० ॥ त्रारी ते पैरी नड हीयडे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृप निंदे इंम आप रेहो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रेहो सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४॥ ॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रेहो सु० ॥ मलियुं ते साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमें ढाल रेहो सु० ॥ सुपरें ए नांखी रूडी चौदमी होसु० ॥ जो० ॥ कांति वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागे सरस सुधा समी होसु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा, जनक नणी अवदात ॥ क हेवा चर चंड्रावती, पूरियें प्रेषो तात ॥१॥ वीरधवल पण आगमी, करशो पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

नूपें पुरुष, मूक्या चिहुंदिशि नूर ॥ निरखण लागा तेह पण, देश देशांतर दूर ॥३॥ समजावी निज तनु जनें, नूप जमाडे जाम ॥ कंठें उतरतां कवल,पगपग ल्ये विश्राम॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा, धरापालने पास ॥ आव्या नर कर जोडीनें,पभणे एम प्रकाश ५ ॥ढाल पंदरमी॥ मदनेसर मुख बोल्यो त्रटकी ॥ए देशी॥

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या स वि वामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलया किहां ॥ देश नगर गढ डुंगर मोह्या, जलथल वट अ वरोह्या हे॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पुर पाटण संबाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥स०॥ फरिया उद्भट अटवी घाटें, मलया जोवा माटे हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी इंम चिंता जुत्तो, चिंते मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्वे महापातक मुज विकस्यां, सुचरित संचय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३ ॥ निर्गमशुं किम दिन अतिलंबा, जोल्यो दुःखनी ढुंबा हे ॥ स० ॥ हूउ वियोग प्रियाशुं माहरे,वात न दीसे आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हैहै शून्य महावन माहें, दउ खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे हईडुं आफा ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वनग

ह्वीर फिरती आथडती, किण कर चढशे रडती हे ॥
॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे नि
ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें जय जंगुर म
हिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली
वनहरणी सरखी, मरशे जूखी तरसी हे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयडे में वारी
हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वद
न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ७ ॥ गोरी तणो विरहो उ
च्चाटें, करवत थईनें काटे हे ॥स०॥ मुज हीअडुं पब
रथी कातुं, इंणी वेला नवि फाटुं हे ॥स०॥ए॥ सुकु
लिणी तुं चतुर चकोरी, द्ये दरिसण गुण गोरी हे ॥स०॥
देई विगोहो अलवें जोरी, न करो प्रीत वगोरी हे॥स०॥
॥ १० ॥ संजारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
मोहो हे ॥स०॥ अणीआलां जालां ज्यौं खटके, हि
यडे विरहो जटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पिता स
मजावे लेखें, सुतने वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें
हे ॥स०॥ १२॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुंमर
निरखण नारी हे॥स०॥ग्रही खडग गंनो जली जांतें,
निकस्यो माजिम रातें हे ॥स०॥१३॥ हूउ प्रजात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥स०॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इंम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥१४॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो कि म वहेशे हे ॥ स० ॥ नूमि शयन करशे किम बालो, नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि त सुत मुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इंम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नूख गई सुख निद्रा था की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥१७॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे॥स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इंम नां खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंद रीचरित्रे पंमित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुंलसमागमनामा तृतीयः खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनजता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो बेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥३॥ त्रीजो खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ उह्लाहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल वा लही, मूकी निशि वन गोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती मरती हिये, ऊरती आंसू नयण ॥ आरडती पडती कहे, विरहालां इंम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां
मोरी पाणीडां गईती तलाव हे, हे मारुडे
मेहेवासी मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो मुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अम्मां० ॥ रवीनें कूडुं कांइ कलंक हे, हे गानेशुं अपमानें काढी बाहिरें हे ॥ १ ॥ अ०॥ अटवी ए विषमी दंभाकार हे, हे हियडलुं थरकावे नयणें देखतां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे, हे शूरानें जडकावे विरुआ पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुहरी गूजे गोहा उंली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे दोटशुं हे ॥ अ० ॥ हलके गेवरिया टोला टोलि हे, हे खेलंता आफलता नाखर कोटशुं हे ॥३॥अ०॥ सकलके सूअरनां मातां यूथ हे,हे तांतां हवें उजातां थाता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वढता उबलता मांहे युद्ध हे, हे रोषाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके सींगाला जरता फाल हे,हे शंबरिया अंबरिया लगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखडे कूकंता पोढा श्याल हे, हे रोमालां हवालां रींछ फरे घणां हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खडता दडबडता दोडे रोफ हे, हे हींफे ते विण ठींफे पीडे मारका हे ॥अ०॥ दीपड करता जह्नुनी सोज्झ हे,हे टींबरीया गुंबरीया मारकपारका हे ॥६॥ अ० ॥ वलगे घुररंताके स्याह्घोष हे, हे पेंफामें मद बेंफा गेंफा आथडे हे ॥अ०॥ चमके चीत्तलकलिया रोष हे, हे जाडा वन पाडा आडा आरडे हे

॥७॥अ०॥ जलले हुंकलती नाहरकोडि हे, हे लुंकडि यां वांकडियां दडवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उथडता चलचलता मृ तलपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु ख फाडी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशक बिलाड हे, हे विंजू ता अति खीजू मदमाता फुके हे ॥ ए ॥ अ०॥ खमके खोनालो खांतें नील हे, हे हूके बल नवि चूके मांकड वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अडखील हे, हे फुंकीनें परजाले जालां झींगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ डके चमरी वांसांजाल हे,हे वेफु ने वली सावज फूफे रोषमां हे ॥ अ० ॥ खडके नडके विहगा माल हे, हे खच्चरिया बल नरिया दोडे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ०॥ अरडे उन्नाला आरण नंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर न घणा जमे हे ॥ अ० ॥ रडवडे रोहि बोहिड बूट हे, हे गोकरुणा कंदलिया मिलि बेसें खूडे हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांमी घोर हे, हे नड हडतां ह डहडतां नूत घणां नमे हे ॥अ०॥ चरडा चोरा करता जोर हे, हे धाडानें लेई आवे आडा मागमें हे ॥ १३॥ ॥ अ० ॥ एहवा नीषण वनमां मुझ हे, हे निर्दय नृप

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
ल दुःख गुज्झ हे, हे विण अपराधें नृप धीग थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरडुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडियां
दुःखथी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानीशुं पलटी बु
द्धि हे, हे पछतावो हवे थाशे ओहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
कां हुं न मुई कांइ हे, हे दुःखडामां नवि पडती इणवेला
इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं
नारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस
व्यो नलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु
तनें खोले रविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सूति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पनणे पुत्र वधावुं कांई हे,
पापिणी हु इंण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
सुतनुं सुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके
वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परला

त हे, हे करीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥
॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठडे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अरिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठडे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयडर्जे हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें ईम जलि नांतें पत्नणी कमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतस्यो, वींटयो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ फेरा दीधा फहकता, कारुजणें जलगाण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया गाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागुं ॥ ए देशी ॥

॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुंण आंहीं रे ॥ गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संनव प्रत्यें, कहे आकृति तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पुत्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥ वनमांहि बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं बलसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ नलुं कर्युं जगदीश्वरें, मेलवतां तुं आज रे ॥ गो० ॥ मुज मेरे आवो वही, मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए नर चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विन्नंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर वालतां, रहेशे शील अखंम रे ॥ गो० ॥ इंम धारी बोली त्रिया, सुण गुणरयण करंम रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ तनुजा हुं चंमालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥ आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो०॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इंण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कहे, नहीं नांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेच्छायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो ऊडपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन जयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो०॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद न नेहारूढ रे ॥गो०॥१५॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती ठानें रही, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, थापी करण संन्नाल रे ॥ गो० ॥१७॥

अंबर नूषण नोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो०॥ नांखे नहिं कडवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥गो०॥ ॥ १७ ॥ नाम पूबाव्युं अन्यदा,बलसारें करी शान रे ॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अनि धान रे ॥गो०॥१ए॥ व्यवहारी इंम चिंतवे, मम कहे ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउं, कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो०॥ २० ॥ चाल्यो तिहां थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि तिलक पुर आपणें,पोहोतो कुशलें ताम रे॥गो०॥२१॥ पुत्र सहित बानी गृहें, राखी महिला तेम रे॥गो०॥ दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥गो०॥ ॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इंम पनणंत रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो, रहेशुं आणाकार रे ॥ गो०॥ २४॥ पुत्र नहिं को मा हरे, ते बामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय मालिका, वधशे इंम घरसूत्र रे॥ गो० ॥ २५ ॥ व चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुद्ध रे ॥ गो०॥ कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो०॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पडजो पण ए पिं
ड रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील
अखंड रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वार्यो बहुल प्रकार
थी, नाख्यो वचन निठेड रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो
बापडो, न करे वलती जेड रे ॥ गो०॥ २८ ॥ रोषा
रुण घर बारणें, द्ये तालक सुत लेय रे ॥ गो०॥ प्रि
यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीउ, बालक वनिका मां
हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नर्यो, रह्यो लक्षण अ
वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यभिचारिणी को मारीयें,
नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
बीजी चोथा खंडनी, कांतें पनणी ढाल रे॥गो०॥३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर द्वीपें
चालण तणा, करे सजाइ काज ॥१॥ देइ शीखामण
नारिनें, पूछी स्वजन कुटुंब ॥ छानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां, जई बेठो शुन संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधां नां गर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूर्यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जल निधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें चाले बाबर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इंम चिंते सा सुधि नूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे बूम्हाडी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गाडि ॥ ध० ॥ २ ॥ दूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोगी क्षय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीवन मृत सम ते त्रिया रे, गल गलती गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नाथनें रे, वहेती आंसु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पडियो निरखी आपमां रे, वाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणुं रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, वहेतुं प्रवहण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यो बाबरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ वंधारा उतराविनें रे, आपी नृ

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ७ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकड रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, तेपण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा दुष्ठ जुवाण ॥ निम्महेरा बोले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर मांहें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत बाला हुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ विच विच अंतर गालीनें रे, पोषे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांहे रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं दुःख दोनाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा नूनारणी रे, कां सरजी किरतार ॥ देतां दुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गम न हुंतुं दुःखनें रे, तो आव्यो मो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ नाल लख्युं बनी आवशे रे,

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ डुःख पूरें अबला नरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स्व चरित कम्मेना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें ढाकें चढ्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध०॥ १९ ॥ घरडी तन लोही लीयुं रे,मूर्छाणी नूपीठ ॥ खरडी रुधिरें एकदा रे, पडी नारंम शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंम ॥ चंच पुटें लेई ऊ डियो रे, सहसा ते नारंम ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मार्गें ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो सामुहो रे, आव्यो नारंम तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ मिष लोनें तेहशुं रे, मंमे जूऊ तिकोई ॥ लडतां चंच थकी पडे रे, ढटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४॥ के धारा हरिवल्लनी रे, के दामिणी ये दोट ॥ इंम क्षण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट॥ध०॥ ॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे, पडी सुकृत आधार ॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंमें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पडी, जखपूंठें निरनाथ ॥ पण जो ए जल बूडशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मरण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आराधन हेतुक नणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार पद सांनले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी सूचवें, पूर्वागत संबंध ॥३॥ रहि क्षणिक थिर चित्त ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, नुज लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी अछे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इंम मत्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दीसंत ॥ के सुरपादप वेलडी, चलगिरि शिर विलसंत ॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुलने गजगेल ॥ चाले ठांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥७॥ सुखें सुखें प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिछ ॥ उदधितिलक वेला उलें, कुशलें पोहोतो मछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे; कंदर्प्प नामें नूप ।

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढित्त अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिडि डुमामें देवा डी फंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींटचो सु नट उछरंगे ॥ जीराजेंड जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे डुर्दंत,सीमाडा नांज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १॥ पुर साहमो जख आवतो रे, जलमां नूपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, बेठो तेहनी पीठो ॥ बेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए क नणे गरुडें चडचो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो ॥ आवे ठे नृप नांखे माठो, कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाठें ॥जी०॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ धुंढादंर्मे सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही बाहिर मोडें, सुंदर थल नूमि जई ठोडे ॥ प्रणमी व लियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य मह्ा जलें रे, रयणायरमां मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे,आवे विस्मय ली

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी ईंम कह्युं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे,मच्छ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रें, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक्र चक्रनां व्रण जूउ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, जमीय घणुं दीसे जलमांही ॥जी०॥६॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण भांगे पडी रे, मच्छवांसे किहां दूरें ॥ मच्छवासें बेठी इहां आवी, ईंम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंदर्प नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे,सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुंण तुं किम मीनें धरी रे, आफलती दुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर एणें,हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीठा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज छिहुं परखनो वैरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उंलखुं रे, तात श्वसुर कुल देषी ॥ शीलविखंमी माहरुं रे, लेशे सुत संपेखी ॥ लेशे सुत इंम चिंती निःशासी, बोली बाला डुःख चकासी, मुज चिंता तुमनें ठे केही, पुण्य विना रजलुं बुं एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पलणे नृपनें रे, नारी ए डुःख नारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवुं कांई करारें ॥ कहेवुं कांई शंके मत पूठो, डुःखमां वली वली लागशे उंठो ॥ मीठें वयण हवे आसासी, उपचरणा कीजें कांइ खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूठे मानिनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरुं रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नगारो, तेहथकी न लह्यो डुःख आरो ॥ सन्मानी नृप मंदिर आंणी, सुख साजें राखी जिहां राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उंषधि रे, रूझवियां व्रण तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आवासो ॥ थापी पृथग वसन शणगारें, संतोषी नृपें तेणी वारें ॥ मुजने इंम नृपति सतकारें, वारु नहीं आगें इंम धारे ॥ जी० ॥ १३ ॥ ते दिनथी ततपर हुई रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनुं रे ठांमि भ्रम विश्लेष ॥ ठांमि भ्रम विश्लेष विवेकें, अ,

राधे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति नणे,मलयानें धरी राग ॥ न डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बंध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुड्का,ग्रहेवा मणि पर नाग ॥ २ ॥ तुज वचनामृत चंड्का, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजडी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दियें, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ऊ शुं, वास्युंही न रहंत ॥ कोडि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाण्ये आदरे, तो रस वधतो होय ॥ नहीतो पण ठे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश किहां पाने पडी, नहीं नूलुं हवें दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे ठवी,ठानी हीये निघट्ट ॥ वचनगर्में ते डुष्टता, नूपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें,लवणिम पडो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ए ॥ बूडी कां नहीं जलधिमां, फ

खें उतारी कांई ॥ नरकोपम दुःखमां पडी, हे हे पाप प
साई ॥ १० ॥ चाहे शील विखंमवा, कामंधल नृप धी
ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अद्भुत व्रतनें इठ ॥
॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, ऊनो निरखी बा
ल ॥ वधिछुं तन मन संवरी, बोली ईम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेडो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेडो नांजी ॥
नारी नरकनी कूंमी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति कुंमी ॥ ठे० ॥
अनुचित करतां मीठडा बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥
केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज बाजी साजी
॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपयश
माला ॥ पुरुष पतंगा झंपण एतो, विषम अगनिनी
जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे,
लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा संगति राहु, म
लिन करे गुणइंदु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि
णसाडे, परनारी रस ठांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग
वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ क्षेपत क
र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितना सांसो ॥ तिम
सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥
॥ ५ ॥ निज नारीयी नूख न नांगी, शुं विलखे मुज

माटे ॥ भूत भाणें जो तृप्ति नहिं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥छे०॥६॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उशीसें सलगे ॥ शीखडली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥छे०॥७॥ हीये विचारी निरख रे पेला, महि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंद्रायण फल साचे ॥ छे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह नुं, मोक्षपथिक पग बेडी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति उथेडी ॥ छे० ॥ ९ ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूठें ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ छे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवनें आहूति देवा, नारी हुताशन कुं मी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिं मी ॥ छे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय छंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ छे० ॥ १२ ॥ चूकवतां ड ष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये ड लहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ छे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, भस्म करे तस देहा ॥ तेह भ णी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ छे०॥ ॥१४॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, भरियो गुण

संदोहें ॥ तो का कुमति प्रसंगें जोला, पररमणीशुं मोहे ॥ ढे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाडी, रामायें रस जरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो पण नवि उसरियो ॥ ढे० ॥ १६ ॥ ए नारीनुं जोरें पण हुं, मूकीश शील विखंभी ॥ सुखें करजो जस्म वपुष ए, ईम चिंति थिति थंभी ॥ ढे० ॥ १७ ॥ विलख वदन कंदर्प्प नरेसर, राज काजमां वलग्यो ॥ प्रमदा मिलन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमां सलग्यो ॥ ढे० ॥ १८ ॥ निर्जल देश पड्यो जिम माठो, तिम नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसंगादिक मन्मथनी, दशे दिशा वशि विलपे ॥ ढे० ॥ १९ ॥ आवर्जन करवा नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि वस्तु विशेषें, सुपनंतर नवि चूके ॥ढे०॥२०॥ वदन थयुं जांखुं मन पसख्या, चिंता जलधि तरंगा ॥ मरणोन्मुख मलया थई बेठी, राखण शील सुरंगा ॥ ढे० ॥ ॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे संकटमां, जे निज मन थिर राखी ॥ ढाल पांचमी चोथे खंडें, कांतिविजय बुध जाखी ॥ ढे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूडलो, तरुवर कोइ तका

य ॥ सुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें कडयो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नजथी नृपना अंकमां, ते फल पडियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पड्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अछे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अनंग ॥४॥ आण्युं तिहांथी सूडले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पड्युं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमा सतो, नृपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुनटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नृपति वचन तथा क री, सुनट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मल यानें फल दीध ॥८॥ विणकालें किम संजवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित ईम नृपजणथकी, ली ये अंब तजी लाज ॥ ए ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नृपति धाम ॥ उछापी कहे रायनें, पापी नि जकृत काम ॥ १० ॥ महादुःखें दिन नीगमे, तकत

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूउ दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७ही ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो नूंमो मुज मन नासे हो ॥ नूपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, कांइ न चढे मन विशवासें हो ॥ नू० ॥१॥ सुंदर शील वी गोशे, आडुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नू० ॥ शाख लाखीणी खोशे, तो सूल किश्यो हवे होशे हो ॥नू० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी नगिनी शी न ज्जा हो ॥ नू० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि जाणे ख ज्ज अखज्जा हो ॥ नू० ॥ ३ ॥ इंम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नू० ॥ आंबा रस मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नू० ॥ ४ ॥ नर हूउ फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो ॥ ॥ नू० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नू० ॥ ५ ॥ बेगो मंदिर जालें, अंतेउर ख्या ल निहालें हो ॥ नू० ॥ सूडो जिम रह्यो आलें, सुर तरुनी फाल विचालें हो ॥ नू० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थई राणी सवि क्रोनाली हो ॥ नू० ॥ जा णे संचे ढाली, इंम थंनी रही विरहाली हो ॥ नू०

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नू० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नू० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नू० ॥ विद्याधर गुणें नरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नू० ॥ ए ॥ पीडी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥नू०॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नू० ॥ ॥ १० ॥ यामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोंखे ए बेठो हो ॥ नू० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नू० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नू० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ नू० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ नू० ॥ मलया बदले योधें, कुण मूक्यो मुंज अवरोधें हो ॥ नू० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या नड भृकुटी चढावी हो ॥ नू० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥नू०॥१४॥ बेठा ठां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नू० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नू० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किश्युं ए भासे हो ॥ नू० ॥ ते कहे

जेहवुं देखो, तेहवो बुं इहां शुं लेखो हो ॥ नू० ॥ ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण न्यारो हो ॥ नू० ॥ मलयानां इणें जमही, पहेस्यां बे पट ते तिमही हो ॥ नू० ॥ १७ ॥ में रति रस मागंतें, नर रूप धस्युं कोई तंतें हो ॥ नू० ॥ जाणुं मलया एही, बेगी बलवानें सनेही हो ॥ नू० ॥ १८ ॥ महीपति कहे सेवकनें, इंम अंतेउरमां न बने हो ॥ नू० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर काढो हो ॥ नू० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, काढ्यो बहि भुज ग्रही तामें हो ॥ नू० ॥ बाह्य गृहें नृप राखे, एक दिन वली एहवुं जांखे हो ॥नू०॥२०॥ रूप कस्युं शे योगें,नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ नू० ॥ हतुं स्वाजाविक जेहवुं, थाशे किम क्यारें तेहवुं हो ॥ नू० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियडामें, विलखे जूठ जोगनें कामें हो ॥ नू०॥ मौन कस्यानी वेला, रहेशे बकी एहनी मेला हो ॥ नू० ॥ २२ ॥ मलया बाजी जीती, नूपतिनी मति गति वीती हो ॥ नू० ॥ बही चोथे खंमें, कांतें कही ढाल घमंमें हो ॥ नू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कसी कसी नृप पूबीयुं, हसी न मेले मीट ॥

तींखो लागो ते तदा, जिम बावलनो नीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूउं, रोषारुण नृपाल ॥ मंफावे तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ ताडे ताते ताजणे, मारे लागी लात ॥ मुक्की वली चूकी दीये, पाडे नाडी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश नूनलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षे पर्षद निरखतें, धर्षे दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पूंगि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥५॥ नृपसुत ईम ताडी जतो, चिंते हे किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, ल हीशुं डुःखनो पार ॥६॥ एक दिवस निद्रावशें, पडयो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन आश ॥ दीठो नमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा स ॥ ८ ॥ तस कंठें ऊनो रही, चित चिंते दिलगीर ॥ पडशुं जो कर नृपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं महारे ईहां, मरण विना कोइ उर ॥ इष्ट संभारी आपणो, ईम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ उधवजी कहेशो बहु न कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी डुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

पीयु विरहो तींखी कातरणी,काटी करे हिय पूर जी॥ प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो दूर जी ॥प्रज्ञु०॥१॥ वाहालानो मुज देई वीछो, डुःख संकटमां नाखी ॥ जाग्य रहित ज्यां त्यां हुं जटकुं, मधु जूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ दैव अटारा महाबल साथें, ए जव दीधो वियोगो ॥ परजव कंत पणे मुज तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर ऊजी नररूपें, देती इम उलंना ॥ सज्ज हूइ कूपें ऊंपावा, प्रेम जरी निरदंजा ॥ प्र०॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेषें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद लही नवि लेशें ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावुं जोवा दिशि केही, ईंम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया उलंजा, ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अपूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पडछंदे नज मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥ संज्रमथी ऊठयो त्यां जडकी,कहेतो ईंम मुख वाणी॥ विफल मद्दा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ताणी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं, ईंम कही ऊंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहिज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ए ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा नाख्यो, लघु सादें इंम नांखे ॥ मुज अब लाने ए डुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥१०॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधें, इंणे मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, डुःखमां हियडे धाख्यो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं छे, कां पडियो इंम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तुं छे किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक पूछी सहु पाछें, काम करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, नांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणाश्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ डुर्लभ दयिता दर्शन देखी, उत्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इंम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आनें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इंम

कहीनें नयणें जल जरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सापि कहे हियडे डुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र० ॥ १ए ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी डुःख अनुजवंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्यां किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे बलसारें, ऊडपीनें सुत लीधो ॥ अबे किहां ते सा कहे शेठें, मूक्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र०॥ २१ ॥ लहेश्यो किम नंदन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि होशे जो इहांथी, बूटक बार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूबयुं वली दयितायें ॥ आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इत्रायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजाषण करतां बेहु, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, जणी कांतें उमाहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगडो हूउ, जग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद जोतो राजिउ, आवे जिहां बे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूउ सहजरूपें त्रिया, विलसे बे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुजगता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडतां, जू

ह्यो नहिं नगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोने अनुपम जोडलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अजय हजो तुमनें बिन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस बंठ ॥ ५ ॥ नूपें बिहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें नूपति तणो, मलया नणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाछें कम जात ॥ कीधी कोडि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप थी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा योग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूडी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो ईम कहेतो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नूपति कहे जणनें पहेली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उंचें नीचें सेवक खींचे

जोरशुं रू० ॥ गयणंगण गहेरो कीधो बहेरो सोरशुं रू० ॥ २ ॥ आतम उत्खंभक जाणे करंभक सापना रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नूपें लहि ताघा बे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख मांहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिउ विहूणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महबल तस केडें आव्यो नेडें कांठडे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो राणो दीठडे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोपें उपीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी भावी जमणी ए छुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ मादलिउ मार्यो स परिवार्यो गोठिनो रू० ॥ नाखुं अंध कोठीमां, जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ थापी इंम टूंकी कापी मूकी दोरडी रू० ॥ बंधनथी छूटी मांची त्रूटी उथडी रू० ॥ ६ ॥ पडिउ ततखेवा खातो ठेबां कोरनां रू० ॥ नीचें ढल नाग लागा कांग जोरना रू० ॥ नारी तस पूठें पडवा ऊठे साहसें रू० ॥ नूपें कर साही राखी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणी आवासें राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुंण ए रस नरि

यो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूछी नवि बोले आंसू ढोले डुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न बोटे इकमना रू० ॥ ७ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी एहवो रू० ॥ नोजन पिउ पाखें न करूं लाखें जेहवो रू० ॥ मूकी एक महेलें आप्या गयलें पाहरु रू० ॥ वेगो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ था शे किम कूपें नाख्यो नूपें नाहलो रू०॥ नीसरशे क्यां थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर ती हइडुं नरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर ती दाहाढो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल हेती, विरहें दहती देहडी रू० ॥ निशिमां एक मा गें नूतल नागें ते पडी रू० ॥ फंकी विषधरियें रोपें नरिये क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे अलगो आहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संनारे जिन मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो नूपति आयो व्याकुलो रू०॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा नलेरा जे घटया रू०॥ साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमटया रू० ॥ इंडी थयां शून्नां चेतन ऊना धारणें रू० ॥ एक सास

उसासो मंन्दित मासो क्षण क्षणें रू० ॥ १३ ॥ ते दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क रवा तन ताजी प्रगटयो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पडहो वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ धोकें संचस्या रू० ॥१५॥ थानक सवि नटकी पाछा वटकी नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उच्चाटें खल नल्या रू० ॥ चोथे खंर्मे चावी ढाल सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू० ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अभिनवो, पडह छबे त्यां आय ॥ नृप सुनटें नृपति कन्हें, आण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हण्यो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकज्ज ॥ मुंजनें अल गो जाणीनें, काढयो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इंम चिंति

अण डेलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, नमर पीवे नाठी चगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति उनमादी माह्वारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या भलें, उपकार क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे, मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम सरिखे आनूपणें, पुहवी तल शोनंत रे ॥ मो० ॥ ॥क०॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं, काम करो लेई हाथ रें ॥ मो० ॥क०॥मो०॥ रणरंग आपुं हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ मो० ॥ लाखिणुं लोकां विषें, ए छे यशनुं काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बो ल्याथकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥४॥ ॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां, कर

शें कुण प्रतिबंध रे ॥मो०॥क०॥५॥मो०॥ संकट पडि
यो मही्पति, कहे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क०॥
॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां,काम करीश जो ले
ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशो नृप का
म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले
जाईश निज नारजा, चिंते एम सगर्व्व रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अंगी करी, आव्यो
मलया समीप रे ॥मो०॥क०॥मो०॥ मूर्छागत दीठी
त्रिया, मूकी गरल उद्दीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥
॥मो०॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलजरें नय
ण रे ॥ मो ०॥ क० ॥ मो०॥ रोर्धे मन काठुं करी, बो
ले इंम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ए ॥ मो० ॥ ग
त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अंगें आगमी, करशुं हुं
प्रतिकार रें ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र
सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सित्त रे ॥मो०
॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेवकें, कीधी
धरा सुपवित्त रें ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥
नृपति आदें जन सवे, बेग बाहिर आय रे ॥मो०॥
॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मंमल मांमीयुं, विष वालक

नो उपाय रे ॥ मो०॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंमल
मां पूजी विधें, ध्यान धरी मह्रा मंत रे ॥ मो०॥क० ॥
॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणिरतं
त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ क्षाली मणि
जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥मो०॥क०॥
मो० ॥ ढांक्या ज्यौं रवि तेजथी,कमल हुशे एक दे
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो०॥ क०॥
॥मो०॥ लोचन पूरां उघडयां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका
श रे ॥ मो० ॥क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगें जल सिं
चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०॥
ऊठी आलस मोडती, करती हाव विशेष रे ॥मो०॥
॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधाख्या प्रभुजी इहां, कू
पयकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
सुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥मो०॥क०॥
॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं
जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें
एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥मो०॥क०॥१८॥
॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर सुदें,

पेगो हुं तिण ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥मो० ॥
साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥
मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आ
वे पूठें उछांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ ए
ह सुरंगा चोरनी, तिण वली बीजुं बार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आघो कीधो
प्रचार रें ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मु
ख आगें थई, मणिधर नागो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उल्लस्युं, जिम जडता
जड चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसा
रें हुं चालतो, आथडीयो जई द्वार रे ॥ मो०॥क०॥
॥ मो०॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी उलटी ति
वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ बार विवरनुं
उघडयुं, नीसरियो बहि आय रे ॥ मो०॥क०॥मो०॥
जन्म्यो गर्जावासथी, चिंत्युं ईम अकुलाय रे ॥ मो०॥
॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघेरो चाल्यो वही, जोतो
अहिगति लीक रे ॥ मो०॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें
दीठो अही, बेगो थई निर्जीक रे ॥ मो० ॥क०॥ २५ ॥
॥ मो० ॥ मंत्र जणी ते वश कीयो, लीधो तस मणि
नंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें सम

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥
॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूउ,चिंती इंम शिज्ञ तेय रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो
उमहेय रे ॥मो०॥क०॥२७॥मो०॥ठाने पुरमां पेसतां,
निसुण्यो पडह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू
ठ्युं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसहो, प
डह ठव्यो पण बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि
योगें साजो करी, गाव्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २ए ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकडो, धीठो
पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०॥ देशे तुजनें मु
ज नणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं
म विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय
नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥मो०॥क०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेडीउ, आव्यो अधिक प्रमोद ॥
निरखे बाला हर्खथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर
धूणी नृपति नणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम दुःख
सार्थे जेणायें, फेंक्यो गरल उखेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधवें, पूछयुं नाम निवेश ॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जिमी नहीं गत वासरें, विरची बाला एह ॥ उचित जमाडो तेह जणी, कहे नृप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाकुं साकर रसें, पावे कुमर सहाय ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंथीडा रे संदेशडो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जणे नृपति प्रत्यें, करो शीख सुजाण ॥ द्यो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुं रे विदेशी पंथियो ॥ न सहुं ढील लगार, मुज मन ऊमयुं इहांथकी, चालण निरधार ॥ हुं० ॥ २ ॥ कांई विचारो राजिया, करो कोडि विषाद ॥ रुसवा थाशो लोकमां, मूक्यां मरयाद ॥ हुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी, मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप पण नवि उथपे, कुलवट स्थिति थाप ॥ हुं० ॥ ४ ॥ आपो मलया एहनें, थाउ राजि प्रसन्न ॥ दंपती दुःखियां मेलवी, करो सत्य वचन्न ॥ हुं० ॥ ५ ॥ सम जावे इंम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपूछ्यो ते सांजली, कोपें मदमस्त ॥ हुं० ॥ ६ ॥ क्षण एक अण बोल्यो रही, मांहे बीजी वात ॥ है है निठुर पणा

तणी, जूउं जूठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहवुं, इयो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुक्त विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लह्यो आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ डुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे च लाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां बाली तेहनुं, कीजें न स्म शरीर ॥ लेपें शिर पीडा हरे, तेह नस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उषध ए तुजने नलें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं डुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणें, सोंपे एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके, डुःख संनव काज ॥ अंगीकर्युं में धुरथकी, न कह्यां मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज एमें लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्जन उंबध ताहरुं, करवुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम दा आपतां, मत करजे विचार ॥ दुं० ॥ १७ ॥ फो गट गाल फुलाविनें, कहे नृप हसंत ॥ उपकारकनें आपतां, कहो शुं खटकंत ॥ दुं०॥ १ए ॥ कठिन हृदय नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू आं, जण थापी निःकृष्ट ॥ दुं० ॥ २० ॥ मंदिर आवें मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी, कांतें कही ढाल ॥ दुं० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥ काठ शकटनरि जोतरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥ निरखी विषम कर्त्तव्यता, दुःखियां पूख्यां लोक ॥ हाहा नरमणि विणसशे, इंम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ठे हलां आनूषण धरी, वींटयो राज सुनट्ट ॥ पश्चिम पो होरें पितृवनें, पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर लोकथकी लहे, मलया पियुनो आप ॥ संतापी विर हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ कठ कलालणी नर घ डो हे, दारुडारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज यौवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काय ॥ आपद पडियो जेहथी हे, मोहें लोनाणो ना
थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय०॥ १ ॥ पहेलो
दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरत्न ॥ ए वेलामां
साहेबा हे,कुंण ग्रहशे तुज हत्न ॥प्रा०॥२॥ काठ कुठी
मां नीडियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां
थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
ही नृपतिनडें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि
म पीडा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥
कांइ जीवाडी पापिणी हे, हुं हुइ जे दुःखदाय ॥
॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियडे द्ये
घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन
कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोडीयां हे, ए वेला
जगदीश ॥ तरछोडी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश
॥प्रा० ॥ ७॥ प्रीतडली हीयडे वसी हे, लागे मीठी गा
ढ ॥ साले बूंटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥
॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पडजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो
जेणे वियोग ॥ परिजन तेहनां रखडजो हे, जिम का
प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीज
ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे, द्ये जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नय
णें नाहलो हे, तो मुज भोजन वात ॥ बेगी एहवुं
आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी गोर ॥ खडके
इछित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥प्रा०॥१२॥
साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिल
गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
॥ १३ ॥ देव विचास्या विण ईस्यो हे, मांझ्यो कवण
अन्याय ॥ राखमिशें पद्मनी परें हे, हणियें नहीं सि
द्धराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो भलें हे,
पण मारो कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी क
रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप भणे ए भाभि
नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी कांठी हुवे हे,
जो नर ए जीवंत ॥ प्रा०॥ १६ ॥ ए बाला विण मा
हरे हे, न पडे जक पल मात ॥ मत पडजो ए वात
मां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय
तव तिहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी
तुमनें पडी हे, मेलो ठो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
पोतानें पापें पची हे, मरशे जो डुःख आणि ॥ तो
नगरीमां केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९॥

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गारमिशें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि दुर्मति ए बेहुनें हे, गारज पडशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पिए लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पनणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संनारी आपणो, परवरियो नडवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूस्यो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पडे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसस्यां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तडाके तोडी ले दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुनट विकट चयमांहि, पेगे कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाडयो, पसरी झाल तिवारें ॥ १ ॥ झबाकें झलकी ले दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमाकें चमकी ठे सुर बाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी, दिशिदिशि अंबर ठायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें, जाणे पावस आयो ॥ च० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग उडे तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ ज्वाल वीज ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ च० ॥ ॥ ३ ॥ सात जीन शतजीन थईनें, नजतल चाटण लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां वागो ॥ च० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानर देखी, सुजट वल्या गुण थुणता ॥ च० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं तेणें तिम नृप आगें, जांख्युं सकल बनावी ॥ नृप प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥च०॥ ॥ ६ ॥ हुउ प्रजात विना तनु तारा, ढांक्या सूर प्रजावें ॥ तव शिर रक्षा पोटि धरीनें, आंवे सिद्ध स्वजावें ॥ च० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग पग एहवुं पूठे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शिरों एह कीस्युं ठे ॥ च० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ हुं, आव्यो ठुं नृप काजें ॥ ईम कहेतो पोहोतो नृप जवनें, सिद्ध पुरुष शुन साजें ॥ च० ॥ए॥ राख पो

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज माथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ क० ॥ १० ॥ नृप जणे शुं न बल्या चयमां. आव्या दीसो साजा ॥ आग लगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा ॥ क० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, बनशे कूडुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस नवि मोल्युं ॥ क० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण रीज्या, अमृत रसें चय गारे ॥ थयो सजी चित्त फरी हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ क० ॥ १३ ॥ गार पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा तेह पले तो रूडी, बोली जेह महीपें ॥ क० ॥१४॥ नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ इहां रह्यो गाली चय बाली, सुनटें करी दृग ऊंची ॥क०॥ ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटो, निरखत हरख न मावी ॥ क० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पावक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते नाखो, पीयु कहे अवसर पामी ॥ क० ॥१७ ॥ अंध कूप गत जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ पृथुल गर्ज घरनें आकारें, द्वार शिलायें अडकी ॥ क० ॥ १८ ॥

पेठो हुं चयमां थइ ठानें, द्वार सुरंग उघाडी ॥ सबल सुरंग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी आडी ॥ ऊ० ॥ १ए॥ सुनटें चय सलगाडी मूकी, बली बली थइ टाढी ॥ द्वार उघाडी कुशलें आव्यो, ठार नृपति शिर चाढी ॥ ऊ० ॥ २० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, कोइ आगें मत नांखे ॥ डुष्ट नृपति मुज ठिइ विलोके, तुज लेवा अनिलाखे ॥ ऊ० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें थइ द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ संगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ ऊ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धने जंत ॥ नोजन द्यो मलया नणी, अम हाथें न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहरुं, हवे अम दीयो विदाय ॥ २ ॥ आपो मुज धण आदरें, थापो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सुणी महेराण ॥ ३ ॥ संकल्पी जगव्यो वली, मंत्री ठल नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल, नृपतिनुं ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्ववर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूउ मुख सांकडो रे विंजा, किम करी करुं रे झकोल ॥
रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकडो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूडा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरझंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें उंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवें आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ झंपावो वली अंबथी रे मित्ता, नूतल ना ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा० ॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मित्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० ॥ बिहुं वातें

मृत्यु माहरुं रे मित्ता, पडिया नूमि बे हाथ ॥सि०॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, क
रशुं डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
सुंदरी रे मित्ता, बे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी कठ्यो धसी
रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणें नरे रे मित्ता, डुःख पूरें दिलगीर
॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींटघो घणे रे मित्ता,
आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा०॥ जिम जिम
गिरि उंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥
॥ सि० ॥ सा० ॥ नूपतिनें मंत्री हइये रे मित्ता, वाधे
हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गिरि
टूंके चढयो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि०॥
॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंब दे
खाडयो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में उ
पार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥
सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस
खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ॥ इंम कहेतो अंबा
थकी रे मित्ता, आपे कंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहें नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पडवंद्यो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, द्ये खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउ जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना हाडनो रे मित्ता, जडशें कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं भांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहडें सकल सुणाविद्युं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥सि०॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

पूछशो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इंम जन वीं
टीयो रे मित्ता, नृप जवनें गयो धाई ॥ सि० ॥ २०
॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा हूउ रे मित्ता, बीहीनो
निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मंत्रवी
रे मित्ता, कुशल्यो किम तुं मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥
॥ सा० ॥ इंमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, मूके
अंब करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो खाउ सहू
रे मित्ता, पित्त समावो उदंम ॥ सि० ॥ २२॥सा०॥
बीहीना हाकें बापडा रे मित्ता, नूप प्रमुख करे मून
॥ सि० ॥ सा० ॥ बे त्रण तेह करंमथी रे मित्ता,
सिद्ध ग्रहे फल धून ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें
पूठी संचरे रे मित्ता, मलया पास हसंत ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरडी रे मित्ता, पीउ दीठे
विकसंत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित वि
धि साचवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग बाल ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ पंमितजी रे चोथे खंमें तेरमी रे मित्ता, कां
तें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी कामिनी कहे, जांखो कंत उदंत ॥
गतदिन गत आगम कथा, तव महबल पजणंत ॥

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यंतर इहां अंबमां, वसिउं मुज नाग्येण ॥ गिरिथी पडियो वचन वदे, उलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म वीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनडुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ आवो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु०॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु०॥ ॥२॥ प्राहुण गति शी साचवुं,कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं,जिम जग नृपनी ठाप रे ॥मु०॥ ॥३॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु०॥ ॥४॥ पण बांध्यो में जेहवो,तेहवो हुये सुकयछ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमछ रे ॥ मु०॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी,ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाहे तुझनें,कहे तो द्युं हवे शीख रे॥मु०॥६॥में जांख्युं एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम जावशुं, करी कूडो उपजाप रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे,आवी पडे कोई जेथ रे ॥ संजारयो हुं ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेथ रे ॥ मु०॥ ८ ॥ इंम कहेतो सुर किहांथकी, लाव्यो एक करंम रे ॥ सरस रसाल तणे फलें, जरीयो तेह अखंम रे ॥मु०॥ए॥ मुजनें तेह करंमशुं,सुरवर आप उपाडी रे॥ मूक्यो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे ॥मु०॥१०॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे॥ अदृश्य गतिक रूपें तिहां,आवीश हुं तुज साथें रे ॥मु०॥११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशुं गाने हुं तेह रे ॥ शीख दियो इंम मुझनें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ थाप्यो तेह करंमीउ, नूपति आगलें जाई रे॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, बेगो हुं इहां आई रे ॥मु०॥ ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंमथी,कडकडतो स्वर क्रूर रे॥ उछलियो बलियो महा, पडछंदे जरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ खाउं पहेलो हुं नृपनें, के धुर खाउं प्रधान रे ॥ एक जणनें बिहुंमांहिथी, नहिं मूकुं हुं निदान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पडि

थो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें, कर माहारी संजाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ दुष्कर काम करे ह सी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल मिशें एह करंमर्मा, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें क्षयकारिणी, वलगाडी कुपलाय रे ॥मु०॥१८॥ सचिव कहे नृपनें प्रज्ञु,एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इंम कहीनें वारी जतो, आवे करंमनें मूल रे ॥ मु० ॥ १९ ॥ क्रूर सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुनिनाद रे ॥ कर्ण विवर विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु०॥२०॥ फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघाडे ततकाल रे ॥ वज्रा नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे॥मु०॥२१॥ नड नड शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम नड धाडि रे ॥ तेह करंमथी नीसरी, ऊरध नाग धूमाडि रे ॥ मु० ॥ ॥ २२ ॥ दुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउ, निर्जीवित देहि अंग रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउ, अगनि म हा डुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेडावे ति णि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां, दीसे ढे कांइं कीध रे ॥ इंम धारी नृपति कनें, आवे

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो,बोल्यो एम मरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
विज्वर एह दुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
छांटीयुं, अनल हुउ उपशांत रे ॥ ढांक्यो अंब करंमी
उ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करमनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं
दरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करंमीयो, उघाडी फल लेय रे॥ विस्मित नृपा
दिक जणी, आपहथु जव देय रे ॥ मु० ॥२९ ॥ त
व महीपति मरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥
थापी बीजानें करें, लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे॥मु०॥३०॥
जीवानो नंदन वडो, सचिव कह्यो गुण खाणी रे ॥
चोथा खंमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥मु०॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम कलव्यो, एह महाजय सिद्ध ॥
मंत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनां, लहेशे तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं
महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह जणी नय गोचरें, निगम विचारी गुज्ऊ ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि ला मुज्ऊ ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए वयण ॥ अनय रसें कोपाववो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो विमासण मांहिं रे ॥ नारि रस रातो पेगो उपांपल गोचरें होलाल ॥ हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥ मंत्र तंत्रादिकयोगनारे, लहेतो विविध प्रकार रें ॥ साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह जणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंतर कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कारज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उं शीयाला, जोंगे पडशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मागे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नहिं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ ईम करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ नहीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

त्रीजुं काम करे हवे रे, तोयुं महिला संभाल रे ॥ आगी ए तुजनें, वचन थकी हुं न भोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे वांसो, देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमंग रे ॥ सुगु णा सोभागी, मानीश पाड इहां खरो होलाल ॥५॥ नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह श्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रायनें रे, ए श्यो मांड्यो उधांम रे ॥ ए हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोंण आपणी रे, जो पण होय लख हाम रे ॥ इंम कहीनें खांचे,नाडी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वाकूं वल्युं रे, आव्युं ग्रीवानें ठा म रें ॥ ग्रीवा मुख ठामें, आवी रही तव आफणी होलाल ॥ ७ ॥ पूठ निहालो खंतशुं रे, काम थयुं तुज ठीक रे ॥ नूपति गुण मानो, वचन सुणी इंम तेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोषें भर्यों रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ सुण धूरत धीठा, लाज नहीं तुज ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें माहरो रे, जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्यायी, बीहितो नहीं

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्ये बे पीर रे ॥ मरडी गलनाडी, कांई मरे वाह्यो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सजामां बांधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुद्ध, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातडी रे, पडियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, बीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें उवे होलाल ॥ पडती रडती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पतिनिक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर उत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

शे, तो थई छे एटले घणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी ए
हवुं रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणुवाणे,
वनमां जिन प्रणमे धुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन
अजित जुहारीनें रे, पायें आवे आंहिं रे ॥ तो थाशे
साजो, बीजो उपाय नहीं तिश्यो होलाल ॥ असमरथू
पण राजियो रे,कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
थाउं, तो मुज अजर अछे किश्यो होलाल ॥ १५ ॥
लोक कहे निज पापथी रे, वलगो आवी वींग रे ॥ नृ
पतिनें पूछें, करशे नहिं हवे खोजणी होलाल ॥ रूप
बन्युं जोवा जिश्युं रे, प्रत्यक्ष जिम लोटींग रे ॥ दीसे
छे कोई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर
जन जोवा पेखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
होडा होडें, गामें गामें टोलें मल्या होलाल ॥ चाल
ण मांझे नृपति रे, पण न पडे वग कांइ रे ॥ जोतां
दुःखदायी, कारण बे वांकां मल्यां होलाल ॥ १७ ॥
जो मांझे पग पाधरो रे, तो दीसे नहिं माग रे ॥ लो
चन उपरांछे, लड थडतो पगें आथडे होलाल ॥ अ
वले पग ज्यां संचरे रे,लेतो मारग लाग रे ॥ घेरणि त्यां
वाधे, प्रेरण शक्ति विना पडे होलाल ॥ १८ ॥ बिहुं
वातें पुर लोकनें रे, करतो कौतुक दुःख रे ॥ जई आ-

व्यो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स मक्ष समजावित रे, थाशे हवे अनिमुक्त रे ॥ चिंते इंम बीजी, खांचे नशा सिद्ध कोटनी होलाल ॥१ए॥ वदन वलीनें पाधरुं रे, बेतुं पाछुं गाम रे ॥ लागी न हिं वेला, हूउ अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो डी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि द्ध हवे मागशे इहां रे,चोंपे मलया बाल रे॥ नृपति पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोखी चो था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस ने ली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥ जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥ गोरडीयां गुणवंतियां,जो देवरावो वाम ॥ तो थोडामां प्रीछजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण न णी, करे कोडि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप ति, पाछो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो,चिंते एम

निपट्ट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखुं किम जग दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे,जेहथी फवे सदीस॥ ५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशुं राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवे अनल उदंम, वाजीशालामांहि जागीउं जी ॥ ऊंचो जाल अखंम, दारुण गयणें लागीउंजी ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिद्धप्रत्यें पभणे इस्युं जी ॥ चोथुं वली मुज काज, एक अछे करवा जिस्युं जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह बले हयशालमां जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां जी ॥ ३ ॥ रीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए घडीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघडी जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, नांखे ए नृप चातस्योजी ॥ पाम्यो शीक्षा रोक, तो वली ईम कां पातस्योजी ॥ ५॥ अति डुष्टाध्यवसाय, गोडे नहीं ए डुर्मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय,योग्य दीयुं शीक्षा रति जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवुं त्यांहिं, उछाहें बमणो थई जी ॥ पेसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उनो जई जी ॥ ७ ॥ मनमां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घणो जी ॥ बांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संभारे आपणोजी॥

॥ ८ ॥ संनारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी॥ ऊंपावे ततखेव, दीपें पतंग पडे यथाजी ॥९॥ हाहा कार करंत, शोक नस्था पुरजन तदाजी ॥ आंसूडे व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो नूप प्रमोद, कुमर ऊंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिउं तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आरोह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन नूषण धस्यांजी ॥ फलहल ज्यो ति तुखार ॥ अंगें साज नला नस्याजी ॥ १३ ॥ धो रादिक गतिपंच, १ धोरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं॥ नेदें तुरंग रमाडतोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक नूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो ईम कहे उल्लटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह ठे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पडियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ बलतां सिद्धतां काज, एहवा थया मागा टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं संक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर हुआ बिहुं रंगमेंजी ॥ १८ ॥ सांनली वायक एह, राजादिक सवि जूजूआजी ॥ बलवा अगनिमां तेह, पडवानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष ख्याल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ बेहु निहाल, तीर्थ प्रनावें इंणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इंण गाम, तन होम्यां फल ठे बहूजी ॥ धरता मोटी हो हांम, आव्या नर पडवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध विचार, रे रे क्षण एक पडखीयेंजी ॥ आणो घृत निरधार, अगनि जुगतिशुं पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आण्या घृतना कुंन, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ नणतो मंत्र सदंन, आहूति द्ये मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहेलो पेशीश आंहिं, हुं इंम कही नृप पेशीउंजी ॥ पूठें सचिव संबाह, जई नृप पासें बेसीउंजी ॥ २४ ॥ कुंमरें वार्या लोक, पडता अवर हुताशनेंजी ॥ पडखो पडखो स्तोक, आववा द्यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, लागी नहिं जव आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इंम पुरलोकना बोल, सांनलीनें सिद्ध बोलीउंजी ॥ कांरे नूल्या अटोल, अगनि पड्यो कोण

जीवीउंजी ॥ २७ ॥ अगनि पडिउ हुं आज, सुरसा
न्निध्यथी नीसस्योजी ॥ बोली सकल समाज,वैर वाल
ए रूडो कस्योजी ॥ २८ ॥ फलियो अनय कुवृक्ष, नृ
प मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्ष, बोल्या व
ली आमंत्रिनेंजी ॥ २९ ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो
जो राजा आपणेंजी ॥ ईम कही राजा कीध, महो
त्सव आडंबर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिद्धरा
ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता
ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अडके विषमे
काम, लेजे सुद्ध संजारिउंजी ॥ आनाखी सुर आम,
सिद्धें तेह विसार्जिउंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंमनीरंग,
मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढा
ल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो देशांतर थकी,तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई
निरुपम नेटणुं, चलि आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप नेटी
बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउं,
सारथपति ततकाल ॥२॥ एक एकनें उलख्यां, याता
नयणां नेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न नूले नेट
॥ ३ ॥ मरतो तुरतज उठीउ, आव्यो मंदिर आप ॥

चिंते हह आवीयां, उदय मह्हा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ
हो महोदधि परतडें, आव्यो एहनें छोडि ॥ दैवें किम
ए नूपच्छुं, मेली सांधा जोडी ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें,
अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जोनूपमें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥
॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात,
प्रणमुं हो प्रिया प्रणमु पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥
॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो
हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रि
य नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविधहो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो छानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
करतां अन्यर्थना जी ॥ २ ॥ इंणी परें हो प्रिय इंणी
परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण
कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परि
कर हो निज परिकरच्छुं कांठें दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी
हो नृप कीधी क्रियाणें छाप, वांकज हो वड वांकज
तास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे
आप, सार्थपहो इंम सार्थप चिंता नावीयोजी ॥४॥

छूटण हो मुज छूटण कोई उपाय, दीसे हो नहि दीसे
नहि कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे ले एक
दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥
एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परि
चित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर
समोय, धींगड हो बल धींगड वीरधवल शिरेंजी ॥६॥
जींती हो तेह जींती एहनें नाम, छोडण हो मुज छो
डण विधि करशे बहीजी ॥ अडलख हो हवे अ
डलख सोवन दाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं
सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ,
आण्या हो घर आण्या परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो
वली तेहनो जणावी ठाठ, छूटीश हो हुं छूटीश एह नेदें
थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम,
माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मू
क्यो हो तिहां मूक्यो ठानो ताम, वणिकें हो तिण व
णिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां
अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राज
वीजी ॥ दुर्गम हो अति दुर्गम तिलक गिरि त्यांहिं,
भीषण हो जिहां भीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १०॥
निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम जाति, भीमें हो वन भीमें मलयानें ग्रहीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या वेहु नरिंद, निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्ज्ज य हो तेण दुर्ज्जय भीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां मलया बाल, दीठी हो नहीं दीठी नहिं किण थानकें जी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल,मलियो हो जई मलियो सोम अचानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपनो आदेश, पामी हो वर पामी वर तिम वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणतां हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आधुं हो ध न आधुं देतो वीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रत्यें ह सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंमीर, लोभें हो बहुलोभें वात ग्रहे धसीजी ॥१५॥ नृपकुल हो एह नृपकुल साथें छेष, चाल्युं हो नित्य चाल्युं आवे आ पणेजी ॥ बेगो हो कोइ बेगो नूतन एष, तेहने हो हवे तेहने हवे हणशुं रणेंजी ॥१६॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व लेशुं लूंटि,सार्थप हो वली सार्थपनें मूकावशुंजी॥ थाशे हो अम थाशे यशनी लूटि, अरिनो हो वली अरिनो

गाम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इम मंत्री दोय नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश,करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा मेरा फावताजी ॥ १९ ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत,आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंमें ढाल,नांखी हो इम नांखी सत्तरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदनूत ॥ सिद्ध नरेसर उपरें, मूके दुर्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निर्लोन ॥ स्वामीनक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोन ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरयगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ड्राहक पिशुन, (शत्रुनो चाडित) ए गुण दूत वहंत ॥

॥३॥ असवार्यो केकाण रथ, पहेर्यो फाव कुलिम्म ॥ सिद्धराय नवनांगणें, जइ पोहोतो जालिम्म ॥४॥ द्वारपाल नृप वीनवी, दीधो नवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिद्धरायनें, नांखे इंम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ उदया ते पुररो मांमवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुह्वीगाणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दांतोने फोज लेइनें रुडेजी आवे ॥ चं द्रावती नगरी धणी रे, वीरधवल गोगाल महाराजा ॥ द० १ ॥ ए बेहु एकमतुं थया रे, रूगो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस खांतशुं रे, लेशे ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते सार्थे बे नृपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ता जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता नली रे, मागे नहीं कांइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाणे एहनें नृप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प ड्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे जाते आवते रे, कीधो अमशुं नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगरें वासो वसे रे, ते जणी मूको एह म०॥द०॥ ॥ ६ ॥ कहेवाडयुं महारे मुखें रे, अम नृपें इम तु क्ष म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे,पालो राज्य सखुक्ष म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पडिया पण मुख डे ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥ वाहाली पाटु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥ ॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे,एठुं पण मामूर म०॥ ॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिह्कि पांतरे रे, तो ते कि म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ म नृपें बांहें ग्रह्यो रे, ते दुःखीयो किम थाय म०॥ ॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण तुज कटक अलप्प म० ॥ प० ॥ सायरमां जिम सा थुउ रे, थाईश त्यां तुं गडप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥ ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥द० ॥ एह वार्ते मत आणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥ ॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, भुजबल नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उंषध एकनुं रे,ए

हवो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म पडीश
माता मोहमां रे, लंकेश्वर जिम मूंज म० ॥द०॥ उ
चित हितारथ धारियें रे,आणी मननी सूज म०॥१५॥
दूत वचन सुणी लहे रे, आव्या सुसरो तात म० ॥
॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे, बोल्यो फेरवी धा
त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नृपनें रे, तो शुं
नहीं भुज दोय म०॥द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे,
केवल नर नहीं होय म० ॥द०॥ १७॥ एकलडो पण
दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोडिग
मे तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥
॥ १८ ॥ आफलतो आला लगें रे, मानीमां शिरदार
म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद
भार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो
रे, ते नृप ते बल साज म०॥ द० ॥ बाणे रणमां ते
होनी रे, फेडीश भुजनी खाज म० ॥द०॥२०॥ वा
हलो पण अन्याईयो रे, शीखवीयें सुत आप म० ॥
द० ॥ अन्यायें थाता पखू रे, लाज्या नही अद्याप
म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही छे नृपनो रे, तो अम
केहो लाज म० ॥ द० ॥ अमसायें तो छेडतां रे, न
रहो बापां आज म० ॥ द० ॥२२ ॥ न दीये शिक्षा

डुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ
म सरिखानें रहे रे,केहो नृपनो धर्म म०॥द०॥२३॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग म० ॥
॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग सार्खे रण
जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे
रीश हुं इणवार म० ॥द०॥ जा कहेजे तुज पूठलें रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ द०॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो
वही रे,चोथे खंम्में अनूंप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए
अढारमी रे,कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द०॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, बहि मंम्पमां आय ॥ ढ
क्का तिहां संग्रामनी, वजडावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मर्दे, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल
या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मल
या नणी, दे रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रं
गें शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगडया, वागां वड र
णतूर ॥ रसिया नाद नंनेरिया, अभिग उलटयो शूर
॥ ५ ॥ उंपां चे करवालने, टोपां के पहेरंत ॥ तोपां

केता सक्का करे,धोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउं ब्रह्मंम ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाड ॥ रणथंने जई वागियां,फोजां तणां कमाड ॥ ८ ॥ बे दल आमा साहमां, अडियां आई सबाहिं ॥ तामलिअणपेग वही,तारू नड रण मांहिं ॥ए॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे नडे सिद्धशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनड वनना महा मद उक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्यो जेह ते गज चढ्याथी अडे, रथ चढ्यो रथचढ्याथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरंगधर साथ ऊपटां लीये, पायचर पायगां संग जूजे ॥सजे०॥२॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु झिरें, गुहिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर नैरव नणी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच नींचां तणां, नेदीयां तिखण रोमांच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिलकार झबकार जलनो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

पुंमरीकें ॥ खडग कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर न
हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहड वच
नोपरि वचन प्रतिहत करें, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥
भुजयुगा फालणे भुज युगा फालता, करत रण नयें
लीला विवादं ॥स०॥६॥ वीर शिरवाल रण चालमां
उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोली ॥ ज्वलित
मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग
न पोली ॥स०॥७॥ करत ललकार हलकार जड को
पिया, चलत धमकारशुं शेष मोले ॥ कर ग्रही ढाल
धुंताल धुंकल रसें, उयल उंगाल करवाल तोले ॥स०॥
॥८॥ जाति भुज वीर्य गुण वंश उदभावता, बंदिजन
प्रबल शूरां जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि
आपणा, रण तणी सबल बाजी फवाडे ॥ स० ॥
॥ ए ॥ अश्व खुरताल पडतालथी ऊपडी, खेह अं
बर चढी सूर ढायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें
धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥
सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी
चले अगग गेडी ॥ रणण रणकार नल्ली (फरसी)
तणा वागिया, सिल्ल सुहडाण नाखे उथेडी ॥ स० ॥
॥ ११ ॥ खडग खटकार गजदंत ऊपर पडे, जरर

जरहर झरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ सित्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशुं वेरी सनमुख उछालें ॥ वहत नन शस्त्र देखी सुर खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ ओइया सुनट केइ गांजडे गगनमां, करध कीधा जि स्या नट्ट वंशें ॥ ज्रमत आकाश आयास विण गृध्र नें, बलि महोत्सव हुउ तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥ अडड अडडाट करि छूटीयां शतघनी, धुमल धूआं धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥स०॥ १५ ॥ दडड परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, कडड नर को परी खंभ फूटें ॥ गडड गेवरि गडें नालि मुख आहू ण्या, खडड खग खाटकें फलक त्रूटें ॥ स० ॥ १६॥ कलह खय काल सरिखो हुउ आकरो, सिद्ध नृप सैन्य नागुं दिगंतें ॥ थिर करी बल हवे आप समरंग णें, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाकतो सुनटनें युद्ध मंझें तिहां, सिद्ध रणरंग गज बेसी ताजें ॥ विश्व नूषण गजें शूर चढि धाईयो, वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल महापूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नृप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १९ ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नृपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्रान बाणें करी, शूरना वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वडा, तोडियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नृप बिहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंभे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इंम वारु मंभे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नृप जांखा पडया चित्त संकल्पता, समर करना रह्या शस्त्र नाखी ॥ खंम चोथे नली ढाल उंग णीशमी, जाति कडखा तणी कांतें नांखी ॥स०॥२३॥

॥दोहा॥

॥ दीन वंदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे वेहि ॥ १ ॥ इंम इंम कारज साधना,करवी ते सुरराय ॥ इंम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिणठाय ॥२॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

नावतो, चल्यो गगन ततखेव ॥३॥ पोहवी देगे क
तरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पारवती, ते शर
थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटेंगणे, मूके लेख
तुरंत ॥ सिद्ध नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत
॥ ५ ॥ चरित निहाली बाणनां, विस्मित हूआ नरीं
द ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद
॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेले खेल कदापि ॥ प
रमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप ॥ ७ ॥ एम
कही निज कर ग्रही, तुरत उखेडे लेख ॥ जोतो अक्ष
र मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल
मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र
त्यां, वांचे वसुधा कंत ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थारानें माहारा करहला,
वरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

॥ स्वस्तिश्री जिनपद नमी, नकस्या श्रीमती तंत्र ॥
सनेही शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र ॥
सनेही ॥ १ ॥ कुशल संदेशो पाठवे, छे अमने सुखशात
॥स०॥ तात शरीर नीरोगता, चाहुं हुं दिनरात ॥स०॥
कु० ॥ २ ॥ वीरधवल सुसरा तणो, प्रणति करुं कर
जोडि ॥ स०॥ तात श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोडि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में भुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥स०॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥स०॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेटघा तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुनदेवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो
हवे, पगधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूख्या हर्ष उन्नाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स०॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरत्नजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
डघा महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, दुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढघा
नरक निवासथी, पडतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु०॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप ईम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य त्रिने साहमा

पगें, दीग आवत तेण ॥ स० ॥ सहुसा हरषें सामो हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलिया हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो मांहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, गायो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वाहालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ इण एक इष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ स० ॥ वैतालिक (नाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पधराव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंटया निज निज परिकरें, आव्या नवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती दुःख संभारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोलावी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥स०॥कु०॥१८॥ तुरत करावी महाबलें, अशनादिकनी जक्ति ॥ स० ॥ सैनिक सर्व संतोषियां, नृपालें जली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, बेगं सुखमां त्यांहिं ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु०॥ २० ॥ सुत आगें जनका दिकें,नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥कु०॥२१॥ चोथे खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांनलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी उुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो,तनुजानें पन्नणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल रूपनी, पोषी लाम्म विलास ॥ रखडी दि शि दिशि रंक ज्यों, पडी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध उुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि उुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, उठी नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ शूरपतिं महीपति बोले ए,पडिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन उुःखनी गांठडी ए ॥१॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूडो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २॥ काज कखुं में अण जा णुं, जल पीधुं ते विण गाण्युं, अतिताण्युं, तुज साथें

में डुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, था रलियायत गुणनरी, दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, डुःखनां तुरत विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस करुणा रति व्रती, धृतिगति, स्नरिम शुनकृत तुज न लां ए ॥ ८ ॥ ईम महाबल गुण नांखता, नृपादिक यश दाखता, जण किता, सलहें महबलने तिहां ए ॥ ९ ॥ जनकादिक पूछे तिहां, वत्स कहो सुत छे कि हां, लीधो इहां, पापीडे जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, छानो किहां किण उछरे, पण खरें, खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेडीनें पूछां खरो, कतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाडशे ए ॥ १२ ॥ ततक्षण सुनटें आणियो, पग बांधीनें ता णीयो, वाणीयो, डुःख पीडयो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे डुर्मति शुं कस्यो, पुत्र लेइनें किहां धस्यो, जाशे रुस्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं घ

टशे तुज शिरें, तेतो करशुंहिज खरें, पण अवसरें,सु त जावा देशुं नहीं ए ॥१५॥ बीहीनो ते कहे तो आ पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, डुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ ठोडो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा डो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेजा ठे नहीं ए ॥ १७ ॥ हारव्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति ण जवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो ऊलकतो ए ॥१ए॥ नृपादिक सवि हरखीया,पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण जयां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरंसी निर धारिनें, कुमारनें, कीधी नामनी थापना ए ॥२१॥ ते कहे बल इति थापना,कीधी ठे करी कल्पना, चह्नापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥२२॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठडी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठडी,सो दीनारनी दीठडी, ऊथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठोडीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज जाषित

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ सूर कहे वरषांतरें, मलया प्रीतमशुं खरे, इणिपुरें,निश्चयशुं दीसे मली ए ॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मल्युं, वरषांतें दुःख निर्दल्युं, दूरें टल्युं, संकट सघळुं आजथी ए ॥२८॥ राज्य मह्युं कौतूहलें, सिद्ध नृपें सुजनें बलें, ते तिण वेलें, तातनणी आप्युं वही ए ॥ २९ ॥ सकुटुंबा बे महीपति, वहेता स्नेह रसोन्नति, शुनमति, राज काज करता वहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खंमें मोरडी, एकवीशमी रस पूरवी, रूडी, ढाल कही कांतें नली ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंद्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पुरवरने उपवनें, समवसस्या गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींटया साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रिहु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ नव अनंत नांखे यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहुं नृपतिने वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवस्या, आवे नृप सतेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जेम ॥ धर्मकथा सुणवा बन्हे, बेठा विनयी तेम ॥५॥

ढाल बावीशमी ॥ वणजारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांई बांमो मोहनी निंद, जागो विषयघारिणीथकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, बल जोवे बानो तकी ॥ न० ॥ १ ॥ चि० ॥ थेंतो सांकडे उंरामांही, सूता काल अनादिना न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट केई दिना ॥ न० ॥२ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, एहमां स्वाद न को अबे ॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो लपटाय, पबतावो होशे पबें ॥ न० ॥३॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ बांमो मथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥न०॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी बांमजो ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमाडजो ॥ न० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहनें अन्याख्यान, चाडी रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादादान, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मिथ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥ ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, गण अढारह निच्चथी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंद्रिय गाम, मन मांकडलुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ वावो वित्त सुगाम,

शील सुरंगो आदरो ॥ ज० ॥८॥ चि० ॥ परचो योगा
न्यास, अहनिशि जावो जावना ॥ ज०॥ चि०॥ सुगति
दीये विलास, कारण एता पावनां ॥ज०॥ए॥चि०॥ क
त्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ज०॥चि०॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज०॥१०॥
॥ चि०॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि०॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे
दगां ॥ ज० ॥११॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि
ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे डुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥
जुम तणुं जिम गण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ज०॥
॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इ
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत डुलंज, मा
नव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लंज, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥
थावो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग वि
च थावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, कहेशो पछी जाएयुं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ टालो
जव संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥१६॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ न० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ न० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ न० ॥ चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ न० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ नगवन् मलया जलथकी, फखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पनणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ डुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ पडतां नारंक मुखथकी, अति डुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्सनें वांसे पडी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

॥ का०॥ गाढें नवपद त्यां जण्यां, श्रवणें सुण्या रे, मीनें मनमां तूठ ॥ का०॥ ३ ॥ ईहापोह कस्या थकी, मीनें चकी रे, दीठो गत जव आप ॥ का०॥ ग्रीवा वाली नि रखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का०॥ ॥ ४ ॥ जोतां मलया उलखी, पुत्री डुःखी रे, लागो विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै डुःखें अवघडी, एहमां पडी रे, डुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५ ॥ मुजथी का ई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का०॥ तोपण मूकुं ईहां थकी, रूडुं तकी रे, जिहां होवे वस तीनुं ठाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली, डुःखथी टली रे, पामे वल्लन योग ॥ का० ॥ ईम चिं ति तेणे माछलें, धरी पाछलें रे, मूकी थल संयोग ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे, डुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियडे ऊरतो, जलपूरतो रे, पाछो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥ गतजव देखी जागीयो, सोजागीयो रे, मांछो पामी विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ९ ॥ पूरी ऊख आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु कर्मे ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, जव थाक

ग्रें रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ १० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, नूपादिक नविजोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नय सांजली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जूठ मत्र ठतें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाख्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥का०॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिवि जय शुन रीति ॥ का० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठे वली नर राजिउ, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेहथकी यौवन समे, लाधां दुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्त बनाव ॥ मलयाने म हबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, जिहां पांमु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी ठाण तुज पुरवरें; एक गृहपति हुंतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउ, धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध रे ॥ धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध,पूरवनव केवली, इंम नांखे रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने हूती,रुद्रा वली नद्रा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस प्रीतिनुं गम रे ॥ ना० ॥२॥ बहेंन सगी धुरनी बिन्हें, मांहो मांहें धारे नेह रे ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रनें, नवि बेगो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी सार्थे पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते बेहु अंगना, पोपे मनमां अति दोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥ प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव रे ॥ प्राहिं सोकलडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुंतो मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी सार्थे तेणें, मांमी रतिप्रीति विचित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अब लाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीगे तिहां, तव जाग्यो कोप अबेह रे ॥ ल० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें कही, तस चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरबाहिर काढ्यो परो, निस्रंगी कोप वशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बोल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥ नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करुं कोइ परतां

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नागो दिशि धारी एक रे ॥ डुर्वह अटवी मां पडयो, नूख्यो वली तरस्यो बेक रे ॥ नू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेट रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक देठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, बेठा तरु ठा या ठाम रे ॥ नोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं नाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथें वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुहद्ध रे ॥ कोइकनें आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयछ रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

नी एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा० ॥
॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोडी आगल आय
रे ॥ पनणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय
रे ॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ द्रव्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ बांध्युं अनर्गल ना
वथी. मदनें शुन कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
वियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे,जल पीवा बेगो सोय रे ॥ज०॥२२॥
पग लपट्यो तिहांथी खशी,पडियो जल कंमे जाय रे ॥
मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प्प नामें थापियो, तस तात मरण
संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आक्रमी, थई
बेगो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंमें ए कही, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रु
द्रा नद्रा नारिथ्युं, बांधे वैर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रनें,निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय जे टवा, चाल्यो सपरीवार ॥२॥ पंथें वहेतो अधमगें,आ व्यो ज्यां वड हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज द्वेठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशु न सुकृत ए मुंम ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अ शुन अखंम ॥ ४ ॥ इंम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा हन थोनाड ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांम कुहाडि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥ जेसोदानें गोरीमें ढोला,
पडीरे नगारारी ठौर ढोला, जाग मजा जे
रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मो टो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नञ उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥चि०॥१॥ पद अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या न महोदधि लहेरमां हांजी, झीले मुनि अविकार हां जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं बाकरी हांजी, कन्नो ए ठठ मांमि हांजी,कहेती एहवुं रे,कोपो मठराजी ॥ कुमतें व्यापी रे,आचरणें काजी ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट राखि हांजी ॥क०॥३॥
साह्मां ए इंटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हां
जी, ए पापीनें मांनियें हांजी, जिम होये अशुन वि
नाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे
हांजी, फीटे वली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक एह
वां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क०॥५ ॥
कहे में चरणे पाडुका हांजी, पहेरी ठे नहीं आज
हांजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विषम थशें विण
काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हां
जी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पील
दासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हांजी ॥क०॥७॥
कहेतां एहवुं रे, कोप्यो मलराजो ॥ कुमतें व्याप्यो रे,
आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी,
बांध्यो वडशुं पाय हांजी, नूमी जिहां लागे नहीं हां
जी, वली कंटक नव जाय हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥ वा
हनथी प्रियसुंदरी हांजी, उतरे वेगी तुरंत हांजी ॥
मुनिवर पासें आइनें हांजी, निठुर इम पत्नणंत हां
जी ॥ क० ॥ ए ॥ इंण अपशुकनें अमतणो हांजी,
कदिमत होजो वियोग हांजी॥ विरह हजो ताहरे स
दा हांजी, वाहालानो वली सोग हांजी ॥क०॥१०॥

पाखंमी तुं पापीठ हांजी,राक्षसनो अवतार हांजी॥ सब जयंकर सत्वनें हांजी, डुर्जग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निठुर ईम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी, करती कोप अपार हांजी॥क०॥१२॥ठंघो मुनिना हाथ थी हांजी, ऊडपी लीये निरलङ्क हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी,टाले कुलुकन कङ्क हांजी॥क०॥ ॥ १३ ॥ कुलुकन फल एहनें हुठ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी॥ ईम कहेतां परिवारनें हांजी,सुखें दंपती पंथें वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष नवन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेगा करजोडी विन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा लो ॥ सुमतें व्यापी रे,आचरणा वाली० ॥ कर जोडी दंपती प्रतें हांजी,समजावे ईम छेक हांजी ॥ए०॥१६॥ पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें विण काज हांजी, उपशम धरं तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो ऋ षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा ऋषिनी जेह हांजी॥ इहनव परनव

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ ए० ॥ ॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो वंद नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ दासी वचनें तेहवां हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी ॥ दुर्गति दुःखथी बीह नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥ए०॥२०॥ पछतावो करता हीये हांजी, झरतां लोचन नीर हां जी, दीन मना थइ आपने हांजी, नींदे वली वली धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशंसता हां जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासें जइ हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी ॥ ए० ॥ २२॥ चो था खंम तणी हुई हांजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी, कांति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हुं, पाछो फरी पामेश ॥ तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रतिज्ञा एहवी, तिमहीज उभो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी संयम तणा, स लहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो दि

ये, करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित चेष्टना, संभारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवे, ध रतां दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोनी ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो थांशुं कीधी जेड म्हारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो जाउं भामणें साधुजी ॥ राज रूडी भांति हो आदरी, कोप नाख्यो दूरें फेडी ॥ मा० ॥१ ॥ मेंतो थारी कीध हो अवगना, पडीयां मोहें बेहु आप ॥मा०॥ भव उप ग्राही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं भुंडुं पाप ॥ मा० ॥ ॥२॥ खमजो म्होटी एह विराधना, करुणामें रूडे म नवालि ॥मा०॥ ताता कूता पूठें हो जो भसे,पण गज न पडे तेहने ख्याल ॥ मा०॥ ३ ॥ जंबुक उंचो कूकेहो रोशमां, जोरे सोरें मुखडानें पास ॥ मा० ॥ तोही जो ही मातो हो केसरी, मांभे नहीं हणवानो क्यास ॥ मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो भारी हो आतमा,थाशे केहा अमचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें,तू

टां जेथी पातक जाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्यांहो इंम कहे, कोपां जो में एम अकंम ॥ भोला प्राणी, वारी हो संयमनांहो लीजें नामणां प्राणीजी० ॥ जीवे कोई नाहीं हो लोकमां, थाशे साधु धरम शत खंम ॥ भो० ॥ ६ ॥ थेंतो खेलो शुद्ध विवेकशुं, पालो रूडो जिननो धर्म ॥ भो०॥ छांमो दूरें गाढी ए मूढता, छेदो भवनां पोषक कर्म ॥ भो०॥ ७ ॥ पामी सूधी शिक्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥भो०॥ बार व्रत भावें हो उच्चर्यां, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥ भो० ॥ ८ ॥ भक्तें पानें मुनिनें आमंत्रिनें, आव्यां गेहें दंपती हर्षें ॥ भो० ॥ लीना भीना सार संवेगमां,नाखी मनथी कुमति निकर्षें ॥भो०॥ए॥ आवे पुरमां साधु ते गोचरी, भमतो भमतो घर घर बार ॥ भो०॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, देहाधारी उपशम सार ॥ भो० ॥ १० ॥निरखी बेहु साधुनें हरखियां, मानें आतम नें सुकयत्थ ॥ भो० ॥ फासु आपेहो असना भावशुं, दंपति मनमां रीजी तत्थ ॥ भो० ॥ ११ ॥ पाले बारे व्रत त्यांहो निरमलां, मिथ्यामत अलगो ते छोड ॥ भो० ॥ चोथे खंमें चाली छवीशमी, कांतें भाखी ढाल मन कोड ॥ भो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुडा नडा नारिनें,शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुउं, तेणें निर्भंछी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, दुहग पणे पिउ दीध ॥३॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परजव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखां दुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनडी, मंत्री एम एकांत ॥ वनें जई कूवे
पडी, करवा दुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नायतानी देशी ॥

॥ रुडा मरण तिहां लही,जयपुर नृप श्रीचंडपाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ १ ॥ जांखे गत जव केवली,निसुणे प
रषद धरी कांन रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियडे कांई शान रे लाल ॥ जां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इंणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
नडा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ जां० ॥ ३ ॥ जमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

पुर पृथिवीगण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रियसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ नां० ॥ ४ ॥ देखी वैर संनारिशुं, कोपें कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बिहूं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरनिंति रे लाल ॥नां०॥ ॥ ५ ॥ शुन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ नां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते,हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी,तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ नां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुडा नडा नारिशुं, तस फल इहां लाधां घेर रे लाल ॥नां०॥८॥ पूरव वैर संनारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांहे उद्यम आण रे लाल ॥ नां० ॥ ए ॥ पुण्य प्रनावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतो निशि देखी गृहें, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ नां० ॥ १० ॥ वस्त्र विनूषण कुमरनां,हरियां इणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ नां० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥
॥ नां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह
रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी,
संचारी वैर अथाह रे लाल ॥ नां० ॥ १३ ॥ गतज
व बहिंननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल
॥ कोडी जवें पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे
लाल ॥ नां० ॥ १४॥ चोथे खंमें सुंदरू, थई सत्तावी
शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी
रधवल नूपाल रे लाल ॥ नां० ॥१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंणें अवसर विस्मित हीये, वीरधवल नूपाल॥
पूछे इंम केवली प्रत्यें, थापी करतल नाल ॥ १ ॥
स्वयंवर मंमप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो
नहीं मलया प्रत्यें,तो हार दियो किम राच ॥२॥ हसे
कुमर कुमरी मनें,निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र
विचित्र ते, नांखे गुरु तेणें गण ॥ ३ ॥ कुमर मली
पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें नव वैर
थी, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें,
कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आखे
सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सख्या ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोक
रे ॥ कंदल कंद वधारवा, विश जलधर जोको रे ॥१॥
धिग धिग चित्त नारी तणुं, अनरथ फल आपे रे ॥
कुमति कदाग्रह पोषीनें, रस रीतें उथापे रें ॥धि०॥२॥
कहे वली आगें केवली, महबल निशि मांहि रे ॥ व्यं
तरीयें हणवा नणी, अपहरियो उछांहीं रे ॥ धि० ॥
॥ ३ ॥ महबल मूगी आहणी, नागी विकराली रे ॥
विषम चरित्ता व्यंतरी, न करे वली आली रे ॥ धि०
॥ ४ ॥ सेवक सुंदर ते मरी, थयो नूत उदंमो रे ॥
बाहिर पुहवीगणने, ते वडमां प्रचंमो रे ॥धि०॥५॥
नमतो महबल विधिवशें, आव्यो वडतरु हेठ रे ॥
ते नूतें तिहां उलख्यो, निरखी गतनव देठ रे ॥ धि०
॥ ६ ॥ वड मालें पग एहना, बांध्यो माथे नीचे रे ॥
जिम धरणी अडके नहीं, कंटक नवि खुंचे रे ॥ धि०
॥ ७ ॥ वचन संनारी एहवुं, प्रियमित्रनुं तेणें रे ॥ क
रवा पीडा कुमरनें, संच मांमयो एणें रे ॥ धि० ॥८॥
शबना मुखमां अवतरी, ईम बोल्यो हसंतो रे ॥ मूढ
हसे कांइ मुजनें, देखी बांध्यो एकंतो रे ॥ धि०॥९॥

तुं पण एहिज वडतलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे
ऊंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १० ॥ सहेशे
बहु डुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण ते
हिज महबलें, सह्यां डुःख कगेर रे ॥ धि० ॥ ११ ॥
रुड़ायें एकण दिनें. लोनें लही लागो रे ॥ चोरी पि
उनी मुड्रिका, गतनवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥
मुड्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां ठाने रे ॥ जोतो पियु
मुड्रा प्रत्यें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुड्रा
पासें मुड्रिका, दीठी में ठे जाउ रे ॥ मांगी लीयो इंम
हलफल्या, आकुल कांइ थाउ रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ व
चन सुणी सुंदर तणा, रुड्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर सा
थें चोरटी, लडवानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपा
कुल बोली इस्युं, जूठ इंम कांइ नांखे रे ॥ डुर्मति
काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥
मुड्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज स
रखी जूंभी नथी, जाणे ठे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥
मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रिय
मित्रें करी ताडनां, लीधी मुड्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥
लघुता कीधी शोक्यमां, रुड्रा अपमानी रे ॥ दीन व
दन जांखी थई, रही बापडी ठानी रे ॥ धि० ॥ १९ ॥

दुर्वचनें बांध्यां जिके, रुडा नवें पापो रे ॥ नोगवियां फल तेहनां, कनका थई आपो रे ॥धि०॥२०॥ सूति पणे ए सुंदरी, नव वैरिणी जाणी रे ॥ कनकवतीनी नासिका, लीधी मुखें ताणी रे ॥ धि० ॥२१॥ हसतां बांधे जे जीवडो, तेह रोतां न बूटे रे ॥ अनरस ना वें परिणमी, चिरकालें ते खूटे रे ॥धि०॥२२॥ ढाल कही अडवीशमी, चोथे खंमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता नावी रे ॥धि०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे सुगुरु नूपति नणी, शेष कथा विरतंत ॥ सावधानता आदरी, परषद सकल सुणंत ॥ १ ॥ मदन धरंतो गतनवें, प्रियसुंदरीशुं राग ॥ कंदर्प नव तेहथी हुउ, मलयाशुं रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वें मलया महबलें, लही संकलपें मर्म ॥ दीधुं दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुकुलादिक तणी, सामग्री लही आंहिं ॥ आराधि विहडे नहीं, सुकृत कमाई क्यांहिं ॥ ४ ॥ नवतारक जिनधर्मनें, रीजि नजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फले, नूमि पड्यां जो बीज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी॥

॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां
णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी द्वेषी ॥ बंधु वियोग ह
जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्षस जाहरे रे ॥हु०॥
॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे जयकारी, प्राण जूतनें दे डुःख
जारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म
ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ ईम क
हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥
॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे
दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बेहु जणें महापातक
बांध्युं, नीषण जव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पठता
वो करतां वली पाठें, बहु खेपव्युं समजी आठें रे
॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगस्या जेहवुं, इहां फ
ल लह्युं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो
बधु वियोगो, न मटे पूरवकृत जोगो रे ॥ हु०॥ ५॥
कनकाथी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्ष
सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी
में, रखडी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश
विदेश लह्यां डुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे
॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

ट विविध प्रकारें रे ॥ छु० ॥ ७ ॥ रूडपी मुनि रयह रणुं लीधुं, मलयायें तिम वली दीधुं रे ॥छु०॥ तेहथी पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी संयोग वहीनें रे ॥छु० ॥ ७ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे आराध्यो रे ॥ छु० ॥ तेहिज हुं उद्मस्थ टलीनें, हुउं केवली तपसीनें रे ॥ छु० ॥ ए ॥ बिहुं जणनो बीजो नव एही, महारे नव एकज तेही रे ॥ छु० ॥ वचन सुणी मनमां कमखाणो, वली बोल्यो इंम महीराणो रे ॥ छु० ॥ १० ॥ नगवन् कनकवती तेम असुरी, तव वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ छु० ॥ करशे एहुनें वली कांई मातुं, किंवा वैर पुरातन घातुं रे ॥ छु०॥ ११ ॥ सूरि नणे असुरी कर ताडी, गई वैर विरोध विगांमी रें ॥ छु० ॥ कनकवती नमती इहां आवी, विषमो एकदाव उपावी रे ॥ छु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे कोपें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ छु० ॥ कनका असुरी डुरित डुरंता, नमशे नव काल अनंता रे ॥ छु० ॥ ॥ १३ ॥ मलया महबलनो नव नांख्यो, एहमां अव शेष न राख्यो रे ॥ छु० ॥ उंगणत्रीशमी चोथे खंमें, कांतें कही ढाल उमंगें रे ॥ छु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशा
ल ॥ जव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल
॥१॥ दंपति सद्गुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्र ॥
अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि
सेवा करशुं सदा, आणी जक्ति विशेष ॥ ग्रहे अभि
ग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्द्देष ॥३॥ केता संयम आ
दरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ जइक जावी केई हुआ, रा
गादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांज
लीनें बिहुं जूप ॥ नवजीरुक थई क्रमह्या, संयम ग्र
हण अनूप ॥ ५ ॥

॥ढाल त्रीशमी॥ जिनवचनें वैरागीयो हो धन्ना ॥एदेशी॥

॥ जिनवचनें वैरागीउं हो राया, इंम कहे बे कर
जोड ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम
पासें मन कोड रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे
॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण म
न हुंस ॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा
कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी
कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी कण्ग्रा
बिन्हे हो राया, आव्या निजनिज गेह रे हो० ॥३॥ पो

ह्वीगण तणो कीयो हो राया, सूरें मह्वल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अनिषेका य रे हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मलयकेतु अनिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांहिज देई सनमान रे हो० ॥५॥ पद चिंता आप आपणी हो राया, कीधी जनपद हेत ॥ संयम लेवा संचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम ल्ये श्रीकार ॥ रूडे हितशिक्षा ग्रहे हो साधु, चरण करण गुणधार रे हो मोरा साधु, संयम पाले बे ॥७॥ संयम दूषण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिनें सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे हो० ॥ ८ ॥ गुरु पासें हुआ अन्यसी हो साधु, द्वादश अंगी जाण ॥ ठठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुन जाण रे हो० ॥ ९ ॥ महासती पासें ठवी हो साधु, नृपराणी देइ दीख ॥ सामायिक आदें ग्रहे हो साधु, शिवपद साधन शीख रे हो० ॥ १० ॥ दिन केताइं तिहां रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, बिहुं मुनि सेवें पाय रे हो० ॥ ११ ॥ शोषी तन तप आकरे हो साधु,

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु, संलेषण संभालि रे हो० ॥१२॥ महाविदेहें सिझशे हो साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे हो० ॥ १३ ॥ चोथे खंडें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अभिराम ॥ कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिने होजो प्रणाम रे हो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भगिनी पति भगिनी प्रत्यें, आपूछी अति प्रीति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वड रीति ॥१॥ सागर तिलकपुरें गवी, सेनानी निर्भंग ॥ महबल आवे निजपुरें, शतबल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले राज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अनेक ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहां, करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहणें रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे भक्ति मुनिवर तणी रेहां, छांडी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥ बी

जो सुत मह्बल तणो रेह्वां, हुउ सह्सबल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्ष्ण गुण सायरू रेह्वां, वंश वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेह्वां, मह् बल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेह्वां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ विधिपदनी वक्तव्यता रेह्वां, नांखी अदृष्ट सरूप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेह्वां, कथक अदृष्ट अनूप ॥सा०॥५॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेह्वां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्षणें रेह्वां, बीजो हेतु अवा च्य ॥ सा०॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेह्वां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ नावि प्रमुख अनेक ले रेह्वां, ते ह्ना वाचक प्राय ॥सा०॥७॥ परिपाको रस ते दीये रेह्वां, चिंतित होये अकयत्न ॥ सा० ॥ शुन अशुना दिक नावथी रेह्वां, द्ये परिणत फल सन्न ॥सा०॥७॥ अवश्यपणाथी तेह्नी रेह्वां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेह्वां, हुइ निज वश तेह् तंत ॥ सा० ॥ ए ॥ विषय कषाय वशें पड्या रेह्वां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुन विनावनी रेह्वां, चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो ज वेखे आपथी रेह्वां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खी
र ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उलख्यो रेहां, नि
र्मल सहज स्वभाव ॥ सा० ॥ भूली भमी भवमां घणुं
रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव
नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥
भीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इम श्लोकार्थ ॥
सा० ॥१३॥ महबल पण तव ऊभग्यो रेहां, भवथी
विषय विमुक्त ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रे
हां, हुइ बिहुंने अभिमुक्त ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या
शीखे शैशवें रेहां, यौवन साधे भोग ॥ सा० ॥ वृद्ध
पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥
॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, भांख्युं नृप कर्त्त
व्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इश्युं रेहां, सजग
हुउ मन भव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें ठवे
रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥सा०॥ सागरतिलकें थापीउ
रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया
साथें उछवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच
महाव्रत उच्चर्यां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥
॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंमें अदो

ष ॥ सा० ॥ कांतिकहे सुणतां हुवे रेहां, अध्यातम रस पोष ॥ सा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुविहा शिक्षा पालतां, बिहुं जण तप जप ली न ॥ करे विहार महीतलें, थया सुगुरु आधीन ॥१॥ गुरु आदेशें बिहुं जणां, जइ नंदननें पास ॥ वारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, बे बांधव नृप पूत ॥ मांहो मांहि सुशीखथी, थया नेह संजुत्त ॥ ३ ॥ बिहुंनी श्रीजिन धर्मथी, नेदी साते धात ॥ बीजानें पण शीखवे, मा रग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजऋषि महबल हुवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुउ शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण नणी, मागी गुरु आ देश ॥ कुरकी संबल महामुनि, विचरे देशविदेश ॥६॥ ॥ढाल बत्रीशमी॥ रमतां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरो रे, सुरगिरि थिर परें चि त्त रे राजे ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चंड्मा रे लाजे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वा युनें रे तोलें ॥ कूजे रे परिसहथी जेहवो केसरी अ मोलें ॥ २ ॥ आलंबन ईहे नहीं रे, गगनपरें निरपे

ह्र रे आपें ॥ दीपे रे रवि झींपे ताजा तेजनें प्रतापें ॥ ३ ॥ व्रतनो भार उपाडवा रे, समरथ शक्तें जेह्वो रे धोरी॥ भाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा बल फोरी ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदैव रे रूडो ॥ दरियो रे गांभीर्यें जेह्नें आगलें न ऊंमो ॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेह्वो शंख रे छाजे ॥ आवे रे उपसर्गें सूरिम आदरी रे गाजे ॥ ६ ॥ विह्रंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दिसनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे ॥ ७ ॥ शतबल सुत रुषि रायनो रे, राज करे तिह्रां राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे पूरो ॥ ८ ॥ ते रुषि निरखी ओलखी रे, हर्ष भर्यो वनपाल रे दोडी ॥ आव्यो रे नृपतिने प्रणमी बीनवे कर जोडी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी संयम योगमां रे भाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी इश्युं रे, हरषवशें रोमाचश्चुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपालकनें मणिभूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिंते इश्युं रे,आज हुउं छे असूर रे माटे ॥ काले रे वांदीश्चुं युक्तें रुद्धिनें रे थाटें ॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे पु
ण्यें जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पा
डुका रे,मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति नक्कें
रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग नेटिनो
रे, लोनी ते निशि डुःखथी रे काढें ॥ प्रगडो रे हवे
प्रगटयो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुई
बत्रीशमी रे, चोथे खंर्में एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुन
शांतें नांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर नटकंत ॥
दैवयोगथी डुस्कणी, तिण पुर आवी रहंत ॥ १ ॥
तेहिज दिन संध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि
पडचो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २॥ नि
रखी रूडें उलखी, हुई महा नय नीती ॥ तेहिज ए
सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथ
की ए माहरां,जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां
कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह नणी विरचुं
इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं,
मुज कुचरित्त पलाय ॥५॥ करुं उपेक्षा किम हवे, अ
नरथ चांपुं पाय ॥ नहिं मुज जीवित अन्यथा, वली

इंण पुर न वसाय ॥६॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं,धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर पडखती,जई वेगी घर आप ॥ढाल तेत्रीशमी॥ वीर वखाणीराणी चेलणा ॥एदेशी॥

॥ सांज विहाणी पडी रातडीजी, व्यापिउ घोर अं धार ॥ तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिर ण निशिचार ॥ सां० ॥१॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलस मेजी, तमगुणें आप बल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल कारागरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निजनिज घर विश्रमेजी, वलो मट्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य प णे तेह जिम जार ॥ सां० ॥४॥ अगनी धुखती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥सां०॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जडयांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, नावि मु नि कष्ट मन जाणं ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन लाग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां०॥७॥

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किणहीकें थापिया आण ॥
गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मल्या टां
ण ॥ सां० ॥ ८ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवरे
साधुनें तेम ॥ चिहुंदिसें निरखतां साधुनुंजी,अंग दीसे
नहीं जेम ॥ सां० ॥ ए ॥ विंटंतां साधुने काठशुंजी,
आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ डुरक संसारनेंजी,
विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व नव वैरथी
तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगाडीयो
चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां०॥ ११॥
मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणां
त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस
शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंम चोथे खरी खांतशुंजी,
एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी,
साधशे साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि
वरनें तन पाखतें,खातो घूमणिघेर ॥१॥ कोमल तनु रु
षिरायनुं,बाले वन्हि तपंत ॥ मूलथकी कनका तणां,जा
णे सुकृत दहंत ॥२॥ विकटोपद्रव पीडता,सहेतो श्री
रुषिघोष ॥ लागो निज आतम प्रत्यें,देवा इंम प्रतिबोध

॥ढालचोत्रीशमी॥ रागबंगाल ॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप कौं तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप संनार ॥ मेरे आतमा ॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर न उपाव, मत नूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल,तो फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा०॥ २ ॥ चढिके आछे नाव जिहाज, तर ले नवसागर बिनु पाज ॥ज्ञा०॥ नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें पावें नवतटपार ॥ ज्ञा०॥ दुःख पाय तैं नरक निगोद, करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥४॥ ता दुःख आगें या दुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कछुअ न दोष, मत कर इंन उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काटन आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहिर तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन लागि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीव सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७॥ आप खमाउं दोषरतीव, मोसौं खमहो सिगरे जीव ॥ ज्ञा० ॥ औसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीकै चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकौं प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं नव उपग्राही कर्म्म, भस्म करैं जिनुमैं तजी भर्म्म ॥ ज्ञा०॥ अंतगड केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद भयो हे अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, भवकौं जलां जलि दै निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंमें राग बंगाल, चोतीसमी पूरी भइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहु खेल,समतासौं भयो कर्म उखेल ॥ज्ञा०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुउ जिव्हारें तेथ ॥
नारी कनका पापिणी, बीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥
अहो दुष्टता नारिनी,विधि विरची विष सींची ॥ मा
रे अलवें अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २॥ म
ति जेहनी पग हेठले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ नांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ नृप हुई शुन्न कर्मथी, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विलुध्दो रे ॥ जनक वदन जोवा नणी, उत्कंठित मन सूधो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आमंबरें, काननमां जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म मय गयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति डुःखमांहें नडियो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे नोलव्यो, धसकें धरा तल पडियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें नाख्यो रे राजवी, मूर्च्छाणो मन ऊणो रे ॥ सजग हुउ उपचारथी, पामे तव डुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ परिकर डुःखियो रे नृपडुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अनिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नृपति पनणे रे पापीये, किणे ए की

धुं अकाजो रे ॥ निर्जय निःकारण वैरीयें, उपसर्ग्यो मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ जवच्रमणथी रे डुर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहनुं, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण डुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहरे अंगें रे ॥ वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, बेशी क्षण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी गंहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउ मुज जेतो रे ॥ इंण वेला मुज पापथी, थयो डुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लह्युं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूर्यो रे जनकनें, विलपे इंम नूपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंमनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल नूपाल ॥ निजन टनें इम आदिसे, करि नृकुटीनो चाल ॥१॥ पग अनु सारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप फल, आवे उदय विकट्ट ॥२॥ आप हृदय गणे गव्यो, बीजो डुष्ट परिणाम ॥ डुःप्रधर्ष रस सींचतां, ऊग्युं क टक विराम ॥३॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो चिहुं पख जार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अनिमुख हूउ स मक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥५॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, कठघा नड मठराल, आज हो डुष्ठा रे जण रूगा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां इत उत नूम, मांमे सबली धूम, आज हो धारे रे अ नुसारे पगनें तेहनेंजी ॥२॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाड मांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनीत, श्याम वसन अविनीत, आज हो बेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी ॥ ४ ॥ सुहडें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नूपें ताडी

जोर, पाडंती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शुं छे कारण वैरनुंजी ॥६॥ हणिउ तें महानाग, मुनिवरनें इंणे जाग, आज हो लाखें रे तुज पाखें न करे का इस्युंजी ॥७॥ हणी घणी नूपाल, सींची तरुनी माल, आज हो नांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥८॥ रूठो नूप तिवार, नाना विध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥९॥ आप चरितने योग, पामी फलनो नोग, आज हो ठठी रे छुःख पूठो नरकें छपनीजी ॥१०॥ नरक तणा संताप, सहेशे अति छुःख आप, आज हो वक्रें रे नवचक्रें नमशे बापडीजी ॥ ११ ॥ चोथे खंमें रसाल, बत्रीशमी एह ढाल, आज हो कांतें रे नलि नांतें नांखी शास्त्रथीजी ॥ १ २॥

॥ दोहा ॥

॥ नूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करंत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण कण नवि ठंमंत ॥१॥ जाणी तेहवुं तातनुं, छुस्सह मरण विराम ॥ पडियो शोकसमुड्मां, नूप सहसबल ताम ॥ २ ॥ शतबल दशशतबल जिन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण राम तणी परें, तपे अरतिनें नार ॥ ॥३॥ कृष्णदेव बलिजड्नें, द्वारावतीनें दाह ॥ शोक हुउ पितृनो जि

स्यो, तिस्यो हुउ इहां प्राह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजाडी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ए देशी॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्में नवि पडि बोहे हो राज ॥म०॥१॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुन अवधिनाण ॥ नावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज०॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज०॥४॥ साधुयोग्य, वसतीनें गामें, पशु पंमग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अनिरामें, रिंटी रही आइ सुकामें हो राज० ॥५॥ शतबल नृपति अति नक्तें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी उगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज० ॥६॥ राजेंद्र पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज० ॥७॥ उपसर्ग्यो कनकवतीयें, न कर्युं मन कलुष व्रतीयें ॥ नवसागर तरतां तीयें,अवलंबन दीधुं त्रीयें हो राज० ॥८॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज० ॥ ए ॥ सेवें जे गिरि वन घाटां, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आंटा, खमीयें थई धीरजना सांटा हो राज० ॥ १० ॥ कुलीन ते पद तातें लाधुं, नीगमीयुं नवनय बाधुं ॥ हवे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुष ए आधुं हो राज० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुउ मुनिराय, तिणें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इंणे ठाय हो राज० ॥ १२ ॥ पोतानो वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई,कहे हियडे विचारी जोई हो राज०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानर पीडा तातें, सांसही होशे एह वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें,जय अरथी खिति सहे गातें हो राज० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलुं तिहां डुःख सहे बाधें ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज० ॥१५॥ पहेलुं डुःख सघले दीसे, पाछें सुख संजव हीसे ॥ ई

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज० ॥ १६ ॥ जेटया नहीं चरण पितानां, मत कर इंम नरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज नक्तिना गुण नहीं ढाना हो राज०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज० ॥ १८ ॥ दुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुहार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज० ॥ १ए ॥ तुज सरिखा जो इंम करशे,शोकाकुल हियडुं नरशे ॥ बापडला किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज० ॥२०॥ इंम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबूझयो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नपाल,महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥ साडत्रीशमी ए कही ढाल,चोथें खंम कांति रसाल होराज०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शतबल मुनि निर्वृतिथकी, मांमयो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तेजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्सव रंग वधामणां,वर्त्तावे निशिदीश ॥ ल्ये लाहो लखमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूछी मह्त्तरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुह्वीगण म हापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर
धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ पुह्वीपति साधवी मुखेंजी, निसुणी रे श्रीश्रुत धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममांजी, थिर थयो प्रीछीनें मर्म ॥ १ ॥ गुणवंतो रे मह्रीपति, नावी सह्सबल नाम ॥ ए आंकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल नामें नरिंद ॥ मह्त्तरा वंदन नणीजी, थयो उतकंठ अमंद ॥गु०॥ २॥ लघु बांधवना प्रेमथीजी, आकरष्यो उमगंत ॥ आवे तिहां परिवारशुं जी, बे बां धव त्यां मिलंत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बांधव दिन प्रत्यें जइजी, वांदी मह्त्तरा पाय ॥ सुणे धरमनी देशनाजी, मन थिरनावें ठहराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ स मकितधारी व्रतधरूजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५॥ थ

थाशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे जक्ति ॥ दान शाला मांझे घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥गु०॥६॥ मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतराग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥ गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥जिनजवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥गु०॥ ॥ ८ ॥ अहाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचंत ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत ॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मजारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां वेह ॥ गु० ॥१०॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्में तिहांजी, ढांक्यो लौकिक नर्म ॥ गु० ॥११॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी, पुरजनने समजाई ॥ आपूछी बिहुं पुत्रनेंजी, अनेयि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें पालीयुंजी, चारित निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करीजी, लघु कस्या डुरितना जार ॥गु०॥१३॥ अंतें अणसण आदरेजी, श्रीमती मलया नाम ॥ आराधीनें कपनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महाविदेहें

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुनगाय ॥गु०॥१५॥ बोधिनाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पडिवजीजी,लेहेशे मुगति सुखहेवि ॥गु०॥१६॥ ढाल कही अडत्रीशमीजी,चोथा खंमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी,पामी नवतणो छेह ॥गु०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ तेमाटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानाभ्यास ॥ डुहिलम संकट उद्धरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥२॥ संकटमां पण पालीयुं,जिम मलयायें शील ॥ तिम वली बीजो पाल शे, ते लेहेशे शिवलील ॥३॥ महाबलें जिम सांसह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो,ले हेशे ते अपवर्ग ॥४॥ जिम प्रथम व्रत आदर्यां, दंपतीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम नावथी, बीजे पण सुप वित्त ॥५॥ कीधी मुनि आशातना,दंपतीयें धुर जेम ॥ दुख हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोइ तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दोगे दीगे रें ॥ वामाजीको नंदन दोगे ॥ ए देशी ॥

॥ नावें नावें रे नवि करजो ज्ञान अभ्यास ॥ ज्ञानें

संकट कोडि पलाये, ज्ञानें कुमति न वाधे ॥ ज्ञानें सुजश लहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नविक रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां, मुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु, पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा निर्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥ मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि ईम संबंध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीतपगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन सूरि ॥ गुणवंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न० ॥ ८ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मंमन, प्रेमविजय बुध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इंणि परें, त्रिध त्रिध

नाव बनाया रे ॥ न० ॥ ए ॥ संवतसर मुनि मुनि वि
धु १७७५ वर्षे, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयक्ष
मा सूरीश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥ न० ॥ १० ॥
अखा त्रीज तणे शुन दिवसें, रास हुउ सुप्रमाण ॥
बालकक्रीडानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे
॥ न० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूना
धिक कांई नांख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मि
छाडुक्कड दाख्युं रे ॥ न० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण
परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लान
अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ न० ॥ १३ ॥
पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥
चिहुं खंडें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी रे
॥ न० ॥ १४ ॥ जे नवि नावें नणशे गुणशे लेहेशे ते
जयमाल ॥ उगुणचालीशमी कही कांतें, चोथा खंड
नी ढाल रे ॥ न० ॥ १५ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४०७ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुं
दरीचरित्रे पंडितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे
शीलावदातपूर्वजनववर्णनोनामाचतुर्थखंडःपरिसमाप्तः॥